भारतीय रेल

अप्रैल–2021

₹20

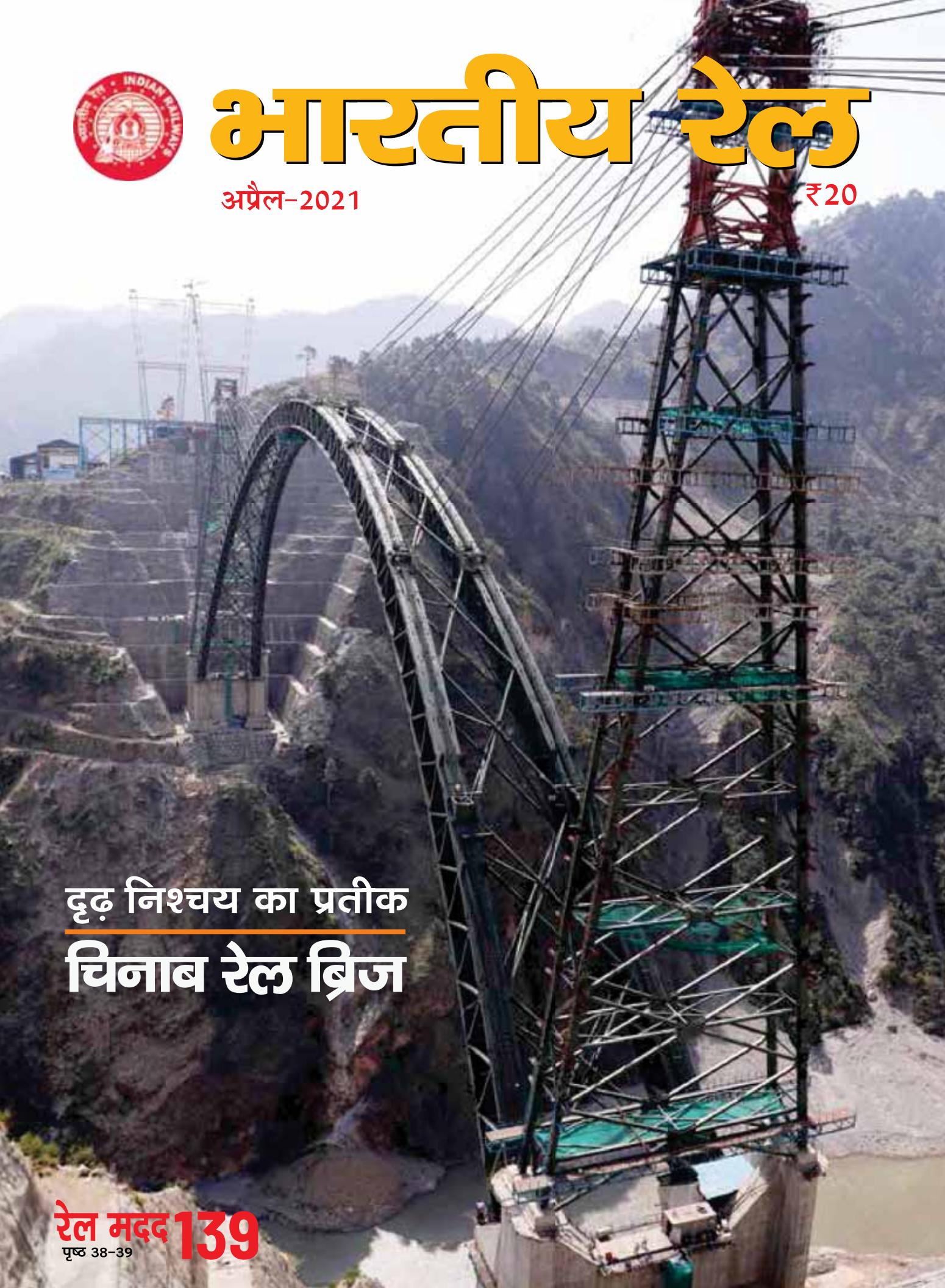

दृढ़ निश्चय का प्रतीक

चिनाब रेल ब्रिज

रेल मदद 139

पृष्ठ 38–39

पीयूष गोयल
PIYUSH GOYAL

रेल, वाणिज्य एवं उद्योग तथा
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF
RAILWAYS, COMMERCE & INDUSTRY AND
CONSUMER AFFAIRS, FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION
GOVERNMENT OF INDIA

2 अप्रैल, 2021

प्रिय रेल परिवार के सदस्य,

नमस्ते, आज **मैं बहुत गर्व, संतुष्टि और कृतज्ञता के साथ** आपको सूचित कर रहा हूँ कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में एक और वित्तीय वर्ष का समापन हो रहा है। पिछले वर्ष जैसा अनुभव हम सब ने पहले कभी नहीं किया है। अपनों के खोने के दु:ख को कभी भुलाया नहीं जा सकता है, लेकिन **आपका धैर्य और संकल्प** ही है जिसने इस अभूतपूर्व COVID-19 महामारी पर विजय प्राप्त किया है।

महामारी के दौरान, हमारे रेल परिवार ने खुद को राष्ट्र की सेवा में समर्पित किया है। जब पूरा विश्व ठहर गया था, तब **रेल कर्मचारियों ने एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली** और व्यक्तिगत जोखिम उठाते हुए पहले से ज्यादा परिश्रम करते रहे ताकि अर्थव्यवस्था के पहियों को चालू रखा जा सके। आपकी प्रतिबद्धता के कारण, हमने **पूरे देश में आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की,** चाहे वह बिजली संयंत्रों के लिए कोयला हो, किसानों के लिए खाद हो या उपभोक्ताओं के लिए खाद्यान्न हो। देश COVID-19 के खिलाफ हमारी सामूहिक लड़ाई में हमेशा आपके योगदान को याद रखेगा। आपकी प्रबल इच्छाशक्ति की वजह से, **हमने इस संकट को एक अवसर में बदल दिया।**

4,621 श्रमिक स्पेशल ट्रेनों के माध्यम से 63 लाख से अधिक फंसे हुए नागरिकों को उनके गंतव्य स्थान तक पहुँचाया गया। लॉकडाउन के समय कई सारे प्रतिबंधों के बावजूद 370 सुरक्षा और बुनियादी ढांचे से संबंधित प्रमुख काम संपन्न किए गए। **किसान रेल सेवा** हमारे अन्नदाताओं को बड़े बाजारों से जोड़ने का माध्यम बनी। आपने अपनी सेवा के माध्यम से इसे संभव बनाया और बदले में लाखों लोगों के दिलों और जीवन को छुआ।

यह मेरे लिए बहुत गर्व की बात है कि रेलवे ने अपने कार्यों के माध्यम से आर्थिक रिकवरी की अगुवाई की है। **1,233 मिलियन टन माल की ढुलाई की गई**, जो किसी भी वर्ष की तुलना में सबसे अधिक है। पिछले वित्तीय वर्ष में 6,015 RKM रेल विद्युतीकरण का कार्य सम्पन्न हुआ है। जैसा कि कहा जाता है कि, **"रिकॉर्ड टूटने के लिए होते हैं"** और भारतीय रेल से बेहतर यह कोई भी नहीं कर सकता। आज, रेलवे ग्राहक-केन्द्रित है और अपनी गति में सुधार के साथ-साथ परिचालन दक्षता के लिए कई कदम उठा रही है। इसका परिणाम भी दिख रहा है, क्योंकि **मालगाड़ियों की औसत गति लगभग दोगुनी होकर** 44 किलोमीटर प्रति घंटा हो गई है और यात्री ट्रेनों की समयनिष्ठा 96% के स्तर पर बनाई रखी गई है। गत दो वर्षों में **यात्री मृत्यु दर शून्य** रही और रेल दुर्घटनाओं में भी भारी कमी आई है।

आपके समर्पण और शानदार प्रयासों के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस प्रेरित टीम के साथ **हम लगातार रिकॉर्ड तोड़ते रहेंगे, बड़े लक्ष्य हासिल करेंगे, अपने प्रदर्शन से दूसरों के लिए उदाहरण बनेंगे और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देंगे।**

जय हिंद

पीयूष गोयल

पीयूष गोयल

Rail Bhawan, New Delhi-110001, Tel.: +91-11- 23386645, 23381213 Fax : +91-11-23387333
E-mail : piyush.goyal@gov.in. Website : www.piyushgoyal.in

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

अप्रैल 2021 | आरंभ : 1960 | वर्ष : 61 | अंक : 9 | मूल्य : ₹20

संपादक मंडल

श्री सुनीत शर्मा
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्री नरेश सालेचा
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री राजेश दत्त बाजपेई
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक

योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय

संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

श्री प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन: 23303665, 23382531
bmpr310rb@gmail.com

सदस्यता शुल्क

सर्वसाधारण - ₹250
रेलकर्मियों के लिए - ₹200

संपादन सहयोग

श्री रणमत सिंह

आवरण

चिनाब रेल ब्रिज पर आर्च लगाने की प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात् की तस्वीर

फॉलो करें

Twitter : @bhartiyarailrb
Facebook : bhartiyarailpatrika
Instagram : bhartiyarailpatrika

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

6 रेल मंत्री ने जबलपुर-चांदफोर्ट सुपरफास्ट ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना किया

रेल मंत्री द्वारा कोटद्वार-दिल्ली सिद्धबली जन शताब्दी एक्सप्रेस का शुभारंभ *7*

8 रेल मंत्री ने मोजाम्बिक को निर्यात किए जानेवाले लोकोमोटिव को हरी झंडी दिखाई
10 दुनिया का सबसे ऊंचा रेल पुल : चिनाब रेल पुल की मेहराब बंदी का कार्य पूर्ण
11 रेल मंत्री ने रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य की प्रगति की समीक्षा की
12 फलटण और पुणे के बीच डेमू सेवा का शुभारंभ
13 चक्रधरपुर, रांची, खड़गपुर एवं आद्रा मंडल क्षेत्र के सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक
14 मध्य रेल द्वारा ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय मानव संसाधन समिट का आयोजन
14 अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने किया रेल पहिया कारखाने का दौरा
15 सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर, रेलवे बोर्ड का आरडीएसओ दौरा
15 एमसीएफ में अपर सदस्य (उत्पादन इकाई) रेलवे बोर्ड का दौरा
16 वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान माल ढुलाई और आय के मामले...
17 भारतीय रेल में 71 फीसदी का विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण
18 सुरक्षा को मजबूत करने के लिए भारतीय रेल ने 815 पुलों का थर्ड पार्टी ऑडिट...

भारतीय रेल ने रेलगाड़ियों और रेलवे परिसरों में महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाओं को रोकने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए *19*

23 रेलवे पार्सल प्रबंधन प्रणाली में पूर्ण बदलाव
24 संसद में भारतीय रेल
38 सफर का साथी : रेल मदद हेल्प लाइन नम्बर '139'

40 भारतीय रेल के नए डीजल इंजन — *श्री विमलेश चन्द्र*
42 भारतीय रेलों की स्थापना के पहले और अब — *श्री हेमेन्द्र प्रसाद घोष*
45 रेलकर्मी पर्सिवल डग्लस कैरोल : शौर्य की अद्भुत गाथा — *श्री सुधेन्दु ज्योति सिन्हा*

46 अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
50 खेल जगत
53 रेलों के अंचल से

64 राजभाषा हिंदी : अनंत संभावनाओं का क्षितिज
श्री विपिन पवार
68 मेरी सिक्किम यात्रा
डॉ. मुकुल श्रीवास्तव
72 साहिर के जादू से चमत्कृत है हिन्दी सिनेमा
श्री अविनाश त्रिपाठी

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर नए दिशात्मक संकेत *55*

FLUID CONTROLS®
ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY

WE INNOVATE FOR **PERFORMANCE**

Fluid Controls® has over 45 years of experience in design and engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. At our DSIR-approved R&D center, we offer customers design and FEA services, performance testing at our state-of-the-art laboratory and customized pre-fabricated tube and hose assemblies.

+91-22-68238000 railways@fluidcontrols.com fluidcontrols.com

संपादकीय

रिकॉर्ड तोड़ सफलता के लिए आप सबका धन्यवाद

हम सभी भारतीय रेल परिवारजनों का गौरवान्वित होना स्वभाविक है, क्योंकि वित्त वर्ष 2020-21 में जब समग्र विश्व कोविड-19 की महामारी के कारण ठहर-सा गया था, चारों तरफ डर का माहौल था, जिससे भारत भी अछूता नहीं था, ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी हमारे भारतीय रेल के रेलकर्मी व्यक्तिगत जोखिम उठाते हुए, बिना छुट्टी लिए अपने काम में जुटे रहे। रेलकर्मियों की कर्मठता तथा समर्पण का ही परिणाम है कि कोविड वर्ष में भारतीय रेल को अपने सभी रिकॉर्ड तोड़ने में सफलता मिली है। इस सफलता का पूरा श्रेय हमारे रेलमंत्री श्री पीयूष गोयल जी ने रेल परिवारजनों को देते हुए पत्र लिख कर उनका धन्यवाद ज्ञापित किया है। 'भविष्य में भारतीय रेल की सफलता ही देश की सफलता को परिभाषित करेगी', यह बात रेल मंत्री पहले ही कह चुके हैं।

अपने पत्र में श्री गोयल ने बहुत सही कहा है कि पिछले वर्ष जैसा अनुभव हम सब ने कभी नहीं किया। इस महामारी के दौरान हमारे रेल परिवार ने खुद को राष्ट्र की सेवा में समर्पित किया है, ताकि देश की अर्थव्यवस्था के पहिये को चालू रखा जा सके। हमारे कर्मियों की वजह से पूरे देश में आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की गई। उन्होंने लिखा है कि देश कोविड के खिलाफ हमारी सामूहिक लड़ाई में हमेशा आपके योगदान को याद रखेगा। आपकी प्रबल इच्छा शक्ति की वजह से हमने इस संकट को एक अवसर में बदल दिया। हमारे कर्मियों ने लॉकडाउन के बावजूद सुरक्षा और बुनियादी ढांचे से संबंधित प्रमुख 370 से अधिक काम संपन्न किए। किसान रेल से हम हमारे अन्नदाताओं को बड़े बाजारों से जोड़ने में माध्यम बने।

श्री गोयल ने पत्र में लिखा है, "यह मेरे लिए बहुत गर्व की बात है कि रेलवे ने अपने कार्यों के माध्यम से आर्थिक रिकवरी की अगुवाई की है। 1,233 मिलियन टन माल की ढुलाई की गई, जो किसी भी वर्ष की तुलना में सबसे अधिक है। पिछले वित्तीय वर्ष में 6,015 रूट किलोमीटर रेल विद्युतीकरण का कार्य सम्पन्न हुआ है। जैसा कि कहा जाता है कि 'रिकॉर्ड टूटने के लिए होते हैं' और भारतीय रेल से बेहतर यह कोई भी नहीं कर सकता। आज, रेलवे ग्राहक-केन्द्रित है और अपनी गति में सुधार के साथ-साथ परिचालन दक्षता के लिए कई कदम उठा रही है। इसका परिणाम भी दिख रहा है क्योंकि मालगाड़ियों की औसत गति लगभग दोगुनी होकर 44 किलोमीटर प्रति घंटा हो गई है और यात्री ट्रेनों की समयनिष्ठा 96% के स्तर पर बनाई रखी गई है। गत दो वर्षों में यात्री मृत्यु दर शून्य रही और रेल दुर्घटनाओं में भी भारी कमी आई है।"

रेल मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रेरित टीम के साथ हम लगातार रिकॉर्ड तोड़ते रहेंगे, बड़े लक्ष्य हासिल करेंगे, अपने प्रदर्शन से दूसरों के लिए उदाहरण बनेंगे और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देंगे।

किसी भी संस्था की सफलता के पीछे कुशल नेतृत्व का अहम् योगदान होता है। हमारे रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने लॉकडाउन से पहले ही विपरीत परिस्थितियों के लिए मार्गदर्शित करना शुरू कर दिया था। प्रतिदिन समीक्षा बैठक कर हो रहे कार्यों को योग्य दिशा दे रहे थे। साथ ही, रेलकर्मियों का उत्साह बढ़ा रहे थे। कोविड महामारी के खिलाफ रेल की सभी क्षेत्रीय रेलवे उत्पादन इकाइयों द्वारा पीपीई किट, सैनेटाइजर, मास्क, कोविड कोच आदि तैयार किए गए। यहाँ तक कि लोगों को मुफ्त में खाना तथा पीने का पानी उपलब्ध करवा कर अपने सामाजिक दायित्व का भी निर्वहन किया। रेलमंत्री के इस पत्र से निश्चित रूप से रेलकर्मियों का उत्साहवर्धन हुआ है।

उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना का हिस्सा चिनाब रेल ब्रिज दुनिया का सबसे ऊंचा ब्रिज है। इस ब्रिज की मेहराब बंदी का कार्य 5 अप्रैल, 2021 को पूर्ण कर लिया गया। 5.6 मीटर लंबा लोहे का टुकड़ा सबसे ऊंचे बिंदु पर फिट कर दिया गया, जिसने वर्तमान में चिनाब नदी के दोनों किनारों से एक-दूसरे की ओर खिंचाव वाली मेहराव की दो भुजाओं को आपस में जोड़ा है। चिनाब के ऊपर पुल बनाने का यह सबसे कठिन हिस्सा था। रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुनीत शर्मा तथा उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री आशुतोष गंगल वीडियो कॉन्फेंसिंग के माध्यम से इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने।

एक और अच्छी खबर है। भारतीय रेल ने यात्रा के दौरान शिकायतों एवं पूछताछ के जल्द समाधान हेतु सभी रेलवे हेल्पलाइन को सिंगल नंबर 139 (रेल मदद) में समेकित कर दिया है। अब यात्रियों को अलग-अलग रेलवे हेल्पलाइन नंबरों को याद रखने की आवश्यकता नहीं।

आप को हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ। ■

रेल मंत्री ने जबलपुर-चांदफोर्ट सुपरफास्ट ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना किया

वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जबलपुर-चांदफोर्ट विशेष रेलगाड़ी का शुभारंभ करते हुए रेल, वाणिज्य एवं उद्योग, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल। इस अवसर पर आयोजन स्थल पर इस्पात राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते भी उपस्थित थे

रेल, वाणिज्य एवं उद्योग, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 8 मार्च को वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जबलपुर-चांदफोर्ट विशेष रेल गाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और मध्य प्रदेश के विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर कई रेल परियोजनाओं, यात्री सुविधाओं का उद्घाटन किया। इस अवसर पर इस्पात राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते और अन्य गणमान्य व्यक्ति आयोजन स्थल पर उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री गोयल ने 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि महत्त्वपूर्ण परियोजनाएं आज राष्ट्र को समर्पित की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि आज के दिन झांसी और ग्वालियर के बीच एक विशेष रेलगाड़ी का परिचालन किया गया, जिसके चालक दल की सभी सदस्य महिलाएं थीं।

उन्होंने कहा कि जबलपुर-चांदफोर्ट के बीच में नई रेलगाड़ी के शुरू होने से इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और संपर्क में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की भारतीय रेल नेटवर्क को और विस्तार देने के प्रति विशेष रुचि है। प्रधानमंत्री ने बीते 7 वर्षों में मध्य प्रदेश के लिए बड़ी संख्या में परियोजनाओं को मंजूरी दी और इन परियोजनाओं को पूरा करने के लिए धन का भी आवंटन सुनिश्चित किया। वर्ष 2009 से 2014 के बीच मध्य प्रदेश में रेल से जुड़ी परियोजनाओं का कुल औसत बजट जहां 632 करोड़ रुपये प्रति वर्ष था, वहीं वर्ष 2021-22 में प्रधानमंत्री की स्वीकृति के चलते बढ़कर 7,700 करोड़ रुपये हो गया। यह वृद्धि 12 गुना अधिक की है।

जबलपुर-चांदफोर्ट एक्सप्रेस के बारे में

गाड़ी संख्या 02274 जबलपुर-चांदफोर्ट एक्सप्रेस, जबलपुर से सुबह 05:15 पर रवाना होगी और चांदफोर्ट दोपहर 13:45 पर पहुंचेगी। यह सप्ताह में 3 दिन - मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को चलेगी। गाड़ी संख्या 02273 चांदफोर्ट-जबलपुर एक्सप्रेस, चांदफोर्ट से 14:50 पर रवाना होगी और जबलपुर रात 23:25 पर पहुंचेगी। यह गाड़ी चांदफोर्ट से मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को रवाना होगी। दोनों स्टेशनों के बीच यह गाड़ी मदन महल, नैनपुर, बालाघाट और गोंदिया स्टेशनों पर रुकेगी।

सतना-काइमा खंड (6 किमी) का दोहरीकरण

रेल मंत्री ने सतना-काइमा खंड पर 6 किमी के रेलवे ट्रैक की दोहरीकरण परियोजना का उद्घाटन किया। 30 करोड़ रुपये की लागत से सतना-काइमा खंड पर दोहरीकरण का यह काम पूर्ण हो चुका है। यह सतना-रीवा मार्ग के दोहरीकरण की परियोजना का हिस्सा है। इस मार्ग पर आवागमन को बेहतर करने के लिए रेलवे की यह एक महत्त्वपूर्ण परियोजना है। इस खंड के दोहरीकरण से क्षेत्र में रेल संपर्क बेहतर होगा और रेलगाड़ियों का परिचालन और तेज हो जाएगा।

शिवपुरी रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का उन्नयन

शिवपुरी रेलवे स्टेशन पर 2.5 करोड़ रुपये की लागत से विभिन्न यात्री सुविधाओं का उद्घाटन किया गया, जिसमें स्टेशन का सौंदर्यीकरण, नया प्रतीक्षालय, प्लेटफॉर्म की सतह का सौंदर्यीकरण, हरित स्टेशन के लिए हाइब्रिड पावर स्टेशन का आधुनिकीकरण और जीआरपी कक्ष शामिल हैं।

संत हिरदाराम नगर स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का उन्नयन

भोपाल खंड के अंतर्गत संत हिरदाराम नगर स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज (पैदल पार पथ), प्लेटफॉर्म पर कवर क्षेत्र का विस्तार, प्लेटफॉर्म की सतह का सौंदर्यीकरण और बोगी निर्देशन व्यवस्था का भी उद्घाटन हुआ, जिसमें 2 करोड़ रुपये की लागत आई है। इससे भोपाल क्षेत्र में यात्रियों के यात्रा अनुभव अच्छे होंगे।

सोरई रेलवे स्टेशन पर नए माल शेड का उद्घाटन

सुरई स्टेशन पर नए माल शेड का उद्घाटन किया गया। इसके निर्माण में 18 करोड़ रुपये की लागत आई है। यह भोपाल-बीना रेल मार्ग पर माल ढुलाई की व्यवस्था को बेहतर करेगा। यह भोपाल, बीना, विदिशा आदि क्षेत्रों के लिए अपनी सेवाएं देगा।

कारकबेल स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज का उद्घाटन

इटारसी-जबलपुर मार्ग के कारकबेल स्टेशन पर एक नए फुटओवर ब्रिज का उद्घाटन किया गया। इस नए फुट ओवर ब्रिज के निर्माण में 1 करोड़ रुपये की लागत आई है। ■

रेल मंत्री द्वारा कोटद्वार-दिल्ली सिद्धबली जन शताब्दी एक्सप्रेस का शुभारंभ

शिक्षा मंत्री, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की उपस्थिति में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कोटद्वार-दिल्ली जंक्शन-कोटद्वार सिद्धबली जन शताब्दी विशेष रेलगाड़ी का शुभारंभ करते हुए रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल

रेल, वाणिज्य और उद्योग और उपभोक्ता कार्य, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 3 मार्च को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कोटद्वार-दिल्ली जंक्शन-कोटद्वार सिद्धबली जन शताब्दी विशेष रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे।

इस अवसर पर श्री गोयल ने उन परिश्रमी रेल कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने महामारी के दौरान दवा, कोयला और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करके देश की सेवा की। उन्होंने बताया कि कोटद्वार-दिल्ली मार्ग का विद्युतीकरण लगभग पूरा हो चुका है। जल्द ही बिजली से चलने वाली रेलगाड़ियां कोटद्वार से दिल्ली तक जाएंगी। इससे प्रदूषण में कमी आने से पर्यावरण भी सुरक्षित होगा। आगे जाकर सभी रेलगाड़ियां पूरे उत्तराखंड राज्य में बिजली से ही चलेंगी। इससे राज्य में कार्बन उत्सर्जन शून्य हो जाएगा और पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

उन्होंने यह भी बताया कि उत्तराखंड में रेलवे की परियोजनाएं अच्छी प्रगति कर रही हैं। केंद्रीय बजट 2021-22 में रेलवे परियोजनाओं के लिए 4,432 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जो राज्य के लिए 2009-14 के दौरान औसत बजट से लगभग 23 गुना अधिक है। उत्तराखंड में तीन नई रेल लाइन परियोजनाओं पर काम चल रहा है और ऋषिकेश तथा कर्णप्रयाग के बीच रेलवे लाइन का काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। 212 करोड़ रुपये की लागत से देहरादून रेलवे स्टेशन के विकास की योजना है। उत्तराखंड पर प्रधानमंत्री का विशेष ध्यान होने के कारण राज्य में व्यापक विकास के लिए प्रेरक शक्ति का काम कर रही है। यह रेलगाड़ी कोटद्वार को राष्ट्रीय राजधानी से जोड़ेगी और इस क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक विकास लाएगी। सिद्धबली मंदिर के दर्शन के लिए जाने वाले तीर्थयात्रियों को बेहतर सम्पर्क से निश्चय ही लाभ होगा।

कोटद्वार-दिल्ली सिद्धबली जन शताब्दी एक्सप्रेस

रेलगाड़ी संख्या 04047 कोटद्वार-दिल्ली सिद्धबली जन शताब्दी एक्सप्रेस दैनिक विशेष रेलगाड़ी कोटद्वार से दोपहर बाद 15.50 बजे प्रस्थान करेगी और रोजाना रात 22.20 बजे दिल्ली जंक्शन पहुंचेगी। रेलगाड़ी संख्या 04048 दिल्ली जंक्शन-कोटद्वार सिद्धबली जन शताब्दी एक्सप्रेस रेलगाड़ी दिल्ली जंक्शन से सवेरे 07.00 बजे प्रस्थान करेगी और प्रतिदिन दोपहर बाद 13.40 बजे कोटद्वार पहुंचेगी। यह रेलगाड़ी दोनों तरफ से नजीबाबाद जंक्शन, मुजफ्फरपुर नारायण जंक्शन, बिजनौर, हल्दौर, चांद सियाऊ, मंडी धनौरा, गजरौला, हापुड़, गाजियाबाद में रुकेगी। ■

रेल मंत्री ने मोजाम्बिक को निर्यात किए जानेवाले लोकोमोटिव को हरी झंडी दिखाई

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री, भारत सरकार डॉ. महेंद्र नाथ पांडे तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े मोजाम्बिक सरकार के परिवहन और संचार मंत्री श्री जनेफर अब्दुलई की उपस्थिति में रेलमंत्री श्री पीयूष गोयल ने मोजाम्बिक को निर्यात किए जाने वाले 3,000 एचपी केप गेज लोकोमोटिव को हरी झंडी दिखाई

रेल, वाणिज्य और उद्योग और उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल ने कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे की उपस्थिति मोजाम्बिक को निर्यात किए जाने वाले बनारस लोकोमोटिव वर्क्स (बीएलडब्ल्यू) द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित 3,000 एचपी केप गेज लोकोमोटिव को हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर मोजाम्बिक सरकार के परिवहन और संचार मंत्री श्री जनेफर अब्दुलई के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े थे।

मोजाम्बिक को इंजनों के निर्यात से भारत-अफ्रीका संबंध और आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा मिलेगा। भारतीय रेल 3,000 एचपी गेज लोकोमोटिव के 6 लोकोमोटिव और 90 स्टेनलेस स्टील यात्री डिब्बों के निर्यात के क्रम में एक हिस्से के रूप में 2 लोकोमोटिव के पहले बैच का निर्यात कर रही है। इन लोकोमोटिव को 'मेक इन इंडिया' मिशन और 'आत्मनिर्भर भारत' की भावना के तहत बीएलडब्ल्यू द्वारा भारत में डिजाइन और विकसित किया गया है। इन्हें भारतीय रेल के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम राइट्स लिमिटेड के माध्यम से निर्यात किया जा रहा है। साथ ही, यह भारत द्वारा वित्तपोषित किया गया है।

इस अवसर पर श्री गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व और अफ्रीकी-भारतीय संबंधों को और मजबूत करने की उनकी प्रतिबद्धता के तहत हम मोजाम्बिक के विश्वसनीय भागीदार के रूप में काम करेंगे। महत्त्वपूर्ण नवाचार, पुनः मॉडलिंग और अपग्रेडेशन के साथ, भारतीय रेल अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए मोजाम्बिक और दुनिया भर के देशों के लिए पसंदीदा आपूर्तिकर्ता बनना चाहती है। हम मोजाम्बिक में रेल नेटवर्क के और अधिक विकास का समर्थन करने के लिए तैयार हैं। वर्ष 2030 तक हम अपनी अक्षय ऊर्जा उत्पादन से रेलवे की तमाम विद्युत संबंधी जरूरतों को पूरा करने का लक्ष्य प्राप्त करेंगे। भारतीय रेल दुनिया की पहली बड़ी रेल प्रणाली होगी, जो 100 प्रतिशत इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन संचालित होगी।

- भारतीय रेल उत्पादन इकाई बनारस लोकोमोटिव वर्क्स (बीएलडब्ल्यू) को मोजाम्बिक से 6 डीजल, केप गेज लोकोमोटिव के निर्यात का ऑर्डर प्राप्त हुआ
- आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत इन केप गेज डीजल इंजनों को भारत में डिजाइन और विकसित करने के साथ भारत द्वारा वित्तपोषित किया गया है
- यह बीएलडब्ल्यू द्वारा विकसित पहला एसी-एसी ट्रैक्शन सिस्टम वाला 3,000 एचपी, केप गेज इंजन है
- 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार के साथ साथ 2,255 टन वजन की क्षमता वाला यह इंजन 400एन का अधिकतम ट्रैक्टिव प्रयास कर सकता है।
- जनवरी 2020 में ऑर्डर प्राप्त होने के बाद 14 महीनों के भीतर दो इंजनों की नए डिजाइन, खरीद और निर्माण की प्रक्रिया संपन्न हुई
- इंजन के सबसे महत्त्वपूर्ण पुर्जे यानी क्रैंक-केस असेंबली को भी बीएलडब्ल्यू ने इन-हाउस तैयार किया है
- भारतीय रेल का बनारस लोकोमोटिव वर्क्स मल्टी ट्रेक्शन मल्टी गेज सिस्टम के लिए, लोकोमोटिव और पुर्जों के अलावा प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण और रखरखाव सहायता की निर्यात सेवाएं प्रदान कर सकता है।

इस अवसर पर डॉ. महेंद्र नाथ पांडे ने कहा कि भारतीय रेल द्वारा निर्मित अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'आत्मनिर्भर भारत' के मंत्र का प्रतीक हैं। हमारी दृष्टि भारत को कौशल पूंजी बनाने की है। मोजाम्बिक सरकार के परिवहन और संचार मंत्री श्री जनाफर अब्दुलई ने परिवहन के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया।

बनारस लोकोमोटिव वर्क्स परिसर में लोकोमोटिव को हरी झंडी दिखाते अतिथिगण

'मेक इन इंडिया' पहल के तहत लोकोमोटिव का निर्माण

घरेलू डिजाइन : यह बीएलडब्ल्यू की तरफ से पहला केप गेज लोकोमोटिव निर्माण है, जो एसी-एसी ट्रैक्शन सिस्टम से विकसित किया गया है। यह 20 टन का वजन और 100 किमी प्रति/घंटा रफ्तार के लिए सक्षम होने वाला नया डिजाइन है। एसी-एसी ट्रैक्शन सिस्टम, ट्रैक्शन ऑल्टरनेटर, ट्रैक्शन मोटर, टर्बो और वॉटर क्लॉजेट को खासतौर पर मोजाम्बिक के लिए इस कारखाने के घरेलू डिजाइन सेंटर द्वारा तैयार किया गया है।

घरेलू निर्माण : इंजन की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु यानी क्रैंक-केस असेंबली को बीएलडब्ल्यू में ही विकसित किया गया है।

घरेलू उद्योग में निर्माण क्षमता : भविष्य के निर्यात के लिए निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की कई संस्थाओं की क्षमताओं को बढ़ाया गया है। बीएलडब्ल्यू ने सब-असेंबली, जैसे टर्बो- सुपरचार्जर असेंबली, ट्रैक्शन मोटर एंड ऑल्टरनेटर, ट्रैक्शन प्रोपल्शन सिस्टम, फ्यूल टैंक और कंप्रेसर आदि के लिए कई सार्वजनिक / निजी आपूर्तिकर्ताओं के साथ सहयोग और मार्गदर्शन बढ़ाया है। इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि बीएलडब्ल्यू में लोकोमोटिव के निर्यात की एक मजबूत परंपरा है। इनसे हर प्रकार की गेज (बीजी, एमजी और केप गेज) और हॉर्स पावर, 15 मीटर गेज 6 सिलिंडर से शुरू, 165 डीजल लोकोमोटिव और 1,350 एचपी, अल्को टाइप लोकोमोटिव तंजानिया को सन् 1975 में निर्यात किए थे। आखिरी बार 2009-10 में बनारस लोकोमोटिव वर्क्स ने केप गेज लोको एक अल्को 3,000 एचपी मोजाम्बिक को निर्यात किए थे। 2017-18 में 18 एमजी डीजल लोको को म्यांमार को निर्यात किया गया था। 2018-2020 के दौरान 10 बीजी डीजल लोको श्रीलंका को निर्यात किए गए थे। ■

3,000 एचपी केप गेज लोकोमोटिव

- यह लोकोमोटिव लेवल ट्रैक पर 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से 2,255 टन वजन ढोने की क्षमता और 400एन के अधिकतम ट्रैक्टिव प्रयास के लिए सक्षम है।
- इस लोकोमोटिव के केबिन शोर-कंपन और कर्कश ध्वनि-रोधी हैं जहां वैज्ञानिक तकनीक से आवाज को बेहतर कर्णप्रिय बनाया गया है। इसकी सीटें बेहद आरामदायक हैं और इंटीग्रेटेड ग्राफिक ड्राइवर डिस्प्ले भी है। बेहतर क्रू कंफर्ट और थकान को कम करने के लिए हीटिंग वेंटिंग एसी भी दिया गया है।
- परिवहन के दौरान इस्तेमाल के लिए पानी की टंकी, रेफ्रिजरेटर और हॉट प्लेट की सुविधाएं भी हैं।
- राइट हैंड ड्राइव के लिए नए कंट्रोल कंसोल को डिजाइन और विकसित किया गया है।
- उच्चतम सुरक्षा मानकों और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए कंप्यूटर नियंत्रित ब्रेक सिस्टम (सीसीबी 2.0) से इसे लैस किया गया है।
- अधिक संचालन के लिए 6,000 लीटर का बड़ा ईंधन टैंक दिया गया है।

रेल मंत्री ने ग्वालियर स्टेशन पर तीन यात्री लिफ्टों का लोकार्पण किया

दिनांक 21 फरवरी को ग्वालियर में आयोजित कार्यक्रम में रेल, वाणिज्य एवं उद्योग, उपभोक्ता मामलों एवं खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री, भारत सरकार श्री पीयूष गोयल द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ग्वालियर स्टेशन पर तीन लिफ्टों का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर ग्वालियर स्टेशन पर सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर जी ने फीता काटकर लिफ्ट को यात्रियों को सौंपा। सांसद राज्य सभा श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ऑनलाइन के माध्यम से कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उत्तर मध्य एवं उत्तर पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री विनय त्रिपाठी भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा समारोह में मौजूद रहे।

ज्ञात हो कि ग्वालियर नगर की विकास गाथा में भारतीय रेल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ग्वालियर में रेल का आगमन सन् 1881 में हुआ था, जब यह शहर आगरा से सीधी लाइन से जुड़ गया था। तदोपरांत सन् 1889 में इंडियन मिडलैंड रेलवे द्वारा इसको झांसी से जोड़ा गया। लगभग 140 वर्षों के इतिहास में

रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर एवं सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की उपस्थिति में ग्वालियर स्टेशन पर तीन लिफ्टों का लोकार्पण किया

भारतीय रेल ने इस शहर को संपूर्ण राष्ट्र और बड़े शहरों के माध्यम से संपूर्ण विश्व से जोड़ने के कार्य किया है। ■

दुनिया का सबसे ऊंचा रेल पुल : चिनाब रेल पुल की मेहराब बंदी का कार्य पूर्ण

भारतीय रेल ने 5 अप्रैल को प्रतिष्ठित चिनाब पुल का मेहराब बंदी काम पूरा कर लिया है। यह चिनाब पुल दुनिया का सबसे ऊंचा पुल है और यह उधमपुर-श्रीनगर- बारामूला रेल लिंक परियोजना (यूएसबीआरएल) का हिस्सा है, रेलवे ने इस प्रतिष्ठित चिनाब पुल की इस्पात मेहराब को पूरा करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। चिनाब के ऊपर पुल बनाने का यह सबसे कठिन हिस्सा था। यह उपलब्धि कटरा से बनिहाल तक 111 किलोमीटर लंबे खंड को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह निश्चित रूप से हाल के इतिहास में भारत में किसी रेल परियोजना के सामने आने वाली सबसे बड़ी सिविल-इंजीनियरिंग चुनौती है। 5.6 मीटर लंबा धातु का टुकड़ा आज सबसे ऊंचे बिंदु पर फिट किया गया है, जिसने वर्तमान में नदी के दोनों किनारों से एक-दूसरे की ओर खिंचाव वाली मेहराब की दो भुजाओं को आपस में जोड़ा है। इससे मेहराब का आकार पूरा हो गया है, जो 359 मीटर नीचे बह रही जोखिम भरी चिनाब नदी पर लूम करेगी। मेहराब का काम पूरा होने के बाद, स्टे केबल्स को हटाने, मेहराब रिब में कंक्रीट भरने, स्टील ट्रेस्टल को खड़ा करने, वायडक्ट लॉन्च करने और ट्रैक बिछाने का काम शुरू किया जाएगा।

चिनाब पुल का मेहराब बंदी काम पूर्ण होने की प्रक्रिया को वीडियो के माध्यम से देखते हुए रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल एवं रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुनीत शर्मा

रेल, वाणिज्य एवं उद्योग तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुनीत शर्मा, उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री आशुतोष गंगल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ऐतिहासिक मेहराब का काम पूरा होते हुए देखा। ■

रेल मंत्री ने रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य की प्रगति की समीक्षा की

भारतीय रेल द्वारा समग्र देश में रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। सरकार पीपीपी परियोजना के तहत निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ पूरी ताकत से इस कार्य को आगे बढ़ा रही है। वर्तमान में 123 स्टेशनों के पुनर्विकास पर काम हो रहा है। इनमें से 63 स्टेशनों पर आईआरएसडीसी और 60 स्टेशनों पर आरएलडीए काम कर रही है। वर्तमान अनुमानों के मुताबिक, रियल एस्टेट विकास के साथ 123 स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए लगभग कुल 50,000 करोड़ रुपये के निवेश की आवश्यकता है।

केंद्रीय रेल, वाणिज्य एवं उद्योग और उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल ने हबीबगंज और गांधीनगर रेलवे स्टेशन की प्रगति की समीक्षा की। रेल मंत्री ने इन रेलवे स्टेशनों पर हवाई अड्डों के स्तर की सुविधाओं के पुनर्विकास के लिए किए जा रहे कार्य और मल्टी मॉडल हब और वाणिज्यिक विकास के साथ शहरी विकास का सामंजस्य बिठाने के लिए सराहना की। समीक्षा के दौरान, रेल मंत्री ने स्टेशन के विकास/पुनर्विकास की भावी परियोजनाओं के लिए अपने सुझाव दिया कि भारतीय रेल के स्टेशन पुनर्विकास परियोजना के तहत स्टेशनों के पुनर्विकास के दौरान सीखी गई सीख को भावी परियोजना के डिजाइन/निर्माण के दौरान ध्यान रखा जाना चाहिए और स्टेशन खूबसूरत दिखने के साथ हमें बेहतर सामग्री के उपयोग के लिए प्रयास करने चाहिए।

123 स्टेशनों के पुनर्विकास पर काम

63 आईआरएसडीसी द्वारा

60 आरएलडीए द्वारा

स्टेशनों पर काम चल रहा है

50,000 करोड़ रुपये के निवेश की आवश्यकता

हबीबगंज रेलवे स्टेशन

हबीबगंज रेलवे स्टेशन भारतीय रेल का वह स्टेशन है, जिसका पुनर्विकास सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मोड के तहत आईआरएसडीसी द्वारा किया जा रहा है। पुनर्विकसित स्टेशन पर 'आगमन और प्रस्थान के आधार पर यात्रियों के पृथक्करण' की सुविधा होगी, जिससे प्लेटफॉर्म और कॉनकोर्स पर भीड़ मुक्त आवाजाही हो सकेगी। स्टेशन के प्लेटफॉर्म, कॉनकोर्स, लाउंजेस, शयनकक्ष और रिटायरिंग रूम में बैठने की पर्याप्त व्यवस्था और दिव्यांग अनुकूल सुविधाओं, जैसे कि लिफ्ट, एस्केलेटर्स और ट्रैवेलेटर्स की सुविधा होगी।

स्टेशन पर नवीन सुरक्षा और सूचना विशेषताएं (फायर सेफ्टी, सीसीटीवी, पीए सिस्टम, पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा एक्विजिशन (एससीएडीए), एक्सेस कंट्रोल, स्कैनिंग मशीन, आधुनिक साइनेज और सूचना डिस्प्ले) होंगी। स्टेशन का विकास सौर ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता उपकरण, पुन:उपयोग हेतु अपशिष्ट जल के उपचार के साथ लीड (LEED) 'हरित इमारत' मानकों के अनुसार किया जा रहा है।

गांधीनगर रेलवे स्टेशन

गांधीनगर स्टेशन का विकास गांधीनगर रेलवे और शहरी विकास द्वारा किया जा रहा है जोकि गुजरात सरकार और आईआरएसडीसी द्वारा क्रमश: 74:26 के अनुपात में इक्विटी योगदान के साथ स्थापित एसपीवी है। यह भारत में अपनी तरह की पहली परियोजना है, जिसमें लाइव रेलवे ट्रैक्स पर 5-स्टार होटल की बिल्डिंग होगी। रेलवे स्टेशन पर 105 मीटर में फैली प्लेटफॉर्म की छत स्तंभ मुक्त होगी, जो भारतीय रेल में सबसे बड़ी होगी। यात्रियों के बेहतर अनुभव के लिए स्टेशन पर सभी अत्याधुनिक सुविधाओं पुनर्विकसित की जा रहे है।

वर्तमान में, नागपुर, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, अजनी स्टेशन, हबीबगंज, ग्वालियर स्टेशन, गांधीनगर, साबरमती स्टेशन, अयोध्या, गोमती नगर स्टेशन, सफदरजंग, नई दिल्ली स्टेशन, तिरुपति, नेल्लोर स्टेशन, देहरादून, अमृतसर, एर्नाकुलम और पुदुचेरी रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का कार्य जारी है। ■

फलटण और पुणे के बीच डेमू सेवा का शुभारंभ

लोनंद के रास्ते फलटण से पुणे के लिए डेमू (डीईएमयू) रेलगाड़ी को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, सूचना और प्रसारण, भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, सूचना और प्रसारण, भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने 30 मार्च, 2021 को नई दिल्ली से वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से लोनंद के रास्ते फलटण से पुणे के लिए डेमू (डीईएमयू) रेलगाड़ी को झंडी दिखाकर रवाना किया।

श्री शामराव उर्फ बाला साहेब पाटिल, सहकारिता और विपणन मंत्री, महाराष्ट्र सरकार और सतारा जिले के संरक्षक मंत्री, श्री रंजीत सिंह नाइक निंबालकर, सांसद (लोकसभा), श्री गिरीश बापट, सांसद (लोकसभा), श्रीयुत श्रीनिवास पाटिल, सांसद (लोकसभा), श्री छत्रपति उदयनराजे भोंसले, सांसद (राज्य सभा), श्री चंद्रकांत (दादा) पाटिल, - श्री सुनील कांबले, विधायक और श्रीमती नीता नेवसे, अध्यक्ष, नगर परिषद्, फलटण इस अवसर पर वीडियो लिंक के माध्यम से शामिल हुए। श्री सुनीत शर्मा, अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री पुर्णेन्द्रू मिश्रा, सदस्य (ओएंडबीडी), रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली से वीडियो लिंक के माध्यम से समारोह में शामिल हुए। मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री संजीव मित्तल सीएसएमटी मुंबई से समारोह में उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री जावड़ेकर ने कहा कि रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल के मार्गदर्शन में रेलवे में व्यापक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। रेलगाड़ियों जैव-शौचालयों का प्रचलन आरम्भ होने से पटरियों और रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर साफ-सफाई नजर आ रही है। यह 'स्वच्छ भारत अभियान' का एक आदर्श उदाहरण है।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल के नेतृत्व में आईआरसीटीसी पर सरलीकृत आरक्षण प्रणाली शुरू होने से यात्रियों को जल्दी टिकट प्राप्त करने में मदद मिली है। रेलवे में उच्चतम मानकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग को समाप्त करने, विद्युतीकरण में प्रगति, रेलवे पटरियों के दोहरीकरण और बंदरगाह संपर्क जैसे बुनियादी ढांचों में सुधार ने अर्थव्यवस्था और विकास को बढ़ावा देने में मदद की है। 5,000 से अधिक रेलवे स्टेशनों पर वाई-फाई की सुविधा प्रदान की गई है। ■

फलटण-पुणे डेमू रेलगाड़ी की पृष्ठभूमि

- लोनंद के रास्ते होकर फलटण और पुणे के बीच रेलगाड़ियों के चलने से सामान्य रूप से इस क्षेत्र के लोगों और किसानों को नए बाजारों तक पहुंचने में मदद मिलेगी, विशेष रूप से छात्रों को अपनी पसंद के शैक्षिक संस्थानों तक पहुंचने और श्रमिकों को अधिक हरा चारा तलाश करने के लिए जाने में मदद मिलेगी।
- रेलवे, परिवहन का सबसे सस्ता साधन होने के नाते और लोनंद होते हुए पुणे से फलटण के बीच सीधा सम्पर्क क्षेत्र के लिए एक वरदान साबित होगा।
- इसके अलावा, फलटण के निवासियों को फलटण से पुणे और वापस जाने के लिए सीधी यात्री रेलगाड़ी से सम्पर्क की सुविधा प्राप्त होगी।

चक्रधरपुर और रांची मंडल क्षेत्र के सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक

राउरकेला में चक्रधरपुर एवं रांची मंडल क्षेत्र के सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक का दृश्य

दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर और रांची मंडल के अधिकार क्षेत्र के तहत लोकसभा और राज्यसभा सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक दिनांक 24 फरवरी, 2021 को राउरकेला में आयोजित की गई। मंडलीय समिति की बैठक की अध्यक्षता श्री जुएल ओराम, सांसद, सुंदरगढ़, ओडिशा ने की। बैठक में भाग लेने वाले अन्य संसद सदस्य थे श्री बिद्युत बरन महतो, सांसद लोकसभा, श्रीमती, गीता कोड़ा, सांसद, लोकसभा, श्री बिशेश्वर टुडू, सांसद लोकसभा, श्रीमती, ममता महंता, सांसद, राज्य सभा, श्री नितेश गंगा देब, सांसद लोकसभा, श्री सुरेश पुजारी, सांसद लोकसभा, श्री संजय सेठ, सांसद लोकसभा। श्री महेश पोद्दार, सांसद, राज्य सभा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में शामिल हुए। सांसदों ने दक्षिण पूर्व रेलवे के समग्र विकास के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दिए।

श्री संजय कुमार महांति, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे चल रही परियोजनाओं कि स्थिति के बारे में सांसदों को अवगत कराया एवं कहा की सांसदों द्वारा यात्री सुविधाओं और रेलवे के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए दिए गए सुझावों की उचित महत्त्व के साथ समीक्षा की जाएगी। ■

खड़गपुर एवं आद्रा मंडल क्षेत्र के सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक

कोलकाता में खड़गपुर एवं आद्रा मंडल क्षेत्र के सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक का एक दृश्य

दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर एवं आद्रा मंडल के अधिकार क्षेत्र के तहत लोकसभा और राज्यसभा सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक 17 फरवरी, 2021 को कोलकाता में आयोजित की गई। मंडलीय समिति की बैठक की अध्यक्षता सांसद श्री दिलीप घोष ने की। बैठक में भाग लेने वाले अन्य सांसद थे, श्री प्रताप चन्द्र सारंगी, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग राज्य मंत्री, पशुपालन एवं डेयरी, श्री प्रसून बनर्जी, श्री कुनार हेम्ब्रम, श्रीमती मंजुलता मंडल, श्रीमती ममता मोहंता, श्री सुनील कुमार मंडल, डॉ सुभाष सरकार, श्री ज्योतिर्मय सिंह महतो और श्री चंद्र प्रकाश चौधरी। श्री शिशिर अधिकारी, श्री दिब्येंदु अधिकारी और श्री बिशेश्वर टुडू वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में शामिल हुए। सांसदों ने दक्षिण पूर्व रेलवे के समग्र विकास के लिए अपने सुझाव दिए।

श्री संजय कुमार महांति, महाप्रबंधक ने दक्षिण पूर्व रेलवे में चल रही परियोजनाओं की स्थिति के बारे में सांसदों को अवगत कराया एवं कहा कि उनके द्वारा यात्री सुविधाओं और रेलवे के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए दिए गए सुझावों की उचित महत्त्व के साथ समीक्षा की जाएगी। ■

मध्य रेल द्वारा ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय मानव संसाधन समिट का आयोजन

मध्य रेल के पुणे मंडल द्वारा 19 मार्च, 2021 को एक ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय मानव संसाधन समिट आयोजित की गई।

समिट का उद्घाटन रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुनीत शर्मा द्वारा किया गया। इस समिट में रेलवे बोर्ड के महानिदेशक, मानव संसाधन डॉ. आनंद एस. खाती, श्री संजीव मित्तल, महाप्रबंधक, मध्य रेल, डॉ. ए. के. सिन्हा, प्रधान, मुख्य कार्मिक अधिकारी, मध्य रेल और श्रीमती रेणु शर्मा, मंडल रेल प्रबंधक, पुणे मंडल ने भाग लिया।

समिट में अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों, राज्य सरकार और कॉर्पोरेट क्षेत्र के वक्ताओं को भी मानव संसाधन प्रैक्टिस पर भविष्य की चुनौतियों और भारतीय रेल पर इसके प्रभाव पर अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया था।

समिट के मुख्य उद्देश्य

- भारतीय रेल की दक्षता में सुधार के लिए मानव संसाधन में सर्वोत्तम प्रैक्टिस को प्राप्त करना।
- भविष्य के नीतिगत ढांचे के लिए नए विचार और सर्वोत्तम अभ्यास प्रदान करना।
- भारतीय रेल में कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए नई तकनीकी, विचारों और अनुभवों और समाधानों को साझा करना।

इस ऑनलाइन समिट में मध्य रेल के मुख्यालय और मंडलों के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए। ■

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने किया रेल पहिया कारखाने का दौरा

श्री सुनीत शर्मा, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने 28 मार्च, 2021 को रेल पहिया कारखाना, बेंगलुरु का दौरा किया। श्री शर्मा ने रेपका के कामकाज की समीक्षा करते हुए उन्होंने उत्पादों के निर्यात हेतु एक यूनिट के लिए आवश्यक विश्व स्तरीय गुणवत्ता को बनाए रखने और प्रमाणनों के लिए रेपका की सराहना की। श्री शर्मा ने रेपका में कर्मचारी कल्याण उपायों की समीक्षा की तथा उन्होंने स्टाफ काउंसिल, एससी/एसटी और ओबीसी संघों के पदाधिकारियों से मुलाकात की। रेपका के महाप्रबंधक, श्री राजीव कुमार व्यास ने कहा की रेपका ने चालू वित्त वर्ष में 1,23,678 पहियों, 70,794 धुरों और 50,573 पहिया सेटों (25 मार्च, 2021 के अनुसार) का उत्पादन किया है और रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य को पार कर लिया है। ■

श्री सुनीत शर्मा, अध्यक्ष एव मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने 13 मार्च, 2021 को उत्तर रेलवे केन्द्रीय अस्पताल, नई दिल्ली में कोरोना टीके की पहली डोज ली। उन्होंने रेलवे लाभार्थियों के लिए चलाए जा रहे टीकाकरण कार्यक्रम की व्यवस्थाओं की सराहना की। ■

सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर, रेलवे बोर्ड का आरडीएसओ दौरा

श्री प्रदीप कुमार, सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर, रेलवे बोर्ड ने 23 फरवरी 2021 को आरडीएसओ का दौरा किया। श्री वीरेंद्र कुमार, महानिदेशक, आरडीएसओ ने सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर का स्वागत किया। श्री प्रदीप कुमार ने प्रधान कार्यकारी एवं कार्यकारी निदेशकों के साथ बैठक की। इस बैठक में प्रधान कार्यकारी निदेशक/टीएमएम एवं प्रधान कार्यकारी निदेशक/QA/S&T द्वारा प्रस्तुतीकरण दिया गया। बैठक के बाद श्री प्रदीप कुमार ने सिग्नल लैब का निरीक्षण किया। सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर की यात्रा के दौरान श्री एस.सी. श्रीवास्तव, प्रधान कार्यकारी निदेशक/TMM, श्री शमिंदर सिंह, प्रधान कार्यकारी निदेशक/QA/S-T, श्री बी.पी. अवस्थी, प्रधान कार्यकारी निदेशक/ब्रिज एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। ■

एमसीएफ में अपर सदस्य (उत्पादन इकाई) रेलवे बोर्ड का दौरा

रेलवे बोर्ड के एडिशनल मेम्बर (उत्पादन इकाई) श्री चेतराम ने 5 फरवरी को आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली का दौरा किया। श्री चेतराम ने कारखाने में हो रहे उत्पादन कार्यों की विस्तृत रूप से जानकारी ली। श्री चेतराम ने कारखाना निरीक्षण के पश्चात् महाप्रबंधक एमसीएफ श्री विनय मोहन श्रीवास्तव के साथ भविष्य की योजनाओं पर गहन विचार-विमर्श किया।

निरीक्षण के दौरान यांत्रिक विभाग के द्वारा कारखाने एवं कोच उत्पादन विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। इसके पश्चात् श्री चेतराम ने राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के फोर्ज्ड व्हील प्लांट का भी निरीक्षण किया। ■

आपको यह अंक कैसा लगा हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें : संपादक, भारतीय रेल, 337-बी, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001

वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान माल ढुलाई और आय के मामले में भारतीय रेल ने सर्वाधिक ढुलाई के आंकड़े दर्ज किए

कोविड की चुनौतियों के बावजूद भी भारतीय रेल ने माल ढुलाई के एक नए कीर्तिमान के साथ वित्त वर्ष 2020-21 का समापन किया है।

वित्त वर्ष 2020-21 के अंतिम माह में भारतीय रेल ने 1,232.63 मिलियन टन माल की ढुलाई करके पिछले वर्ष की इसी अवधि की ढुलाई को पीछे छोड़ दिया है जो 1,209.32 मिलियन टन थी और यह 1.93 प्रतिशत अधिक की वृद्धि दर्शाता है।

इस अवधि में माल ढुलाई से 1,17,386.0 करोड़ की आय का अर्जन किया जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की आय 1,13,897.20 करोड़ रुपये से 3 प्रतिशत अधिक है।

भारतीय रेल ने सितम्बर 2020 से मार्च 2021 तक के लगातार सात महीनों में अब तक की सर्वाधिक माल ढुलाई की है।

मिशन मोड में भारतीय रेल ने मार्च 2021 में पिछले वर्ष की इसी अवधि से अधिक माल ढुलाई और आय का अर्जन किया है।

मार्च 2021 में भारतीय रेल ने 130.38 मिलियन टन माल की ढुलाई की है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की 103.05 मिलियन टन की माल ढुलाई से 27.33 प्रतिशत अधिक है। भारतीय रेल द्वारा की गई 130.38 मिलियन टन ढुलाई में 58.57 मिलियन टन कोयला, 16.78 मिलियन टन लौह अयस्क, 3.67 मिलियन टन खाद्यान्न, 2.57 मिलियन टन उर्वरक, 3.97 मिलियन टन खनिज तेल, और 9.56 मिलियन टन सीमेंट (क्लिंकर छोड़कर) शामिल है। मार्च 2021 में भारतीय रेल को माल ढुलाई से 12,887.71 करोड़ रुपये की आय हुई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में हुई 10,215.08 करोड़ रुपये की आय से भी 26.16 प्रतिशत अधिक है।

- वित्त वर्ष 2020-21 में भारतीय रेल ने कुल 1,232.63 मिलियन टन माल की ढुलाई की है जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 1,209.32 मिलियन टन से 1.93 प्रतिशत अधिक है
- वित्त वर्ष 2020-21 में भारतीय रेल को माल ढुलाई से 1,17,386.00 करोड़ की आय हुई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की 1,13,897.20 करोड़ रुपये से 3 प्रतिशत अधिक है
- सितम्बर 20 से मार्च 21 तक के सात महीनों में लगातार अब तक की सबसे अधिक माल ढुलाई हुई है
- मार्च 2021 में भारतीय रेल ने 130.38 मिलियन टन माल की ढुलाई की है जो 27.33 प्रतिशत की वृद्धि दिखाता है
- मार्च 2021 में ही भारतीय रेल को माल ढुलाई से 12,887.71 करोड़ रुपये की आय हुई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में हुई आय से भी 26.16 प्रतिशत अधिक है

यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि रेल से माल ढुलाई को अत्यधिक आकर्षक बनाने के लिए भारतीय रेल की ओर से कई तरह की रियायतें भी दी जाती हैं।

यह भी ध्यान में रखा होगा कि रेलवे की वर्तमान व्यवस्था में मालगाड़ियों की गति में भी अच्छी खासी वृद्धि की गई है। मार्च 2021 में मालगाड़ियों की औसत गति 45.6 किमी प्रति घंटा रही, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की औसत गति 24.93 किमी प्रति घंटा से 83 प्रतिशत अधिक है।

साथ ही, माल ढुलाई में हुए इस सुधार को संस्थागत बनाया जाएगा और इसे आने वाली शून्य आधारित समय सारिणी में भी शामिल करके इसी नए स्तर पर रखा जाएगा।

इस तरह, भारतीय रेल ने कोविड-19 का उपयोग अपनी चहुँ दिशा कार्य क्षमता और कार्य निष्पादन के लिए कर लिया है। ■

भारतीय रेल में 71 फीसदी का विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण

● एक साल में आश्चर्यजनक रूप से 37 फीसदी की बढ़ोत्तरी

भारतीय रेल ने 2020-21 के दौरान एक साल में 6,015 रूट किलोमीटर (आरकेएम) कवर करने वाले सेक्शनों का विद्युतीकरण किया है। यह अब तक का सबसे अधिक आंकड़ा है।

कोविड महामारी के बावजूद, इसने 2018-19 में हासिल पिछले उच्चतम आकंड़े 5,276 आरकेएम को पीछे छोड़ दिया है।

2020-21 के दौरान मुश्किल वक्त में 6000 किलोमीटर से अधिक की विद्युतीकरण परियोजना को पूरा करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की उपलब्धि भारतीय रेल के लिए गर्व का क्षण है। भारतीय रेल पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा सुरक्षित बनता जा रहा है। भारतीय रेल का नवीनतम ब्रॉड गेज नेटवर्क 63,949 रूट किलोमीटर (आरकेएम) है। कोंकण रेलवे के 740 किलोमीटर के साथ यह आंकड़ा बढ़कर 64,689 आरकेएम हो जाता है। 31.03.2021 तक इसमें से 45,881 आरकेएम यानी 71 फीसदी का विद्युतीकरण हो चुका है।

हालिया वर्षों में आयातित पेट्रोलियम आधारित ऊर्जा पर राष्ट्र की निर्भरता को कम करने और देश की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाने के लिए परिवहन के पर्यावरण अनुकूल, तेज एवं ऊर्जा कुशल मोड प्रदान करने की दृष्टि से रेलवे विद्युतीकरण पर बहुत जोर दिया गया है।

पिछले सात वर्षों (2014-21) के दौरान 2007-14 की तुलना में पांच गुणा से अधिक विद्युतीकरण किया गया है। 2014 के बाद रिकॉर्ड 24,080 आरकेएम (मौजूदा ब्रॉड गेज मार्गों का 37 फीसदी) का विद्युतीकरण किया गया, जबकि 2007-14 के दौरान 4,337 आरकेएम (मौजूदा ब्रॉड गेज मार्गों का 7 फीसदी) का विद्युतीकरण किया गया था।

अब तक विद्युतीकृत 45,881 आरकेएम में से 34 फीसदी विद्युतीकरण का काम केवल पिछले तीन वर्षों में किया गया।

इसके अलावा भारतीय रेल ने पिछले सर्वश्रेष्ठ 42 की तुलना में 2020-21 के दौरान रिकॉर्ड 56 टीएसएस (ट्रैक्शन सब स्टेशन) बनाए हैं। कोविड महामारी के बावजूद इसमें 33 फीसदी का सुधार है। पिछले सात वर्षों के दौरान कुल 201 ट्रैक्शन सब स्टेशन बनाए गए हैं।

भारतीय रेल द्वारा जिन सेक्शनों को 2020-21 में विद्युतीकृत किया गया है, उनमें से कुछ प्रमुख सेक्शन निम्नलिखित हैं -

1. मुंबई-हावड़ा वाया जबलपुर
2. दिल्ली-दरभंगा-जयनगर
3. गोरखपुर-वाराणसी वाया औंड़िहार
4. जबलपुर-नैनपुर-गोंडिया-बल्लारशाह
5. चेन्नई-त्रिची
6. इंदौर-गुना-ग्वालियर-अमृतसर
7. दिल्ली-जयपुर-उदयपुर
8. नई दिल्ली-न्यू कूचबिहार-श्रीरामपुर असम वाया पटना और कटिहार
9. अजमेर-हावड़ा
10. मुंबई-मारवाड़
11. दिल्ली-मुरादाबाद-टनकपुर

भारतीय रेल ने दिसंबर, 2023 तक अपने मार्गों को पूरी तरह से विद्युतीकृत करने की योजना बनाई है। 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से अपने विद्युत भार को प्राप्त कर संपूर्ण रेल विद्युतीकरण "नेट जीरो" उत्सर्जन के लक्ष्य में योगदान देगा। ■

सुरक्षा को मजबूत करने के लिए भारतीय रेल ने 815 पुलों का थर्ड पार्टी ऑडिट पूरा किया

देश भर में भारतीय रेल की पटरियों पर 1,50,390 पुलों का विशाल नेटवर्क है। इसके अतिरिक्त, लोगों की सुविधा के लिए सड़कों पर पटरियों को पार करने के लिए 3,449 रोड ओवरब्रिज (आरओबी) प्रदान किए गए हैं। यात्री/पैदलयात्री क्रॉसिंग के लिए 01.04.2020 तक 3,771 एफओबी सार्वजनिक/रेल उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए रेलवे द्वारा उपलब्ध करवाए गए हैं।

भारतीय रेल निर्धारित अनुसूची के अनुरूप भारतीय रेल अधिकारियों द्वारा रेलवे पुलों/आरओबी/एफओबी के वार्षिक निरीक्षण और रखरखाव की एक अच्छी तरह स्थापित प्रणाली का अनुसरण करता है। वर्ष 2018 में मौजूदा बुनियादी ढांचे पर अधिक विश्वास और विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए पुल की स्थिति पर एक स्वतंत्र विशेषज्ञ विचार जानने के लिए 2018 में चिह्नित एवं महत्त्वपूर्ण पुलों/आरओबी/एफओबी का थर्ड पार्टी ऑडिट कराने का फैसला लिया गया। विशेषज्ञ एजेंसियों द्वारा थर्ड पार्टी निरीक्षण का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण घटकों की स्थिति पर पैनी नजर रखना है, जो संक्षरण संभावित क्षेत्र में प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो सकता है।

महत्त्वपूर्ण पुलों/आरओबी/एफओबी का थर्ड पार्टी ऑडिट विशेषज्ञ एजेंसियों, जैसे आईआईटी, एनआईटी, एसईआरसी आदि द्वारा किया जाता है। जोनल रेलवे को सलाह दी गई थी कि वह पुल के सभी पहलुओं (एनडीटी परीक्षण सहित ताकत का आकलन, वर्तमान में लोडिंग के लिए डिजाइन पर्याप्तता, भौतिक स्थिति आदि जरूरी माना गया है) की विधिवत जांच को लेकर राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों से इनकी एक बार थर्ड पार्टी टेक्निकल ऑडिट करवाएं।

पुलों की थर्ड पार्टी ऑडिट निम्नलिखित प्राथमिकता के अनुसार किया गया :

- सभी बड़े पुल, ओआरएन 1 रेटिंग्स के साथ रेलवे पुल, आरओबी एवं एफओबी।
- ओआरएन 2 रेटिंग्स के साथ रेलवे पुल और गति प्रतिबंधों के साथ पुल।
- 80 साल से अधिक पुराने सभी महत्त्वपूर्ण पुल।
- कोई अन्य पुल, जिसे रेलवे स्थिति के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण मानता है।

थर्ड पार्टी ऑडिट के प्रमुख लाभों का अनुभव मुंबई क्षेत्र में किया गया, जहां 49 आरओबी में जीर्ण-शीर्ण स्थितियां देखी गईं। इनमें से 43 आरओबी में जरूरी मरम्मत की गई और 6 आरओबी को बंद या ध्वस्त कर दिया गया या फिर उनके पुनर्निर्माण का काम चल रहा है।

इसके साथ ही 127 एफओबी में सभी जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखी गई। इनमें से 95 एफओबी में जरूरी मरम्मत की गई और प्रतिस्थापन के लिए 32 एफओबी को बंद या ध्वस्त किया गया। 20 एफओबी में पुनर्निर्माण का काम पूरा हो चुका है और 12 एफओबी के कार्य प्रगति पर हैं।

कुल चिह्नित 1,107 पुलों/आरओबी/एफओबी में से 815 पुलों/आरओबी/एफओबी के थर्ड पार्टी ऑडिट का काम पूरा कर लिया गया है और बाकियों के कार्य प्रगति पर हैं। संपूर्ण प्रणाली को पारदर्शी बनाने के लिए सभी आरओबी और एफओबी पर बोर्ड प्रदान किए गए हैं। रेलवे पुलों के संबंध में, उपयुक्त स्थानों पर स्थित स्टेशनों (बढ़ते किमी में अगले ब्लॉक सेक्शन के लिए) के मुख्य प्लेटफॉर्म पर बोर्ड प्रदान किए गए हैं।

उपयोगकर्ताओं के बीच पारदर्शिता बढ़ाने और रेलवे की बुनियादी ढांचे की विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए, आरओबी/एफओबी और स्टेशनों पर बोर्डों की तस्वीरें वेब आधारित भारतीय रेल पुल प्रबंधन प्रणाली (आईआरबीएमएस) पर अपलोड की गई हैं, जो रेल दृष्टि से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा बोर्ड की तस्वीरों को किसी भी व्यक्ति द्वारा www.raildrishti.in वेबसाइट पर मुख्य सामग्री → प्रदर्शन संकेतक → पुल निरीक्षण → निरीक्षण बोर्ड फोटोग्राफ, का अनुसरण करके देखा जा सकता है।

इन तस्वीरों को रेलवे के अधिकारियों द्वारा ईदृष्टि वेबसाइट www.edrishti.cris.org.in पर ऑपरेशन → पुल निरीक्षण → निरीक्षण बोर्ड फोटोग्राफ, का अनुसरण करके देखा जा सकता है। ■

भारतीय रेल ने रेलगाड़ियों और रेलवे परिसरों में महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाओं को रोकने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए

भारतीय रेल से प्रतिदिन 23 मिलियन करोड़ यात्री सफर करते हैं, जिनमें से 20 प्रतिशत अर्थात् 4.6 मिलियन महिलाएं हैं। महिला यात्रियों की सुरक्षा तथा रेलवे में महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाओं को रोकने के लिए भारतीय रेल ने एक केन्द्रित योजना के तौर पर निम्न कदम उठाए हैं। भारतीय रेल ने सभी क्षेत्रीय रेलवे और उत्पादन इकाइयों को दिशा-निर्देश जारी किए हैं, उनमें निम्नलिखित क्षेत्र शामिल हैं-

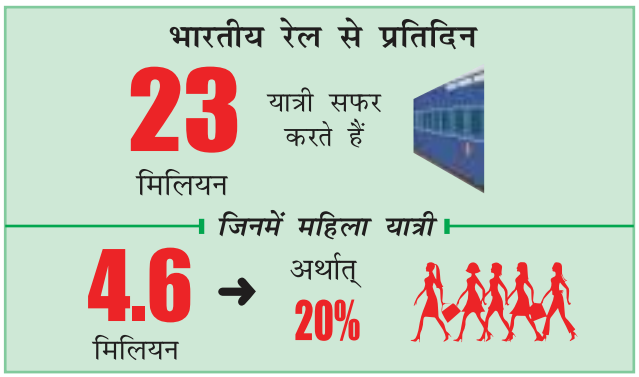

कार्ययोजना

कार्ययोजना को अल्पकालिक और दीर्घकालिक योजना के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। अल्पकालिक योजना को मौजूदा संसाधनों के साथ प्राथमिकता के आधार पर अविलंब तुरंत लागू किया जाना चाहिए। इस कार्य योजना में संदिग्धों पर नजर रखना और असुरक्षित क्षेत्रों के ड्यूटी अधिकारियों और स्टाफ कर्मचारियों द्वारा नियमित निरीक्षण करना शामिल है। हालांकि दीर्घकालिक योजना में आधारभूत संरचना क्षेत्र में सुधार, सीसीटीवी की स्थापना और लाइट मास्ट लगाना शामिल है, जिसमें काफी समय लग सकता है। इसे देखते हुए संबंधित प्राधिकारियों द्वारा इस काम के पूरा होने तक इसकी निगरानी की जानी चाहिए और उन अस्थायी कार्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जो स्थिति में सुधार करने की दिशा में प्रभावी हो सकते हैं। इस तरह के उपायों को न्यूनतम खर्च और उपलब्ध संसाधनों की मदद से लागू किया जा सकता है।

अपनाए जाने वाले निवारक उपाय

- चिन्हित रेलवे स्टेशनों में अपराध की दृष्टि से संवेदनशील सभी क्षेत्रों, घूमने-फिरने के स्थान, पार्किंग, फुट ओवर ब्रिज, संपर्क सड़कों, प्लेटफॉर्म के किनारे, रेलों की सफाई करने वाली लाइनों, डीईएमयू/ईएमयू, कार शेड्स, रख-रखाव डिपो इत्यादि के आस-पास प्रकाश की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- प्लेटफॉर्मों/यार्डों में काफी समय से खाली पड़े ढांचों और क्वार्टरों, निर्जन स्थानों पर खड़ी इमारतों, जिनकी निगरानी नहीं होती, उन्हें इंजीनियरिंग विभाग के परामर्श से तुरंत ढहाया जाना चाहिए। ऐसे ढांचों अथवा क्वार्टरों को जब तक गिराया नहीं जाता तब तक ड्यूटी स्टाफ ऐसे समय, खासकर रात और जब लोगों की उपस्थिति कम हो, उनकी नियमित तौर पर जांच की जानी चाहिए।
- अनाधिकृत प्रवेश और निकास मार्गों तथा इनमें लोगों की आवाजाही को बंद किया जाना चाहिए।
- रेलवे यार्डों, गड्ढों और स्टेशनों के समीप रेलवे क्षेत्रों में उगी अवांछित वनस्पति और घास की नियमित तौर पर कटाई कर इन्हें साफ रखना चाहिए ताकि ये अपराधियों के छिपने का स्थान न बन सकें। इस प्रकार के स्थान अपराध की दृष्टि से काफी संवदेनशील होते हैं।
- प्रतीक्षालय कक्षों की नियमित तौर पर जांच-पड़ताल की जानी चाहिए और पूरी जांच तथा सत्यापन के बाद ही यहां पर लोगों को प्रवेश करने की अनुमति दी जानी चाहिए, खास कर रात और ऐसे समय, जब यात्रियों की उपस्थिति कम हो। ऐसे कक्षों की ड्यूटी अधिकारियों द्वारा लगातार जांच की जानी चाहिए।
- यात्रियों से संबंधित सेवाओं में

इन दिशा-निर्देशों में कार्य योजना, निवारक उपाय, लोगों को अपराधों के प्रति जागरूक करना, असुरक्षित क्षेत्रों की पहचान कर उनकी निगरानी करना और यात्रियों के लिए सूचना तथा विशेष उपाय शामिल हैं।

इन दिशा-निर्देशों में क्षेत्रीय रेलवे और उत्पादन इकाइयों को सलाह दी गई हैं कि सक्रिय उपाय अपना कर वे स्थानीय परिस्थितियों व जरूरतों के अनुसार महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए अन्य प्रणालियों को लागू कर सकते हैं।

अनुबंध के आधार पर लगे कर्मचारियों का उचित पुलिस सत्यापन और पहचान-पत्र होना जरूरी है और इसे मानक संचालन प्रक्रिया तथा जीसीसी के अनुसार सुनिश्चित किया जाना चाहिए। रेलगाड़ियों और रेलवे परिसरों में बिना पहचान-पत्र के आने-जाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

- रेलवे यार्डों और कोच डिपो में किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति को प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और ऐसे स्थानों पर प्रवेश प्रणाली नियंत्रित की जानी चाहिए।
- खाली रेलगाड़ियों को सफाई लाइनों में भेजे जाने से पहले यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि सी एंड डब्ल्यू तथा इलेक्ट्रिकल स्टाफ ने इनकी पूरी जांच करने के बाद ही इन्हें बंद किया है। रेलवे यार्डों और उपयोग में नहीं लाई जाने वाली रेल लाइनों पर खड़े बेकार कोच (रेल डिब्बों) को पूरी तरह बंद रखा जाना और इनकी समय-समय पर जांच भी आवश्यक है।
- रेल डिब्बों के रख-रखाव से संबंधित गतिविधियों और उनकी साफ-सफाई के बाद वॉशिंग लाइनों में इनकी पूरी जांच करने के बाद इन्हें बंद कर इसी अवस्था में प्लेटफॉर्म पर लाया जाना चाहिए।
- कोच यार्डों और डिपो में उपयुक्त बुनियादी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- कोच डिपो और यार्डों में निगरानी प्रणाली भी लागू की जानी चाहिए।
- यात्री क्षेत्रों और इसके आसपास अवैध रूप से बनाए गए अतिक्रमणों को कानूनी प्रक्रिया का पालन करते हुए प्राथमिकता के आधार पर हटाया जाना चाहिए और रेलवे परिसरों में अनाधिकृत प्रवेश को बंद किया जाना चाहिए।
- भारतीय रेल अपने यात्रियों को निःशुल्क इंटरनेट सेवा प्रदान कर रही है। इस प्रकार की सेवाओं को प्रदान करने वाले ऑपरेटरों के साथ समन्वय कर यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि इस सेवा के माध्यम से पॉर्न साइटों को तो नहीं देखा जा रहा है।
- रेलवे परिसरों में अवांछित/अनाधिकृत व्यक्तियों को पकड़कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए और सभी रेलवे स्टेशनों, यार्डों और ऐसे अवांछित व असामाजिक तत्वों से मुक्त रखना चाहिए।
- रेलवे स्टेशनों और रेलगाड़ियों में शराब पीने वाले व्यक्तियों को पकड़ने और उनके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए विशेष अभियान चलाए जा सकते हैं।
- ऐसे अपराधों में लिप्त रेलवे स्टाफ के खिलाफ कड़े कदम उठाए जाने चाहिए।
- महिलाओं के खिलाफ अपराध वाले मामलों में जब तक कोई अंतिम निर्णय नहीं होता है तब तक ऐसे मामलों पर लगातार नजर बनाए रखना जरूरी है।

लोगों को अपराधों के प्रति जागरूक करना

- सभी रेलवे कर्मचारियों और संविदा स्टाफ को अपराधों के प्रति जागरूक करना, रोलिंग स्टाफ की जांच में लगे कर्मचारियों, कुलियों और फेरी वालों, विक्रेताओं को अपराध की किसी भी घटना की जानकारी बिना किसी देरी के पुलिस, आरपीएफ और स्टेशन मास्टर को देने के लिए जागरूक किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए गैर-सरकारी संगठनों की मदद भी ली जा सकती है।
- आमतौर पर यह देखा गया है कि महिलाओं के प्रति छेड़छाड़ के मामलों की अगर शिकायत न की जाए तो बाद में ऐसे मामलों और महिलाओं के प्रति अपराधों में काफी इजाफा हो जाता है। इस प्रकार के अपराधों को रोकने के उपायों के तहत जीआरपी/आरपीएफ अधिकारियों को 'महिलाओं के खिलाफ अपराध' की कोई भी शिकायत मिलने के तुरंत बाद इस पर आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए।
- रेलगाड़ियों में ड्यूटी पर जाने से पहले और ड्यूटी समाप्त करने के बाद सुरक्षा कार्यों में लगे कर्मचारियों की पोस्ट कमांडर/ड्यूटी ऑफिसर और शिफ्ट प्रभारी द्वारा नियमित ब्रीफिंग की जानी जरूरी है।
- सभी क्षेत्रीय रेलवे कार्यालय रेल यात्रियों को साफ-सफाई, महिलाओं का सम्मान करने, महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के कानूनी प्रावधानों और इन नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए दंड संबंधी प्रावधानों के बारे में जागरूक बनाने के लिए नुक्कड़ नाटकों की मदद ली जा सकती है और इसके लिए सांस्कृतिक मंडली का भी उपयोग किया जा सकता है।
- सभी विभागों में काम करने वाले रेलवे कर्मचारियों को महिलाओं एवं बच्चों के प्रति उनकी ड्यूटी तथा महिलाओं की सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में जागरूक किया जाना चाहिए। उन्हें मुश्किल या संकटों का सामना करने वाली महिलाओं और बच्चों की पहचान करने, उनकी मदद करने, देखभाल और सुरक्षा करने के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों/केन्द्रों में जहां रेलवे कर्मचारियों और आरपीएफ कर्मचारियों की शुरुआती/नियमित ट्रेनिंग होती है, उनमें विशेष जागरूकता कार्यक्रमों को शामिल किया जाना चाहिए।
- महिलाओं के प्रति अपराध और छेड़छाड़ की घटनाओं के बारे में सामने आकर उन्हें खुलकर बताने के लिए महिलाओं को जागरूक बनाने की दिशा में विशेष जागरूकता सत्रों का आयोजन किया जा सकता है।

चिन्हित असुरक्षित क्षेत्रों की निगरानी

- इस लिहाज से सीसीटीवी निगरानी प्रणाली का प्रभावी तरीके से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ऐसे कैमरे जिन क्षेत्रों में लगाए गए हैं, उनकी फुटेज की समय-समय पर जांच की जानी चाहिए। यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि रेलवे परिसर में आने-जाने वाले सभी लोग इन कैमरों के दायरों में हों।

- अपराधों की दृष्टि से असुरक्षित क्षेत्रों में सीसीटीवी निगरानी प्रणाली अनिवार्य रूप से लगाई जानी चाहिए। सीसीटीवी कैमरों की लोकेशन या इनमें कोई बदलाव लाने के दौरान ऐसे क्षेत्रों को हमेशा ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- प्लेटफॉर्म पर महिला डिब्बों की स्थिति को निर्धारित किया जाना चाहिए और प्लेटफॉर्म पर एक ऐसे बिंदु पर ये कैमरे विशेष रूप से लगाए जाने चाहिए ताकि ये डिब्बे उनके समुचित दायरों में आ सकें।
- सीसीटीवी की फुटेज से जुड़ी अन्य संबंधित जानकारियों की नियमित जांच अधिकारियों द्वारा की जानी चाहिए।
- बलात्कार और मानव शरीर (महिलाओं) से संबंधित अन्य अपराधों के लिए चिन्हित असुरक्षित क्षेत्रों की निगरानी में संबंधित आरपीएफ कार्यकारी स्टाफ के अलावा क्राइम इंटेलिजेंस ब्रांच और स्पेशल इंटेलिजेंस ब्रांच का उपयोग किया जाना चाहिए।
- किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले अपराधियों की निगरानी रखने के लिए 'यौन अपराधियों पर राष्ट्रीय डाटा बेस' का उपयोग किया जा सकता है।

रेलगाड़ियों में इस प्रकार के अपराधों की रोकथाम के लिए अपनाए जाने वाले विशेष उपाय

- रेलगाड़ियों में इस प्रकार के अपराधों की संभावनाओं को खत्म करने के प्रयासों के बारे में सुरक्षा कार्यों में लगे कर्मचारियों को इसके बारे में समुचित जानकारी प्रदान करना, खासकर रात के समय उन्हें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।
- शौचालय सबसे आम स्थान हैं, जहां अतीत में इस तरह की घटनाएं दर्ज की गई हैं और ऐसे में शौचालयों के पास लोगों के एकत्र होने पर रोक लगाई जानी जरूरी है।
- आमतौर पर कोच अटेंडेंट/एसी मैकेनिक रेल डिब्बों में प्रवेश और निकासी गेटों के समीप अपनी आवंटित सीटों पर रहते हैं, जहां से पूरे कोच में निगरानी करने में मदद मिल सकती है। पुलिस के एस्कॉर्ट दस्ते, रेलगाड़ियों के भीतर संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने, उनकी जानकारी देने तथा इस प्रकार के अपराधों को कम करने बारे में जानकारी देने के लिए ऐसे कर्मचारियों और रेलगाड़ियों में लगातार घूमने वाले पैंट्री कार स्टाफ को अपने भरोसे में ले सकते हैं।
- रेल में यात्रा करने वाली अकेली महिलाओं और छोटे बच्चों को लेकर चलने वाली महिला यात्रियों की सुरक्षा 'मेरी सहेली' पहल के तहत करने पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए।
- एस्कॉर्ट स्टाफ को यात्रियों, खासकर महिलाओं के साथ विनम्र व्यवहार करने के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए।

- रेलगाड़ियों के भीतर काम करने वाले सभी आउटसोर्स कर्मचारियों के पहचान पत्रों की जांच एवं उनकी क्रॉस चैकिंग ट्रेन कैप्टन/अधीक्षक के द्वारा की जानी चाहिए। पीसीएससी/एसआरडीसीसी को वाणिज्य, इलेक्ट्रिक, एसएनपी और मैकेनिकल विभाग के अपने समकक्षों के साथ बेहतर समन्वय सुनिश्चित करना चाहिए तथा इस बात को भी सुनिश्चित करना है कि बाहर से लिए गए सभी स्टाफ कर्मचारियों को उपयुक्त पुलिस जांच के बाद ही काम पर रखा जाए और उनके पास पहचानपत्र हों। इसके अलावा इन विभागों को क्रॉस चैकिंग भी सुनिश्चित करनी चाहिए।
- यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि डिब्बों में लगे सीसीटीवी कैमरे और आपात प्रतिक्रिया प्रणाली ठीक काम कर रही है और इनकी नियमित देखभाल और जांच भी हो रही है।
- आमतौर पर महिला यात्रियों के कोच ट्रेन गार्ड के समीप होते हैं और कई स्थानों पर ये प्लेटफॉर्म क्षेत्र से बाहर भी होते हैं। एस्कॉर्ट पार्टियों और स्टेशन आरपीएफ/जीआरपी स्टाफ को जिन स्टेशनों पर रेलगाड़ियां रुकती हैं वहां उनकी उपयुक्त जांच की जानी चाहिए।
- सुरक्षा के कार्य में लगे स्टाफ को इस बात को लेकर सावधान रहना चाहिए कि जब रेलगाड़ी स्टेशन की ओर आती है या स्टेशन को छोड़ती है तो उस वक्त उसकी रफ्तार कम होती है और ऐसे में अपराधी चलती हुई रेलगाड़ी से प्रायः कूद जाते हैं। उन्हें इस यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ट्रेनों से कूदने वाले व्यक्तियों को पकड़कर पूरी पूछताछ की जाए और कुछ भी गलत पाए जाने पर आवश्यक कार्रवाई की जाए।

यात्रियों के लिए सूचना/नोटिस

- ट्रेन की टिकटों के पिछले हिस्से पर हेल्पलाइन नम्बरों की पूरी जानकारी मुद्रित की जाती है और इसके अलावा रेलवे द्वारा दिए गए हेल्पलाइन नम्बरों का व्यापक रूप से प्रचार किया जाना चाहिए।
- लोगों को राष्ट्रीय स्तर पर आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली और अन्य महत्त्वपूर्ण फोरम तथा उस क्षेत्र में महिलाओं के खिलाफ विशेष रूप से अपराधों के बारे में जानकारी देने के लिए उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।
- लोगों को वन स्टॉप सेंटर के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए जो विशेष रूप से विभिन्न प्रकार की एकीकृत सेवाओं, जैसे चिकित्सा सहायता, पुलिस सहायता, कानूनी सलाह, अदालतों में मामलों के प्रबंधन, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक काउंसलिंग और हिंसा से प्रभावित महिलाओं को अस्थायी तौर पर आश्रय प्रदान करने के लिए ही बनाया गया है।
- यात्रियों को महिलाओं के खिलाफ अपराधों के बारे में जागरूक बनाने के लिए उचित विज्ञापनों को विभिन्न प्लेटफॉर्म, जैसे प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया आदि पर प्रकाशित किया जाना चाहिए।

भारतीय रेल की ओर से जारी किए गए दिशा-निर्देशों में सभी क्षेत्रीय रेलवे और उत्पादन इकाइयों को सलाह दी गई है कि ये दिशा-निर्देश केवल निर्देशात्मक हैं और विस्तृत नहीं हैं तथा क्षेत्रीय इकाइयां सक्रिय उपाय अपना कर स्थानीय परिस्थितियों और जरूरतों के अनुसार महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए अन्य प्रणालियों को लागू कर सकती हैं। ■

श्रमिक कल्याण पोर्टल : भारतीय रेल ने संविदा कर्मियों को शत-प्रतिशत भुगतान सुनिश्चित किया

भारतीय रेल के श्रमिकों का हित सुनिश्चित करने के लिए भारतीय रेल द्वारा श्रमिक कल्याण ई-एप्लीकेशन विकसित किया गया, जिसे 1 अक्टूबर, 2018 को लागू किया गया। ई-एप्लीकेशन न्यूनतम मजदूरी अधिनियम के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करता है और यह भी सुनिश्चित करता है कि इस ई-एप्लीकेशन पर भारतीय रेल में काम करने वाले संविदा कर्मियों को किए जाने वाले भुगतान का विवरण ठेकेदार नियमित रूप से अपलोड करें। यह प्रक्रिया संविदा कर्मियों को ठेकेदारों द्वारा किए जाने वाले भुगतान पर नजर रखने में भारतीय रेल की मदद करती है क्योंकि रेलवे ही प्राथमिक रोजगार प्रदाता है। 9 मार्च, 2021 तक ई-पोर्टल पर कुल 15,812 ठेकेदारों और 3,81,831 संविदा कर्मियों का पंजीकरण हो चुका है। इसके अलावा भारतीय रेल के अंतर्गत इस पोर्टल पर 48,312 लैटर ऑफ एक्सेप्टेंस के साथ-साथ कुल 6 करोड़ कार्य दिवसों और 3,495 करोड़ रुपये से अधिक की मजदूरी के भुगतान का भी पंजीकरण हुआ। भारतीय रेल के अंतर्गत काम करने वाली सभी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां इस एप्लिकेशन का उपयोग कर रही हैं।

इस पोर्टल पर भारतीय रेल की विभिन्न इकाइयों /डिवीजन, कार्यशालाओं/ पीयू/ पीएसयू से संबद्ध सभी ठेकेदारों को पंजीकृत किया जाना अनिवार्य है। रेलवे की विभिन्न इकाइयों द्वारा जारी किए गए वर्क ऑर्डर को भी इस पर दर्ज किया जाना अनिवार्य है। ठेकेदारों को उनके साथ काम करने वाले प्रत्येक संविदा कर्मियों का विवरण इस पोर्टल पर दर्ज कराना पड़ता है और उन्हें आवंटित किए गए काम तथा उस काम के बदले दिए जाने वाले पारिश्रमिक का विवरण भी नियमित आधार पर अपडेट करना आवश्यक होता है। इस पूरी प्रक्रिया में भारत सरकार के न्यूनतम मजदूरी के प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर जांच का भी प्रावधान है।

ठेकेदारों का बिल पास करने से पहले रेलवे के बिल पास करने वाले प्राधिकारी इस बात की भी जांच करते हैं कि ई-एप्लीकेशन पर ठेकेदार द्वारा उसके साथ जुड़े संविदा कर्मियों का मजदूरी से जुड़ा डाटा अपलोड किया गया है या नहीं। यह

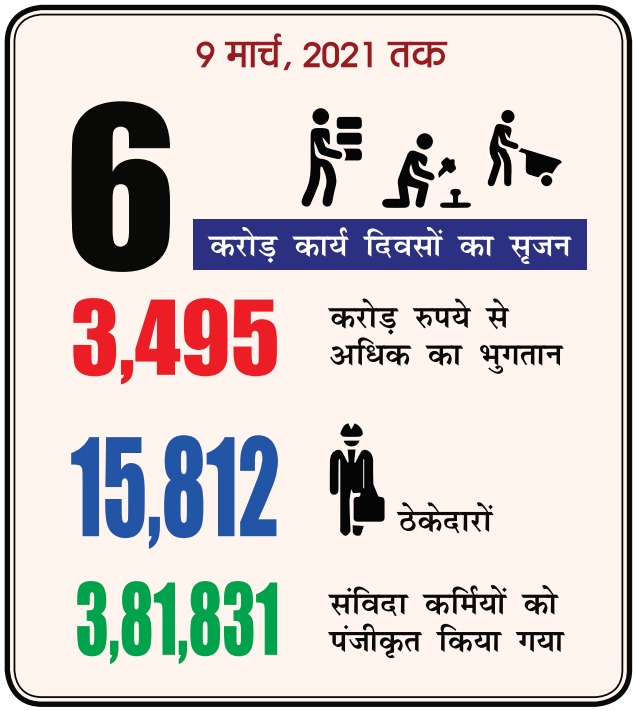

सुनिश्चित करने के लिए संविदा शर्तों में आवश्यक और निश्चित बदलाव किए गए हैं। ई-एप्लीकेशन पोर्टल पर संविदा कर्मियों का पहचान पत्र (आईडी) बनाए जाने का भी प्रावधान उपलब्ध है। साथ ही साथ, उन्हें अदा की जाने वाली मजदूरी और ईपीएफ तथा ईएसआईसी में किए गए योगदान संबंधी एसएमएस भी समय-समय पर उन्हें भेजा जाना अनिवार्य है।

पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए कुछ प्रासंगिक कार्यों का संक्षिप्त विवरण, वर्तमान में जारी कार्यों, ठेकेदारों के साथ संबद्ध संविदा कर्मियों और अलग-अलग रेलवे यूनिट के अंतर्गत काम कर रहे संविदा कर्मियों को किए गए सकल भुगतान का विवरण आम जनता के लिए भी पोर्टल पर उपलब्ध है। ■

भारतीय रेल

आपकी अपनी लोकप्रिय पत्रिका

अब राष्ट्रीय रेल संग्रहालय

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

आप यहां पर पत्रिका की सदस्यता एवं पत्रिका खरीद भी सकते हैं

रेलवे पार्सल प्रबंधन प्रणाली में पूर्ण बदलाव

- पार्सल प्रबंधन प्रणाली के कम्प्यूटरीकरण को 84 स्थानों से चरण-II में अतिरिक्त 143 स्थानों और चरण-III में 523 स्थानों तक बढ़ाया जा रहा है
- आम जनता और कारोबार को समान रूप से लाभ पहुंचाने की पहल
- पीएमएस में पार्सल स्थान के लिए 120 दिन की अग्रिम बुकिंग की व्यवस्था जोड़ी गई है
- पार्सल की ट्रैकिंग के लिए अब प्रत्येक खेप पर बारकोडिंग की व्यवस्था
- हाथ में लेने योग्य मोबाइल डिवाइस से बारकोड की स्कैनिंग के जरिए जीपीआरएस नेटवर्क ट्रांसमिशन के माध्यम से पैकेज की स्थिति का अपडेशन
- 2020-21 में पार्सल ट्रैफिक : टन भारिता (जनवरी तक) - 2,098 हजार टन; कोरोना वर्ष होने के बावजूद राजस्व 1,000 करोड़ रुपये से ज्यादा होने की संभावना

भारतीय रेल की पार्सल सेवाएं छोटी खेपों को स्टेशनों के विशाल नेटवर्क पर पहुंचाने के लिए तैयार हैं। छोटे व्यवसायी और व्यापारी (विशेष रूप से छोटे शहरों और कस्बों में) बड़े शहरों और उत्पादन केंद्रों से अपने माल इत्यादि को तेज, विश्वसनीय और सस्ते तरीके से अपने कारोबारी स्थान तक ढुलाई के लिए इन सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। आम आदमी घरेलू सामान, फर्नीचर, दोपहिया वाहनों इत्यादि की ढुलाई के लिए भी इन सेवाओं का उपयोग करते हैं, जिसके लिए पार्सल सेवाएं ढुलाई का सुविधाजनक साधन हैं।

पार्सल के लिए शुल्क का निर्धारण सिर्फ वजन और मात्रा के आधार पर होता है, न कि वस्तु के प्रकार के आधार पर।

पार्सल प्रबंधन प्रणाली का आधुनिकीकरण

पार्सल प्रबंधन प्रणाली के कम्प्यूटरीकरण को 84 स्थानों से चरण-II में अतिरिक्त 143 स्थानों और चरण-III में 523 स्थानों तक बढ़ाया जा रहा है। यह पार्सल प्रणाली में निम्नलिखित विशेषताओं को जोड़ेगा:

- www.parcel.indianrail.gov.in पर पार्सल प्रबंधन प्रणाली की सार्वजनिक वेबसाइट के लिए उन्नत उपयोगकर्ता अनुकूल इंटरफेस।
- पीएमएस में पार्सल जगह के लिए 120 दिनों की अग्रिम बुकिंग की सुविधा जोड़ी जा रही है।
- पीएमएस वेबसाइट पर ऑनलाइन ई-फॉरवर्डिंग नोट मॉड्यूल पर पार्सल के लिए खाली जगह की उपलब्धता दिखाना
- पंजीकृत ग्राहकों को अनुमानित किराए के साथ ऑनलाइन फॉरवर्डिंग नोट बनाने की सुविधा देना।
- कंप्यूटरीकृत काउंटर और खेप के वजन को ऑटोमेटिक रूप से दर्ज करने वाली इलेक्ट्रॉनिक कांटे के माध्यम से पार्सल कार्यालय में पार्सल/सामान की बुकिंग
- हाथ में लेने योग्य मोबाइल डिवाइस से बारकोड की स्कैनिंग के माध्यम से जीपीआरएस नेटवर्क ट्रांसमिशन के जरिए स्थिति के अपडेशन के लिए प्रत्येक खेप पर बारकोडिंग
- पार्सल बुकिंग से लेकर चढ़ाने, उतारने और पहुंचाने तक प्रत्येक चरण में ग्राहकों (प्रेषक और प्राप्त कर्ता) को बुकिंग के समय दिए गए पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एसएमएस
- पार्सल वेबसाइट www.parcel.indianrail.gov.in के माध्यम से पैकेज की ट्रैकिंग व एंड्रॉयड प्लेटफॉर्म पर ग्राहकों के लिए मोबाइल एप्लिकेशन व पार्सल ट्रैफिक से निपटने के लिए गैर-पीएमएस स्टेशनों से लोडिंग/अनलोडिंग और राजस्व आंकड़ों को भेजने की सुविधा के लिए एंड्रॉइड आधारित नया एप्लिकेशन।

- पंजीकृत समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए माल सूची की ऑनलाइन तैयारी के लिए एफएसएलए (फ्रेट सिस्टम लेजर अकाउंटिंग) मॉड्यूल।
- ऑनलाइन माल सूची की तैयारी और पट्टा धारकों के रजिस्ट्रेशन के लिए दीर्घकालिक/अल्पकालिक पार्सल पट्टा धारकों के लिए लीज मॉड्यूल
- बुकिंग के समय जीएसटीएन पोर्टल के जरिए प्रेषक के ऑनलाइन जीएसटीएन का सत्यापन।

रेलवे बोर्ड के निर्देशों के अनुसार, पार्सल प्रबंधन प्रणाली के भविष्य में आधुनिकीकरण/सुधार के लिए, मैसर्स क्यूसीआई को प्रणाली के अध्ययन और ग्राहक की प्रतिक्रिया (फीडबैक) और इस क्षेत्र में नए रुझानों के आधार पर आगे अन्य सुझावों को देने के लिए जोड़ा गया है। ■

संसद में भारतीय रेल

संसद सत्र के दौरान माननीय सांसदों द्वारा भारतीय रेल के सम्बन्ध में पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने निम्नलिखित जानकारियाँ दीं

(प्रस्तुत हैं संकलित अंश)

फर्स्ट एसी थ्री टियर इकोनॉमी कोच का निर्माण

रेलवे कोच फैक्ट्री/कपूरथला ने हाल ही में भारतीय रेल के पहले प्रोटोटाइप लिंके हॉफमैन बुश (एलएचबी) एसी थ्री-टियर इकोनॉमी क्लास कोच का निर्माण किया है। परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर लिए गए हैं। यह एलएचबी एसी थ्री-टियर कोच का एक नया संस्करण है जिसकी विशेषताएं निम्नानुसार हैं:-

- यात्री डेक पर कम फुटप्रिंट वाले बिजली के पैनल, जिससे यात्रियों को उपयोग के लिए फर्श पर अतिरिक्त स्थान मिलेगा।
- यात्री क्षमता में वृद्धि करके शायिकाओं की संख्या 83 करना।
- सुगम्य भारत अभियान के मानदंडों का अनुपालन करते हुए दिव्यांगजनों के लिए व्हीलचेयर की पहुंच वाले एक सक्षम प्रवेश द्वार और कंपार्टमेंट और व्हीलचेयर की पहुंच वाले दिव्यांगजन अनुकूल शौचालय की व्यवस्था।
- सभी शायिकाओं के लिए अलग-अलग वेंट्स प्रदान करके एसी डक्टिंग।
- बेहतर आराम, कम वजन और उच्च रखरखाव के लिए सीटों और शायिकाओं की मॉड्यूलर डिजाइन।
- अनुप्रस्थ और अनुदैर्ध्य बे में फोल्डेबल स्नैक टेबल, चोट मुक्त स्थान और पानी की बोतलों, मोबाइल फोन और पत्रिकाओं के लिए होल्डरों के रूप में बेहतर यात्री सुविधाएं।

- प्रत्येक शायिका के लिए अलग-अलग रीडिंग लाइट्स और मोबाइल चार्जिंग पॉइंट।
- बीच वाली और ऊपरी शायिकाओं तक पहुंचने के लिए श्रम दक्षता के हिसाब से सीढ़ी की बेहतर डिजाइन।
- बीच वाली और ऊपरी शायिकाओं में सिर के लिए अधिक जगह।
- भारतीय और पश्चिमी शैली के शौचालयों का बेहतर डिजाइन।
- सुंदरता की दृष्टि से मनोरम और एर्गोनोमिक प्रवेश द्वार।
- रोशनी वाले गलियारे मार्कर।
- प्रकाश वाले बर्थ संकेतक, नाइट लाइटें और प्रकाश वाले बर्थ नंबर।
- बेहतर अग्नि संरक्षा मानक।

इन सवारी डिब्बों में सुविधाएं न केवल मौजूदा एलएचबी एसी थ्री-टियर सवारी डिब्बों के समान हैं, बल्कि इनमें संवर्धन भी किया गया है। इन एलएचबी किफायती श्रेणी के डिब्बों को अनिवार्य मंजूरियों के बाद एलएचबी कोचों (राजधानी, शताब्दी, दुरंतो और जन शताब्दी आदि विशेष प्रकार की गाड़ियों को छोड़कर) के साथ चलने वाली सभी मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों में शामिल किया जाएगा। ■

रेल डिब्बों का उन्नयन

रेल यात्रा के दौरान यात्रियों को और अधिक सुविधा प्रदान करने के लिए भारतीय रेल द्वारा कई प्रयास किए गए हैं। इनमें से कुछ निम्नानुसार हैं:-

- नई दिल्ली-वाराणसी और नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा के बीच अत्याधुनिक वंदे भारत सेवाएं शुरू की गई हैं। इन गाड़ियों में तीव्र त्वरण, ऑन बोर्ड सूचनोरंजन एवं ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) आधारित यात्री सूचना प्रणाली, ऑटोमैटिक स्लाइडिंग दरवाजे, रिट्रेक्टेबल फुटस्टेप्स और जीरो डिस्चार्ज वैक्यूम बायो टॉयलेट आदि जैसी अत्याधुनिक विशेषताएं हैं।
- हमसफर, तेजस, अंत्योदय, उत्कृष्ट डबल डेकर वातानुकूलित यात्री (उदय), महामना जैसी विभिन्न प्रीमियम गाड़ी सेवओं और दीन दयालु और अनुभूति जैसे कोच, भारतीय रेल की विभिन्न गाड़ी सेवाओं में लगाए गए हैं, जिनमें उन्नत आंतरिक/बाहरी सज्जा और बेहतर यात्री सुविधाएं हैं।
- यात्रियों को और अधिक सुरक्षित और आरामदायक यात्रा प्रदान करने के लिए भारतीय रेल ने अन्य बातों के साथ-साथ, लिंके हॉफमैन बुश (एलएचबी) सवारी डिब्बों में वृद्धि करने तथा पारंपरिक इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) किस्म के सवारी डिब्बों के साथ चलने वाली गाड़ियों को एलएचबी सवारी डिब्बों के साथ चरणबद्ध तरीके से बदलने का फैसला किया है। एलएचबी सवारी डिब्बे पारंपरिक इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) किस्म के सवारी डिब्बों की तुलना में प्रौद्योगिकीय रूप से बेहतर हैं और इनमें बेहतर सवारी आराम, सुंदरता और संरक्षा विशेषताएं हैं। इस हेतु, भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयां 2018-19 के बाद से केवल एलएचबी सवारी डिब्बों का निर्माण कर रही हैं। फिलहाल, भारतीय रेल प्रणाली में 647 जोड़ी गाड़ियां एलएचबी सवारी डिब्बों के साथ परिचालित की जा रही हैं।
- चौड़ी खिड़कियों और पारदर्शी छत के जरिए विस्टाडोम सवारी डिब्बों से मनोरम दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है, इस प्रकार, इनमें यात्रा करने वाले यात्री उन स्थानों की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। हाल ही में एलएचबी प्लेटफॉर्म पर कई आधुनिक विशेषताओं/सुविधाओं वाले विस्टाडोम सवारी डिब्बों का विनिर्माण शुरू किया गया है।

आइसीएफ द्वारा निर्मित नए डिजाइन वाले विस्टाडोम टूरिस्ट कोच

- भारतीय रेल ने मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों में चल रहे आईसीएफ किस्म के सवारी डिब्बों की स्थिति में सुधार लाने के लिए अप्रैल 2018 में प्रोजेक्ट उत्कृष्ट भी शुरू किया था। प्रोजेक्ट उत्कृष्ट के तहत दिसंबर 2020 तक मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के 447 रेकों के उन्नयन का कार्य पूरा हो चुका है।
- प्रोजेक्ट स्वर्ण के तहत, राजधानी और शताब्दी गाड़ियों के 65 रेक को कई आयामों में अपग्रेड किया गया है, जिनमें कोच इंटीरियर, शौचालय, ऑन बोर्ड साफ-सफाई, कर्मचारी व्यवहार, लिनेन आदि शामिल हैं।

- स्मार्ट जन उद्घोषणा एवं यात्री सूचना प्रणाली, स्मार्ट एचवीएसी (तापन, वातायन एवं वातानुकूलन प्रणाली), स्मार्ट सुरक्षा एवं निगरानी प्रणाली आदि जैसी अत्याधुनिक विशेषताओं वाले 63 स्मार्ट सवारी डिब्बों का विनिर्माण किया गया है और उन्हें रेल सेवा में शामिल किया गया है।
- एंड-ऑन-जेनरेशन (ईओजी) गाड़ियों को हेड-ऑन-जेनरेशन (एचओजी) गाड़ियों में परिवर्तित किया गया है जिससे स्टेशनों और गाड़ियों में ध्वनि और वायु प्रदूषण में कमी आएगी। इससे जीवाश्म ईंधन की खपत में काफी कमी आने की उम्मीद है।
- सवारी डिब्बों में पारंपरिक लाइटिंग के स्थान पर आधुनिक और ऊर्जा कुशल प्रकाश उत्सर्जक डायोड (एलइडी) लाइटें लगाई जा रही हैं।
- भारतीय रेल द्वारा सवारी डिब्बों में मोबाइल चार्जिंग प्वाइंटों की संख्या भी बढ़ाई जा रही है।

एलएचबी एसी सामान्य द्वितीय श्रेणी के सवारी डिब्बों की डिजाइन को अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन/लखनऊ द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है तथा ले-आउट को अंतिम रूप दिए जाने के बाद सवारी डिब्बों की डिजाइन संबंधी विशेषताओं को अंतिम रूप दिया जाएगा। तत्पश्चात्, उत्पादन इकाइयों द्वारा सवारी डिब्बों का विनिर्माण किया जाएगा।

2,900 से अधिक सवारी डिब्बों में क्लोज सर्किट टेलीविजन (सीसीटीवी) कैमरे लगाए गए हैं।

ईएमयू और कोलकाता मेट्रो में जीपीएस आधारित यात्री घोषणा-सह-यात्री सूचना प्रणाली (पीएपीआईएस) पहले से ही संस्थापित की जा चुकी है। इस यात्री सूचना प्रणाली में यात्रियों को अगले आने वाले स्टेशन के बारे में स्पीकरों पर श्रव्य उद्घोषणा की जाती है और साथ ही उन्हें एलइडी स्क्रीन पर वीडियो डिस्प्ले के माध्यम से प्रदर्शित भी किया जाता है। इसके अलावा, नवनिर्मित ईएमयू/मेनलाइन इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट (मेमू) रेकों में ऐसी प्रौद्योगिकी/प्रणाली से पहले से लगी हुई है। पीएपीआईएस प्रणाली वंदे भारत, हमसफर, तेजस और उदय एक्सप्रेस जैसी प्रीमियम गाड़ियों में भी उपलब्ध है।

यात्रियों की संरक्षा व सुरक्षा को बढ़ाने के लिए, अधिकाधिक सवारी डिब्बों में सीसीटीवी व पीएपीआईएस का धीरे-धीरे विस्तार करने का भारतीय रेल का प्रयास है। योजना शीर्ष-21 के अंतर्गत 19,050 सवारी डिब्बों में पीएपीआईएस और 40,750 सवारी डिब्बों में सीसीटीवी के प्रावधान के लिए चल स्टॉक कार्यक्रम के तहत स्वीकृति भी उपलब्ध है। ■

कोविड के बावजूद रेलवे की उपलब्धियां

लॉकडाउन के बावजूद वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान भारतीय रेल की प्रमुख उपलब्धियां नीचे दी गई हैं:-

- कोविड-19 महामारी के कारण 25 मार्च, 2020 से राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लागू होने के कारण शुरू में रेल परियोजनाओं के निष्पादन में मंदी आई थी। बहरहाल, शुरुआती चरण के बाद लॉकडाउन प्रतिबंधों को धीरे-धीरे आसान बनाने के साथ निर्माण और अन्य अवसंरचना विकास गतिविधियों ने रफ्तार पकड़ी। इसके अलावा सावधानीपूर्वक योजना बनाने, परियोजनाओं को प्राथमिकता देने और निष्पादन पर केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने के कारण अवसंरचना कार्य अब जोरों पर हैं। कोविड महामारी के बावजूद, 2020-21 के दौरान (फरवरी, 2021 तक), भारतीय रेल ने 1,793 किमी लंबाई के नई लाइन, आमान परिवर्तन और दोहरीकरण कार्यों को चालू किया है। 3,003 मार्ग किमी का रेल विद्युतीकरण और 4,099 किमी के रेलपथ नवीकरण का कार्य किया गया। कुल 1,009 पुलों की मरम्मत/सुदृढ़ीकरण/पुनर्वास/पुनर्निर्माण किया गया है और 925 उपरि सड़क पुलों (आरओबी)/निचले सड़क पुलों (आरयूबी) का निर्माण किया गया था। चालू वर्ष के दौरान 10,980 करोड़ रुपये की लागत वाली कुल 1,095 किमी लंबाई की 21 नई लाइन/आमान परिवर्तन/दोहरीकरण परियोजनाएं शुरू की गई हैं। न्यू भाऊपुर-न्यू खुर्जा (लगभग 351 किमी) के बीच ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर खंड को 29.12.2020 और रेवाड़ी-न्यू किशनगढ़-मदार (लगभग 306 किमी) के बीच वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर खंड को 07.01.2021 को चालू कर दिया गया था।
- मार्च, 2020 में कोविड-19 के फैलने के बाद लॉकडाउन अवधि के दौरान, मांग में कमी और लदान व उतराई टर्मिनलों पर सड़क परिवहन और श्रम सेवाओं में व्यवधान के कारण माल यातायात प्रभावित हुआ था। बहरहाल, रेलवे आवश्यक परिवहन की आवाजाही को निर्बाध रूप से बनाए रखने में कामयाब रही और यह सुनिश्चित किया कि बिजली संयंत्रों और अन्य आवश्यक पण्यों, जैसे - खाद्यान्न, उर्वरक आदि के लिए कोयले की कोई कमी न हो। 'प्रधानमंत्री गरीब अन्न कल्याण योजना' (पीएमजीकेएवाई) के तहत राज्यों को खाद्यान्न आपूर्ति के लिए खाद्यान्न का रिकॉर्ड लदान किया गया। गृह मंत्रालय द्वारा लॉकडाउन में ढील देने के बाद रेलवे ने अधिक माल यातायात को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए और कोविड-19 महामारी से होने वाले व्यवधान के कारण अप्रैल 2020 से जुलाई 2020 तक की

पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का रिवाड़ी-मदार खंड

अवधि के दौरान पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 70 मिलियन टन माल ढुलाई की कमी को काफी हद तक पूरा किया गया है और भारतीय रेल ने वित्त वर्ष 2020-21 में 17.03.2021 तक 1,170.4 मिलियन टन लदान करके पिछले वर्ष के लदान को पीछे छोड़ दिया है, जो वित्त वर्ष 2019-20 में 17 मार्च, 2020 तक 1,167.6 मिलियन टन था।

- रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला ने हाल ही में संवर्धित सुविधाओं सहित प्रथम प्रोटोटाइप लिंके हॉफमैन बुश (एलएचबी) एसी थ्री-टियर इकोनॉमी श्रेणी का सवारी डिब्बे का निर्माण किया है। इसका परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। विस्टाडोम सवारी डिब्बों से चौड़ी बॉडी साइड खिड़कियों के साथ-साथ छत में पारदर्शी सेक्शन के द्वारा मनोरम दृश्य देखे जा सकते हैं और यात्री अपनी यात्रा के दौरान उन स्थानों की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। हाल ही में इंटीग्रल कोच फैक्टरी/चेन्नई द्वारा एलएचबी आधार पर कई आधुनिक सुविधाओं के साथ चार विस्टाडोम सवारी डिब्बों का निर्माण किया गया है।
- चालू वर्ष के दौरान सिग्नलिंग और दूरसंचार के क्षेत्र में अवसंरचनात्मक विकास में 303 रेलवे स्टेशनों में वाई-फाई सुविधा की व्यवस्था, रेलवे स्टेशनों पर उपयोगकर्ता हित में वाई-फाई सेवा में वृद्धि, सुरक्षा अवसंरचना को मजबूत बनाने के लिए 120 रेलवे स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाना, ओएफसी के 2,074 मार्ग किमी को चालू करने और क्वाड केबल के 1,556 मार्ग किमी शामिल हैं। रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के लिए सार्वजनिक उदघोषणा प्रणाली (103 स्टेशन), गाड़ी संकेतक बोर्ड (35 स्टेशन), डिजिटल घड़ी (600 स्टेशन), सवारी डिब्बा अनुदेश प्रणाली (32 स्टेशन) जैसी सुविधाओं को भी सुदृढ़ किया गया है।
- यार्डों में संरक्षा और संचालन बेहतर बनाने के लिए 48 यांत्रिक सिग्नलिंग संस्थापनाओं को हटा दिया गया है, 256 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (ईआई), 29 स्टेशनों पर

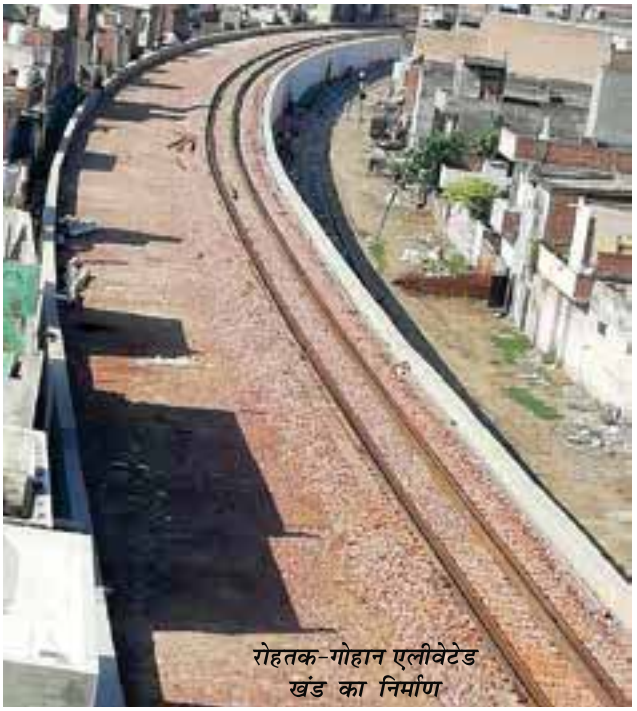

रोहतक-गोहान एलीवेटेड खंड का निर्माण

पैनल इंटरलॉकिंग (पीआई) और 9 स्टेशनों पर रूट रिले इंटरलॉकिंग (आरआरआई) चालू की गई है। समपारों पर संरक्षा बढ़ाने के लिए 244 समपार फाटकों पर सिग्नलों के साथ इंटरलॉकिंग की व्यवस्था की गई है, 41 ब्लॉक खंडों पर इंटरमीडिएट ब्लॉक सिग्नलिंग को चालू किया गया है, जिससे दो स्टेशनों के बीच खंड में दो गाड़ियों को सुरक्षित रूप से अनुमति देकर लाइन क्षमता में वृद्धि हुई है। लाइन क्षमता में सुधार करने के लिए 131 किमी ब्लॉक खंड में और सुरक्षा एवं स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग में सुधार करने के लिए 294 ब्लॉक खंडों के स्वचालित क्लियरेंस हेतु एक्सल काउंटर की व्यवस्था की गई है।

- उच्च शक्ति वाली पटरियों का विकास, स्वदेश में विकसित एटीपी (स्वचालित गाड़ी सुरक्षा) प्रणाली/टीसीएएस (गाड़ी टक्कर रोधी प्रणाली) चरण-II परियोजना का उन्नयन किया गया है जिसमें इंटरफेसिंग इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग, केंद्रीकृत यातायात नियंत्रण और अस्थायी गति प्रतिबंध (टीएसआर) का रिमोट अपडेशन आदि विशेषताएं मुहैया कराई गई हैं। इसके अलावा इस अवधि के दौरान उच्च हार्स पावर इंजनों के नए डिजाइन विकसित किए गए।
- संरक्षा और परिचालनिक कुशलता से संबंधित 350 से अधिक महत्त्वपूर्ण और लंबे समय से अपेक्षित मुख्य पुलों और रेलपथ के कार्य किए गए हैं और बैकलॉग को क्लीयर किया गया। इनमें से कुछ कार्य लंबे यातायात ब्लॉक की अनुपलब्धता और रेल परिचालन में बाधाएं उत्पन्न होने के कारण कई वर्षों से लंबित थे।
- सघन प्रयासों से माल गाड़ियों की औसत गति 2019-20 के दौरान 23.40 किमी/घंटा से बढ़ाकर चालू वर्ष (2020-21) में 42.50 किमी/घंटा कर दी गई है।

2020-21 के दौरान, विभिन्न शुरुआतों के कारण निम्नलिखित लाभ और दीर्घकालिक उपलब्धियों में प्रगति होने की संभावना है:-

- दोहरीकरण, नई लाइन और आमान परिवर्तन परियोजनाओं के पूरा होने से रेल नेटवर्क की क्षमता में वृद्धि होगी और परिचालन से संबंधित बाधाओं में कमी होगी तथा संरक्षा वृद्धि के साथ उच्च गति पर अधिक गाड़ियों को ले जाने में सक्षम होगी।
- रेलपथों के रेल विद्युतीकरण से भारी माल गाड़ियों की ढुलाई से परिचालन लागत में कमी आएगी, जिससे थ्रूपुट में वृद्धि होगी, कर्षण परिवर्तन के कारण रूकौनी को समाप्त करके खंडीय क्षमता में वृद्धि, विद्युत इंजनों के परिचालन और अनुरक्षण लागत में कमी, आयातित डीजल ईंधन पर निर्भरता कम हो जाएगी, जिससे बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होगी।
- स्वदेशी अत्यधिक मजबूत पटरियों के विकास से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा को बचाने में मदद मिलेगी और 'आत्मनिर्भर भारत' को साकार करने में मदद मिलेगी। इसी प्रकार, (गाड़ी टक्कर रोधी प्रणाली) चरण-2 यात्री गाड़ियों में सुरक्षा को बेहतर बनाने में मदद करेगा और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग और केंद्रीकृत यातायात नियंत्रण व्यवहार्यता के साथ इसकी इंटरफेसिंग टीएसआर (अस्थायी गति प्रतिबंध) के रियल टाइम रिमोट अपडेशन को सक्षम करेगा। इस अवधि के दौरान, विकसित उच्च अश्वशक्ति इंजन भारतीय रेल पर हैवी हॉल ऑपरेशन में सहायता करेंगे।
- समर्पित माल यातायात गलियारा (डीएफसी) अपने मार्गों से यात्री यातायात से माल ढुलाई को अलग करके अतिरिक्त क्षमता को सृजित करेंगे। डीएफसी से माल यातायात का तेजी से पारवहन होगा और लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी तथा सप्लाई चेन दक्षता में सुधार होगा।
- माल यातायात गाड़ियों की औसत गति का दोगुना होने का प्रभाव संपूर्ण प्रणाली की लाइन क्षमता को दोगुना करने के समतुल्य होता है। अधिक माल यातायात को ले जाने और अधिक गाड़ियों को शुरू करने के लिए रेलवे के पास अधिक मार्ग उपलब्ध होने के साथ-साथ अधिक मालडिब्बे भी उपलब्ध होंगे। इससे भविष्य में समय सारणी के अनुसार माल यातायात गाड़ियों को शुरू करने में सुविधा होगी। ■

रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण

भारतीय रेल में स्टेशनों का उन्नयन/आधुनिकीकरण/सौंदर्यीकरण एक सतत् प्रक्रिया है। स्टेशनों को 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत उन्नत/आधुनिक बनाया जाता है, जो स्टेशनों पर बेहतर संवर्धित यात्री सुविधाएं मुहैया कराने की चिह्नित आवश्यकता पर आधारित है। 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत, विकसित करने के लिए 1,253 स्टेशनों की पहचान की गई है, जिनमें से अब तक 1,201 स्टेशन विकसित किए जा चुके हैं। शेष 52 स्टेशनों को 2021-22 तक 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत विकसित किए जाने की योजना है।

उक्त योजना के तहत राज्य-वार चिन्हित और विकसित स्टेशनों की सूची निम्नानुसार है:-

क्र.सं.	राज्यों के नाम	चिह्नित स्टेशनों की संख्या	विकसित स्टेशनों की संख्या
1	आंध्र प्रदेश	46	46
2	असम	28	28
3	बिहार	59	55
4	चंडीगढ़	17	15
5	दिल्ली	4	4
6	गोवा	2	2
7	गुजरात	32	32
8	हरियाणा	16	15
9	हिमाचल प्रदेश	2	2
10	जम्मू एवं कश्मीर	5	5
11	झारखंड	30	29
12	कर्नाटक	44	42
13	केरल	77	69
14	मध्य प्रदेश	44	40
15	महाराष्ट्र	108	107
16	नागालैंड	1	1
17	ओडिशा	46	46
18	पुदुचेरी	2	2
19	पंजाब	32	30
20	राजस्थान	40	38
21	तमिलनाडु	49	48
22	तेलंगाना	25	25
23	त्रिपुरा	1	1
24	उत्तर प्रदेश	152	129
25	उत्तराखंड	8	7
26	पश्चिम बंगाल	383	383
	कुल	1,253	1,201

5,957 स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा

अभी तक देशभर में 5,957 रेलवे स्टेशनों पर वाई-फाई आधारित इंटरनेट सुविधा मुहैया कराई गई है। राज्य/संघ-शासित प्रदेश वार सूची संलग्न है। रेलटेल द्वारा दूरसंचार विभाग को प्रधानमंत्री वाणी आधारित कम्यूनिटी वाई-फाई सेवाएं मुहैया कराने हेतु ग्रामीण भारत में नेटवर्क और अपनी सहयोगी ब्रॉडबैंड सेवा मॉडल का लाभ प्रदान करने के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। रेलवे स्टेशनों, जहां ओएफसी लगाई गई है, पर रेलटेल की 10 गीगा बीट्स प्रति सेकेंड जैसी उच्च क्षमता सेवा मौजूद है। दूरसंचार विभाग द्वारा प्रस्ताव की शर्तों एवं निबंधनों की स्वीकृति पर कार्यान्वयन समय आधारित होगा। ■

स्टेशनों पर सेवाओं की संपरीक्षा

भारतीय रेल ग्राहकों की प्रतिक्रिया, परिचालनिक व्यवहार्यता और वित्तीय व्यवहार्यता के आधार पर सतत् आधार पर उचित योजना और प्रणालीगत सुधार के माध्यम से अपने असंख्य ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने का निरंतर प्रयास करती है। रेलवे अधिकारियों द्वारा विभिन्न स्तरों पर निरीक्षणों, यात्री सुविधा समिति, यात्री सेवा समिति आदि के माध्यम से स्टेशनों पर प्रदान की जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता और पर्याप्तता की नियमित रूप से जांच की जाती है। विभिन्न माध्यमों से ऑफलाइन/ऑनलाइन प्राप्त सुझावों/शिकायतों पर भी कार्रवाई की जाती है। प्रतिक्रिया प्राप्त करने और स्वच्छता मानकों में सुधार के लिए रेलवे स्टेशनों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा करने के लिए हाल के दिनों में प्रमुख स्टेशनों की स्वच्छता के संबंध में तृतीय पक्ष द्वारा लेखा परीक्षा व सर्वेक्षण भी किया गया है। गुणवत्ता, स्वच्छता आदि जैसे मापदंडों के संबंध में तृतीय पक्ष द्वारा स्टेशनों पर खानपान इकाइयों की लेखा परीक्षा की जाती है। वर्ष 2019-20 में इस तरह की लेखा परीक्षा के दौरान, सेवा में कमी की 21 घटनाएं देखी गईं। संबंधित ठेकेदारों को उचित रूप से चेतावनी दे दी गई है। ■

'आत्मनिर्भर भारत' के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अवसंरचना का विकास

भारतीय रेल 'आत्मनिर्भर भारत' के उद्देश्य को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय रेल द्वारा तैयार की जा रही राष्ट्रीय रेल योजना (एनआरपी) में अवसंरचना के विकास की कई पहलों की परिकल्पना की गई है। इस योजना का उद्देश्य मांग से अधिक अवसंरचना क्षमता को सृजित करने का है, जो बदले में वर्ष 2050 तक मांग की भावी वृद्धि को भी पूरा करेगी और माल ढुलाई में रेलवे की मॉडल हिस्सेदारी को 45% तक बढ़ाएगी और वह इसे बनाए रखेगी। योजना के मसौदे को सार्वजनिक डोमेन (भारतीय रेल की वेबसाइट) में अपलोड कर दिया गया है और इसे टिप्पणियों के लिए स्टेक होल्डरों को परिपत्रित किया जा रहा है।

'आत्मनिर्भर भारत' के उद्देश्य को हासिल करने के लिए भारतीय रेल द्वारा की गई अवसंरचना संबंधी प्रमुख पहलें निम्नानुसार हैं:

- क्षमता संवर्धन के लिए पहचानी गई 58 अति महत्त्वपूर्ण, 68 महत्त्वपूर्ण और 20 कोयला परियोजनाओं को पूरा करना।
- निष्पादित की जाने वाली सभी परियोजनाओं को पूरा करना।
- राष्ट्रीय रेल योजना के भाग के रूप में, वर्ष 2024 तक कतिपय महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं के कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए विजन 2024 शुरू किया गया है जैसेकि 100%

विद्युतीकरण, दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई मार्गों पर 160 किमी/घंटा तक गति का उन्नयन करना, अन्य सभी गोल्डन क्वारड्रिलेट्रल-गोल्डन डायगनल (जीक्यू-जीडी) मार्गों पर 130 किमी किमी/घंटा तक गति का उन्नयन करना और सभी जीक्यू-जीडी मार्ग पर सभी समपारों को समाप्त करना।

- चलती गाड़ियों की संरक्षा बढ़ने के लिए सिग्नल में स्वदेशी विकसित स्वचालित गाड़ी सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली का प्रसार करना।
- फोर्ज पहिया और एक्सल को छोड़ कर उत्पादन इकाइयों में निर्मित किए गए सभी सवारी डिब्बे पूर्ण रूप से स्वदेशी होते हैं। इन्हें भी स्वदेशी रूप से तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं।
- बिजली रेलइंजनों के 97% उपकरणों को स्वदेशी रूप से हासिल किया जाता है।

- अधिकतर रेलपथ मशीनें (लगभग 87%) भारत में तैयार होती हैं।
- 3 नए डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोरों की पहचान करना।
- 2030 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन के लिए प्रयास करना। ■

यात्रियों को दी जानेवाली खाद्य गुणवत्ता में सुधार

भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) द्वारा निर्धारित मानदंडों एवं मानकों के अनुसार यात्रियों को गुणवत्तापूर्ण एवं स्वच्छ भोजन मुहैया कराने हेतु भारतीय रेल का निरंतर प्रयास रहता है। भारतीय रेल ने यात्रियों को परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता और मानकों को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न उपाय किए हैं, जिनमें क्लोज्ड सर्किट टेलिविजन (सीसीटीवी) का उपयोग, रसोईघरों में कैमरे, पैकिंग की तिथि और समय सहित बनाए जाने वाले भोजन के सभी ब्यौरों को दर्शाने वाले भोजन पैकेटों पर क्यूआर कोड को प्रदर्शित करना, एफएसएसएआई द्वारा प्रमाणन प्राप्त करना, ग्राहक संतुष्टि सर्वेक्षण, स्थापनाओं की तृतीय पक्ष द्वारा लेखा परीक्षा तथा रेल अधिकारियों द्वारा नियमित एवं औचक निरीक्षण शामिल हैं। एकीकृत हेल्पलाइन नम्बर 139, रेल मदद, ट्विटर हैंडल और सीपीग्राम्स के माध्यम से यात्रियों की शिकायतों के निवारण की मजबूत प्रणाली भी मौजूद है।

इस समय भारतीय रेल स्पेशल गाड़ियां चलाती है, जिनमें केवल 'रेडी टू ईट' (आरटीई) भोजन मुहैया कराया जाता है जो कि स्वच्छ होता है और एफएसएसएआई के मानकों के अधीन होता है। इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आईआरसीटीसी) ने स्पेशल गाड़ियों में पैंट्री कार अथवा ट्रेन साइड वेंडिंग के माध्यम से खानपान सेवाएं मुहैया कराने हेतु निजी ठेकेदारों को नियुक्त किया है। ई-कैटरिंग सुविधाओं के प्रावधान के लिए प्रतिष्ठित सेवा प्रदाताओं को भी आईआरसीटीसी द्वारा सूचीबद्ध किया गया है। भारतीय रेल द्वारा भोजन की गुणवत्ता और रेल नीर के अलावा बोतलबंद पीने के पानी की आपूर्ति के संबंध में प्राप्त शिकायतों और उनके विरुद्ध की गई कार्रवाई का ब्यौरा परिशिष्ट के रूप में संलग्न है।

परिशिष्ट

01-04-2020 से 28-02-2021 की अवधि के दौरान भारतीय रेल द्वारा भोजन की गुणवत्ता और रेल नीर के अलावा बोतलबंद पीने के पानी की आपूर्ति के संबंध में प्राप्त शिकायतों और उनके विरुद्ध की गई कार्रवाई का ब्यौरा इस प्रकार है :

शीर्ष	शिकायतों की कुल सं.	की गई कार्रवाई								
		जुर्माना लगाया गया		चेतावनी दी गई	सेवा समाप्ति	उपयुक्त रूप से सलाह दी गई	प्रमाणित नहीं हुए	अनुशासन एवं अपील नियमों के तहत कार्रवाई	अन्य	कुल
		मामलों की सं.	लगाए गए जुर्माने की राशि (रु.)							
भोजन की गुणवत्ता	236	42	5,48,300	76	1	73	27	0	17	236
रेल नीर के अलावा बोतलबंद पीने का पानी	42	17	1,49,000	7	0	8	6	0	4	42
कुल	278	59	6,97,300	83	1	81	33	0	21	278

किसान रेल योजना

किसान रेल परियोजना के अंतर्गत रेलवे निम्नलिखित मार्गों पर किसान रेल सेवाएं परिचालित कर रही है:

- देवलाली/संगोला (महाराष्ट्र) से दानापुर/मुजफ्फरपुर (बिहार)
- अनंतपुर (आंध्र प्रदेश) से आदर्श नगर (दिल्ली)
- यशंवतपुर (कर्नाटक) से हजरत निजामुद्दीन (दिल्ली)
- वारूद/नागपुर (महाराष्ट्र) से आदर्श नगर (दिल्ली)
- छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश) से हावड़ा (पश्चिम बंगाल)
- संगोला (महाराष्ट्र) से हावड़ा (पश्चिम बंगाल)
- संगोला (महाराष्ट्र) से शालीमार (पश्चिम बंगाल)
- इंदौर (मध्य प्रदेश)से न्यू गुवाहाटी (असम)
- रतलाम (मध्य प्रदेश) से न्यू गुवाहटी (असम)
- इंदौर (मध्य प्रदेश) से अगरतला (त्रिपुरा)
- जालंधर (पंजाब) से जिरीबाम (त्रिपुरा)
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से न्यू गुवाहाटी (असम)
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से चितपुर (पश्चिम बंगाल)
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से न्यू जलपाईगुड़ी (असम)
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से नौगछिया (बिहार)
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से फतुआ (बिहार)
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से बाईहाटा (असम); और
- नागरसोल (महाराष्ट्र) से मालदा टाउन (पश्चिम बंगाल)

अभी तक कोई भी किसान रेल को पीपीपी व्यवस्था के जरिए शुरू नहीं किया गया है।

7 अगस्त, 2020 से पहली किसान रेल सेवा शुरू होने के बाद से 12 मार्च, 2021 तक 43 मार्गों पर लगभग 373 किसान रेल सेवाएं चलाई गई हैं, जिनमें लगभग 1.2 लाख टन पण्यों का परिवहन किया गया है, जिसमें फल और सब्जियों सहित लगभग पचास हजार टन नश्यवान वस्तु का परिवहन किया गया है।

सब्जियों, फलों और अन्य नश्यवान वस्तुओं के संचलन के लिए संभावित सर्किटों को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और राज्य सरकारों के कृषि/पशु पालन/मत्स्य विभागों के साथ विचार-विमर्श करके चिन्हित किया जा रहा है। इन मदों की मौसमी उपलब्धता के आधर पर इनका आकलन किया जा रहा है, ताकि कुशलता और कम लागत प्राप्त की जा सके। किसान रेल गाड़ियों के जरिए बुक किए गए पण्यों को पार्सल दर के 'पी'-स्केलपर प्रभारित किया जा रहा है।

अभी तक इस उद्देश्य के लिए कोई भी रीफर रेल कंटेनर अथवा रेफ्रिजरेटेड पार्सल वैन की खरीद नहीं की गई है। बहरहाल, तापमान नियंत्रक नाश्यवान कार्गो केंद्रों को नासिक, न्यू आजादपुर,राजा का तलाब/वाराणसी,गाजीपुर और फतुआ पर स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त, कोल्ड स्टोरेज रीफर पार्क को इनलैंड कंटेनर डिपो, दादरी में विकसित किया गया है और एक कोल्ड स्टोरेज सुविधा को राय, सोनीपत में स्थापित किया गया है।

फूड चेन सप्लाई को बढ़ाने के संबंध में रेलवे ने अगले आदेशों तक खाद्यान्नों पर लागू व्यस्त अवधि अधिशुल्क को वापस ले लिया है। इसके अलावा, खाद्यान्नों के मालभाड़े को 1 अप्रैल, 2015 से स्थिर रखा गया है। इन उपायों के परिणामस्वरूप खाद्यान्नों का लदान 2019- 20 में अप्रैल से दिसम्बर के दौरान 27.69 मिलियन टन से बढ़कर 2020-21 की तदनुरूपी अवधि में 50.47 टन हो गया है। खाद्यान्नों के पारवहन के लिए दी गई रेक आवंटन में प्राथमिकता को 'डी' से 'बी' कोटि में भी अपग्रेड किया गया है, ताकि रेकों की समय पर आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। ■

रेलवे के लिए पूंजीगत व्यय में वृद्धि

भारतीय रेल द्वारा पूंजीगत व्यय (केपेक्स) में वृद्धि, प्रौद्योगिकी की शुरुआत, हितधारकों के साथ भागीदारी, परियोजनाओं की प्राथमिकीकरण, समयबद्ध निष्पादन, नवोन्मेषी वित्तपोषण और परिणाम आधारित कार्रवाई के माध्यम से अवसंरचना विकसित करने, प्रणाली के आधुनिकीकरण और परिचालनिक कुशलता में सुधार करने हेतु कई कदम उठाए गए हैं। मुख्य पहलकदमियां निम्नानुसार हैं:-

- औसत वार्षिक पूंजीगत व्यय को वर्ष 2009-14 में 45,974 करोड़ रु. से दोगुना करके वर्ष 2014-19 में 99,512 करोड़ रु. कर दिया गया है। बजट अनुमान पूंजीगत व्यय में यह बढ़कर 2.15 लाख करोड़ रु. हो गया।
- परियोजनाओं में तेजी लाने के लिए विभिन्न उपाय किए गए हैं। थ्रूपुट संवर्धन कार्यों हेतु बजटेतर संसाधनों के द्वारा निश्चित वित्तपोषण का प्रबंध किया गया है। परियोजना के चालू किए जाने की गति बढ़ाने के लिए उचित परियोजना तैयारी, अग्रिम भूमि अधिग्रहण, ईपीसी अनुबंध, निर्माण में मशीनीकरण और गहन परियोजना निगरानी पर बल दिया गया है।
- नई लाइनों के निर्माण, दोहरीकरण और आमान परिवर्तन की गति वर्ष 2009-14 में 1,520 किमी प्रति वर्ष में 70% की वृद्धि के साथ वर्ष 2014-20 में 2,625 किमी कर दी गई है।
- रेल विद्युतीकरण की गति को वर्ष 2009-14 में 608 किमी प्रति वर्ष में 4.5 गुणा वृद्धि के साथ वर्ष 2014-20 में 2,737 किमी कर दी गई है। दिसम्बर, 2023 तक बड़ी आमान लाइन के 100% विद्युतीकरण का लक्ष्य है।
- वर्ष 2020-21 में मालगाड़ियों की गति में पिछले वर्षों की 23 किमी प्र.घं. से दुगुना करके वर्ष 2020-21 में 46 किमी प्र.घं. कर दी गई है।
- बड़ी आमान लाइन पर बिना चौकीदार वाले सभी समपारों को जनवरी 2019 में समाप्त कर दिया गया था।
- पूर्वी और पश्चिमी समर्पित माल गलियारों (डीएफसी) के 657 किमी को वर्ष 2020-21 में चालू कर दिया गया है। डीएफसी के कुल 2,843 किमी को जून 2022 तक चालू किया जाना है।
- सुरक्षित एलएचबी सवारी डिब्बों के वार्षिक उत्पादन में 10 गुणा से अधिक की वृद्धि के साथ 2014-15 में 555 से बढ़ा कर 2019-20 में 6,277 कर दी गई है। आईसीएफ सवारी डिब्बों का उत्पादन अप्रैल 2018 से बंद कर दिया गया है।
- रेल इंजनों के वार्षिक उत्पादन में तीन गुणा वृद्धि के साथ 2014-15 में 250 से बढ़ाकर 2019-20 में 784 कर दी गई है।

- वंदे भारत एक्सप्रेस, आधुनिक यात्री सेवाओं के साथ सेमी हाई स्पीड नई दिल्ली और वाराणसी के बीच तथा नई दिल्ली और श्री माता वैष्णोंदेवी स्टेशन के बीच शुरू की गई है।
- स्वदेशी रूप से विनिर्मित 12,000 एचपी विद्युत रेलइंजन को माल यातायात संचलन के लिए शुरू किया गया है।
- दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई को 160 किमी प्रघं तक अपग्रेडेशन शुरू किया गया है।
- अन्य सभी स्वर्णिम चतुर्भुज-स्वर्णिम विकर्ण (जीक्यू/जीडी) मार्गों पर 130 किमी प्रघं तक गति अपग्रेडेशन शुरू की गई है।
- सिक्किम को छोड़कर सभी पूर्वोत्तर राज्य रेल नेटवर्क के साथ जुड़े हुए हैं और वहां कार्य प्रगति कर रहे हैं।
- गाड़ी की रियल टाइम ट्रैकिंग के लिए 2,700 विद्युत रेलइंजनों में रियल टाइम सूचना प्रणाली (आरटीआईएस) मुहैया कराई गई है।
- मानवीय भूल के कारण दुर्घटनाओं को कम करने के लिए स्वदेशी रूप से विकसित गाड़ी टक्करोधी प्रणाली (टीसीएएस) शुरू की गई है।
- 3 नए समर्पित माल यातायात गलियारा अर्थात् खड़गपुर से विजयवाड़ा तक पूर्व तट गलियारा, भुसावल से खड़गपुर से दानकुनी तक पूर्व-पश्चिम गलियारा और इटारसी से विजयवाड़ा तक उत्तर-दक्षिण गलियारा चिह्नित किया गया है।
- मालभाड़ा परिवहन में भारतीय रेल की मॉडल हिस्सेदारी को बढ़ाने के लिए 'विजन 2024' दस्तावेज को 2024 तक अवसंरचना विकास के लिए तैयार किया गया है। दोहरीकरण/मल्टीट्रैकिंग जैसे क्षमता संवर्धन कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए क्रिटिकल और सुपर क्रिटिकल परियोजनाओं में प्राथमिकता दी गई है।
- 2050 तक यातायात की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 2030 तक अवसंरचना विकास के दृष्टिगत राष्ट्रीय रेल योजना (एनआरपी) 2030 को विकसित किया गया है और माल यातायात में रेल की मॉडल हिस्सेदारी को 45% तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। ■

पर्वतीय क्षेत्रों में रेलवे की चालू परियोजनाएं

रेल परियोजनाओं को क्षेत्रीय रेलवे-वार स्वीकृत किया जाता है न कि संभाग-वार/राज्य-वार, क्योंकि भारतीय रेल का नेटवर्क विभिन्न राज्यों की सीमाओं के बाहर फैला हुआ है। रेल परियोजनाओं को लाभकारिता, अंतिम स्थान संपर्कता, छूटे हुए संपर्क और वैकल्पिक मार्गों, संकुलित/संतृप्त लाइनों के संवर्धन, सामाजिक-आर्थिक तथ्यों आदि के आधार पर स्वीकृत/शुरू किया जाता है जो चालू परियोजनाओं के थ्रोफॉरवर्ड और निधि की समग्र उपलब्धता पर निर्भर करता है। बहरहाल, 1 अप्रैल, 2020 तक, असम और पूर्वोत्तर क्षेत्र में पूरी तरह से/आंशिक रूप से पड़ने वाली 2,008 किमी लंबाई की 75,795 करोड़ रु. की लागत वाली 19 परियोजनाएं (13 नई लाइनें और 6 दोहरीकरण) योजना/अनुमोदन/निष्पादन के विभिन्न चरणों में हैं। इनमें शामिल हैं:

- 1,178 किमी कुल लंबाई की 13 नई लाइन परियोजनाएं जिनकी लागत 57,774 करोड़ रु. है, जिनमें से 253 किमी लंबाई को चालू कर दिया गया है और मार्च, 2020 तक 20,157 करोड़ रु. का खर्च किया गया है।
- 830 किमी कुल लंबाई की 06 दोहरीकरण परियोजनाएं, जिनकी लागत 18,021 करोड़ रु. है, जिनमें से 9 किमी दोहरीकरण को चालू कर दिया गया है और मार्च 2020 तक 1,861 करोड़ रु. का व्यय किया गया है।

भारतीय रेल पूर्वोत्तर सीमा पर्वतीय क्षेत्र में रेल अवसंरचना में तेजी लाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

उत्तराखंड राज्य में पूरी तरह से/आंशिक रूप से पड़ने वाली 23 किमी कुल लंबाई और 18,901 करोड़ रु. की लागत वाली 04 रेल परियोजनाएं (03 नई लाइनें और 01 दोहरीकरण) योजना/अनुमोदन/निष्पादन के विभिन्न चरणों में हैं। इनमें शामिल हैं:

- 216 किमी कुल लंबाई और 18,554 करोड़ रु. की लागत वाली 03 नई लाइन परियोजनाएं, जिनमें से 6 किमी लंबाई को चालू कर दिया गया है और मार्च, 2020 तक 2,275 करोड़ रु. का खर्च किया गया है।
- 27 किमी लंबाई और 347 करोड़ रु. की लागत वाली 01 दोहरीकरण परियोजना को हाल ही में जनवरी, 2021 में चालू किया गया है।

फिलहाल लद्दाख में पूरी तरह से/आंशिक रूप से पड़ने वाली कोई रेल परियोजना चालू नहीं है।

किसी रेल परियोजना का पूरा होना राज्य सरकार द्वारा शीघ्र भूमि अधिग्रहण, वन विभाग के प्राधिकारियों द्वारा वन संबंधी मंजूरी, बाधक जनोपयोगी सेवाओं (भूमिगत और भूमि के ऊपर दोनों) की शिफ्टिंग, विभिन्न प्राधिकरणों से सांविधिक स्वीकृतियां, क्षेत्र की भौगोलिक और स्थलाकृतिक स्थिति, परियोजना साइट के क्षेत्र में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति, जलवायु परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए परियोजना विशेष की साइट के लिए उस वर्ष में कार्य के महीनों की संख्या आदि जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। ये सभी कारक परियोजना दर परियोजना और स्थान दर स्थान भिन्न होते हैं, जो परियोजना के समापन समय और लागत को प्रभावित करते हैं, जिनका अंतिम निर्धारण समापन चरण में किया जाता है। इसलिए इस समय परियोजनाओं के समापन के लिए कोई निश्चित समय-सीमा नहीं दी जा सकती; तथापि परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने के लिए हरसंभव प्रयास किया जा रहा है।

निधियों का आवंटन राज्य-वार नहीं किया जाता है। बहरहाल, परियोजनाओं का जोन-वार विवरण जिसमें लागत, व्यय तथा परिव्यय शामिल है, को भारतीय रेल की वेबसाइट अर्थात www.indianrailways.gov.in>Ministry of Railways>Railway Board> About Indian Railways>Railway Board Directorates> Finance (Budget)>Railway-wise Works Machinery - Rolling Stock Programme पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जाता है। ■

रेलवे पर धरोहर संरक्षण

धरोहर संरक्षण के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं जिनमें भाप इंजन का अनुरक्षण, हिल रेलवे का रखरखाव, भाप इंजन पर्यटन को बढ़ावा देना, रेलवे संग्रहालयों को सुदृढ़ करना, इमारतों, कलाकृतियों का संरक्षण, डिजिटलीकरण और रेलवे धरोहर का ऑनलाइन प्रसार आदि शामिल है। भारतीय रेल में 21 रेल संग्रहालय, 16 धरोहर दीर्घाएं और 9 धरोहर पार्क हैं। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (डीचआर), नीलगिरि माउंटेन रेलवे (एनआईवीर), कालका शिमला रेलवे (केएसआर), माथेरान लाइट रेलवे (एमएलआर) और कांगडा वैली रेलवे (केवीआर) नामक पांच हिल रेलवे हैं। इसमें से तीन हिल रेलवे यथा डीएचआर, केएसआर और एनएमआर को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। मौद्रीकरण के लिए चार हिल रेलवे अर्थात् डीएचआर, केएसआर, एनएमआर और एमएलआर की पहचान की गई है। चूंकि इस स्तर पर आउटसोर्सिंग नहीं की गई है, इसलिए, ब्यौरे उपलब्ध नहीं हैं। ■

राष्ट्रीय रेल योजनाओं की अद्यतन स्थिति

भारतीय रेल ने भारत के लिए राष्ट्रीय रेल योजना-2030 तैयार की है। 2030 तक 'भविष्य की तैयारी' रेलवे प्रणाली सृजित करने की योजना है। राष्ट्रीय रेल योजना का लक्ष्य माल ढुलाई में रेलवे की निश्चित हिस्सेदारी को बढ़ाने के लिए परिचालनिक क्षमताओं और वाणिज्यिक नीतिगत पहलों दोनों के आधार पर रणनीतियां तैयार करना है। इस योजना का उद्देश्य मांग से पहले क्षमता का सृजन करना है, जिसके परिणामस्वरूप 2050 तक भविष्य की मांग को पूरा भी किया जा सकेगा और माल यातायात में रेलवे की निश्चित हिस्सेदारी 45% तक बढ़ेगी और इसे बनाए रखना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) सहित सभी संभव वित्तीय साधनों पर विचार किया जा रहा है।

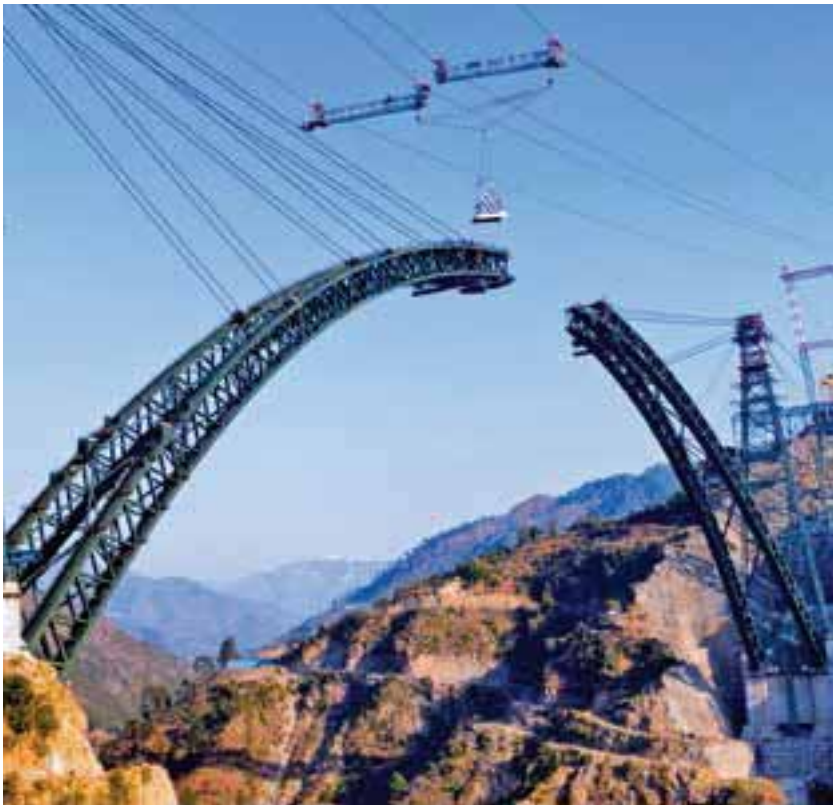

राष्ट्रीय रेल योजना के प्रमुख उद्देश्य हैं:-

- माल ढुलाई में रेलवे की निश्चित हिस्सेदारी को 45% तक बढ़ाने के लिए परिचालनिक क्षमताओं और वाणिज्यिक नीतिगत पहलों, दोनों के आधार पर रणनीतियां तैयार करना।
- माल गाड़ियों की औसत गति को बढ़ाकर 50 किमी प्रति घंटा करने से माल ढुलाई के पारगमन समय को काफी कम करना।
- राष्ट्रीय रेल योजना में, 2024 तक 100% विद्युतीकरण, भीड़भाड़ वाले मार्गों को मल्टी ट्रैक करना, दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई मार्गों पर 160 किमी प्रति घंटे तक गति का उन्नयन, अन्य सभी स्वर्णिम चतुर्भुज-स्वर्णिम विकर्ण (जीक्यू/जीडी) मार्गों पर 130 किमी प्रति घंटे तक गति का उन्नयन और सभी जीक्यू/जीडी मार्ग पर सभी समपारों को समाप्त करना जैसी कुछ महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं के त्वरित कार्यान्वयन के लिए 'विजन 2024' शुरू किया गया है।
- नए डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की पहचान करना।
- नए हाई स्पीड रेल कॉरिडोर की पहचान करना।
- यात्री यातायात के लिए चल स्टॉक की आवश्यकता के साथ-साथ माल ढुलाई के लिए माल डिब्बों की आवश्यकता का आकलन करना।
- 100% विद्युतीकरण (हरित ऊर्जा) और माल ढुलाई में निश्चित हिस्सेदारी को बढ़ाने के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इंजनों की आवश्यकता का आकलन करना।
- पूंजी में कुल निवेश का आकलन करना जो आवधिक विवरण के साथ अपेक्षित होगा।
- चल स्टॉक के संचालन और स्वामित्व, माल ढुलाई और यात्री टर्मिनलों के विकास, रेलपथ अवसंरचना के विकास/संचालन आदि जैसे क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की निरंतर भागीदारी।

योजना के मसौदे को सार्वजनिक रूप से (भारतीय रेल की वेबसाइट) रखा गया है और इसे रायशुमारी के लिए हितधारकों के बीच भी परिपत्रित किया जा रहा है।

हितधारकों से टिप्पणियां/राय प्राप्त होने के बाद राष्ट्रीय रेल योजना को अपने अंतिम रूप में जारी किया जाएगा, जिसमें विभिन्न चरणों में चल रही वे परियोजनाएं शामिल होंगी, जिन्हें 2030 तक निष्पादित किया जाएगा। प्रत्येक परियोजना के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जाएगी और मंजूरी के लिए कार्रवाई की जाएगी। एक बार मंजूरी मिलने के बाद वर्ष दर वर्ष आधार पर निधि की आवश्यकता का आकलन किया जाएगा और वार्षिक पूंजीगत व्यय में निधि का निर्धारित किया जाएगा।

राष्ट्रीय रेल योजना पूरे भारतीय रेल नेटवर्क के लिए है और न केवल मौजूदा रेल नेटवर्क से जुड़े जिलों के लिए, बल्कि रेल परिवहन से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित जिलों के लिए भी है। वास्तव में, राजस्थान के जिलों सहित देश के लगभग सभी जिलों को इस योजना से जोड़ा गया है।

राष्ट्रीय रेल योजना का कार्यान्वयन पहले ही शुरू हो चुका है। भारतीय रेल ने 'विजन 2024' दस्तावेज के अनुसार परियोजनाओं को पूरा करने के लिए अति महत्त्वपूर्ण, महत्त्वपूर्ण और कोयला/पत्तन संपर्कता के रूप में बड़ी संख्या में परियोजनाओं की पहचान की है और उनका प्राथमिकीकरण किया है जोकि राष्ट्रीय रेल योजना का एक भाग है। ■

रेल यात्रा में सुरक्षा

भारतीय रेल अपने यात्रियों को सुरक्षित और आरामदायक यात्रा मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्ध है। यात्रियों के लिए सुरक्षा और अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करना एक सतत् प्रक्रिया है और रेल यात्रियों को इन्हें सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाते हैं। रेलवे द्वारा यात्रियों के लिए रेल यात्रा को और अधिक सुरक्षित और आरामदायक बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:

- भेद्य और चिह्नित मार्गों/खंडों पर विभिन्न राज्यों की राजकीय रेलवे पुलिस द्वारा प्रतिदिन गाड़ियों के मार्गरक्षण के अलावा रेलवे सुरक्षा बल द्वारा गाड़ियों का मार्गरक्षण किया जाता है।
- 686 रेलवे स्टेशनों और 2,931 सवारीडिब्बों में क्लोज सर्किट टेलीविजन (सीसीटीवी) के जरिए निगरानी रखी जाती है। 164 रेलवे स्टेशनों पर निगरानी तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए एकीकृत सुरक्षा प्रणाली (आईएसएस) मुहैया कराई गई है।

- स्टेशन पर विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों की तैनाती के बीच एक्सेस नियंत्रण, निगरानी में सुधार और तालमेल हासिल करने के लिए चरणबद्ध तरीके से बड़े स्टेशनों पर स्टेशन सुरक्षा योजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है।
- अपराध की रोकथाम और पहचान के लिए सभी स्तरों पर राज्य पुलिस/जीआरपी प्राधिकारियों, केंद्रीय और राज्य की खुफिया एजेंसियों और सिविल प्राधिकारियों के साथ नियमित रूप से संपर्क करना।
- सभी प्रकार की शिकायतों के तेजी से निपटान को सुगम बनाने के लिए जांच, शिकायतें और सहायता के लिए एक रेलवे हेल्पलाइन नंबर 139 भारतीय रेल पर परिचालित है। रेल मंत्रालय ने 'रेल मदद' को भी शुरू किया है।

- कोलकाता मेट्रो की सभी नई निर्मित इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (ईएमयू) और वातानुकूलित रेकों के महिला डिब्बों/कोचों में इमरजेंसी टॉक बैक सिस्टम और क्लोज सर्किट टेलीविजन सर्विलांस कैमरे उपलब्ध कराए गए हैं।

- इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आईआरसीटीसी) और रेलकनेक्ट मोबाइल ऐप, यूटीएसऑएनमोबाइल ऐप, यात्री टिकट सुविधा केंद्र (वाईटीएसके), जन साधारण टिकट बुकिंग सेवकों (जेटीबीएस) की वेबसाइट के माध्यम से यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस), अनारक्षित टिकटिंग प्रणाली (यूटीएस), ऑटोमेटिक टिकट वेंडिंग मशीन (एटीवीएम) के जरिए आरक्षित/अनारक्षित टिकट जारी करके ग्राहक सेवाओं को सुगम बनाया जाता है। रेलगाड़ियों की प्रतीक्षा सूची की नियमित आधार पर निगरानी की जाती है और व्यस्त अवधि के दौरान अतिरिक्त मांग को पूरा करने के लिए विशेष रेलगाड़ियां चलाई जाती हैं। परिचालन व्यवहार्यता के अध्यधीन मौजूदा रेलगाड़ियों के लोड को बढ़ाया जाता है।
- आधुनिक लिंके हॉफमैन बुश (एलएचबी) कोचों के प्रसार/शामिल करने और चरणबद्ध तरीके से एलएचबी कोचों को पारंपरिक कोचों के साथ चलने वाली रेलगाड़ियों से बदलने का निर्णय लिया गया है। भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयां 2018-19 के बाद से केवल एलएचबी कोचों का उत्पादन कर रही हैं। इस समय भारतीय रेल प्रणाली पर 647 जोड़ी गाड़ियों का संचालन एलएचबी कोचों से किया जा रहा है।
- नई दिल्ली-वाराणसी और नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवो कटरा के बीच अत्याधुनिक वंदे भारत सेवाएं शुरू की गई हैं। इन गाड़ियों में अल्ट्रा मॉडर्न फीचर्स, जैसे त्वरित गति

बढ़ना, ऑन बोर्ड सूचना और ग्लोबल पोजिशनिंग प्रणाली (जीपीएस) आधारित यात्री सूचना प्रणाली, ऑटोमैटिक स्लाइडिंग दरवाजे, वापस होने वाले पायदान और शून्य डिस्चार्ज वैक्यूम बायो टॉयलेट आदि हैं।

- हमसफर, तेजस, अंत्योदय, उत्कर्ष डबल डेकर वातानुकूलित यात्री (उदय), महामना जैसी विभिन्न प्रीमियम गाड़ियों और दीन दयालू और अनुभूति जैसे सवारी डिब्बों, जिनकी आंतरिक/बाहरी और बेहतर यात्री सुविधाओं को उन्नत किया है, को भारतीय रेल की विभिन्न रेल गाड़ियों में सेवा हेतु लगाया गया है।

- हाल ही में, एलएचबी प्लेटफॉर्म पर विस्टाडोम कोच, जो यात्रियों को स्थलों की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए मनोरम दृश्य उपलब्ध कराते हैं, को कई आधुनिक विशेषताओं/सुविधाओं के साथ निर्मित किया गया है।

- भारतीय रेल ने मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों में चल रहे आईसीएफ प्रकार के डिब्बों की स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से अप्रैल 2018 में 'परियोजना उत्कर्ष' भी शुरू की थी। 'परियोजना उत्कर्ष' के तहत दिसंबर 2020 तक मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के 447 रेकों को उन्नत कर लिया गया है।
- परियोजना स्वर्ण के तहत, राजधानी और शताब्दी गाड़ियों के 65 रैकों को कई आयामों में उन्नत किया गया है, जिनमें कोच की आंतरिक साजसज्जा, शौचालय, ऑनबोर्ड साफ-सफाई, कर्मचारियों का व्यवहार, लिनन, आदि शामिल है।
- स्मार्ट सार्वजनिक उद्घोषक और यात्री सूचना प्रणाली, स्मार्ट एचवीएसी (हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग प्रणाली) जैसी अत्याधुनिक विशेषता वाले 63 स्मार्ट कोच, स्मार्ट सुरक्षा और निगरानी प्रणाली आदि का निर्माण किया गया है और सेवा में लगाया गया है
- स्टेशनों और गाड़ियों में ध्वनि और वायु प्रदूषण को कम करने के लिए एंड-ऑन-जेनरेशन (ईओजी) गाड़ियों को हेड-ऑन-जेनरेशन (एचओजी) गाड़ियों में बदलने का कार्य किया गया है। इससे जीवाश्म ईंधन की खपत में काफी कमी होने की उम्मीद है।

- डिब्बों में पारंपरिक प्रकाश व्यवस्था को आधुनिक और ऊर्जा कुशल प्रकाश उत्सर्जक डायोड (एलईडी) प्रकाश से बदला जा रहा है।

भारतीय रेल की एटीवीएम और कैश-कॉइन तथा सीओटीवीएम रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध हैं, जिनसे स्मार्ट कार्ड या नकदी का उपयोग करके अनारक्षित टिकटें ली जा सकती हैं। इसके अलावा, यात्री यूटीएसओएनमोबाइल ऐप और आईआरसीटीसी की वेबसाइट से टिकटें बुक करा सकते हैं। ■

सफर का साथी : रेल मदद हेल

रेल से सफर के दौरान पूछताछ एवं शिकायत निवारण के लिए कई हेल्पलाइन नम्बर रहने के कारण यात्रियों को हो रही असुविधा को समाप्त करने के लिए भारतीय रेल ने एक अभिनव पहल की है। भारतीय रेल ने इसके तहत समस्त हेल्पलाइन नम्बरों को एकीकृत कर केवल एक हेल्पलाइन नम्बर '139' (रेल मदद हेल्पलाइन) में तब्दील कर दिया है, ताकि सफर के दौरान यात्रियों द्वारा की जाने वाली शिकायतों का त्वरित निवारण संभव हो सके।

12
भाषाओं में उपलब्ध

समाप्त किए गए रेल शिकायत निवारण हेल्पलाइन नम्बर्स

- **182** (1 अप्रैल, 2021 से बंद) ✗
- **138** सामान्य शिकायतों के लिए ✗
- **1072** हादसों एवं सुरक्षा के लिए ✗
- **9717630982** एसएमएस संबंधी शिकायतों के लिए ✗
- **58888/138** अपने कोच को स्वच्छ रखने के लिए ✗
- **152210** सतर्कता के लिए ✗
- **1800111321** केटरिंग सेवाओं के लिए ✗

1

सुरक्षा एवं चिकित्सा सहायता के लिए यात्री को '1' नम्बर दबाना होगा, जो कॉल सेंटर में कार्यरत कर्मचारी से उसे तत्काल कॉनेक्ट कर देगा।

1

2

पूछताछ के लिए यात्री को '2' नम्बर दबाना होगा। इसके अंतर्गत ही पीएनआर स्टेटस, ट्रेन के आगमन/प्रस्थान, एकोमोडेशन, किराया संबंधी पूछताछ, टिकट बुकिंग, प्रणाली के तहत टिकट निरस्त करने, वेकअप अलार्म सुविधा/प्रस्थान संबंधी अलर्ट, व्हील चेयर की बुकिंग और भोजन की बुकिंग के बारे में भी आवश्यक जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं।

4

सामान्य शिकायतों के लिए यात्री '4' नम्बर दबाएं

रेल मंत्रालय ने यात्रियों को सूचित करने और उन्हें जागरूक करने के लिए स

प लाइन नम्बर

139

इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पॉन्स सिस्टम (आईवीआरएस) आधारित

3,44,513
रोजाना औसतन कॉल्स तथा एसएमएस प्राप्त होते हैं

5
सतर्कता संबंधी शिकायतों के लिए यात्री '5' नम्बर दबाएं

6
पार्सल एवं सामान संबंधी पूछताछ के लिए '6' नम्बर दबाएं

7
आईआरसीटीसी ऑपरेटेड रेलगाड़ी पूछताछ के लिए यात्री 7 दबाएं

9
शिकायतों की स्थिति के लिए '9' नम्बर दबाएं

*****
कॉल सेंटर में कार्यरत कर्मचारी से बात करने के लिए यात्री को * (स्टार) दबाना होगा।

शल मीडिया अभियान #OneRailOneHelpline 139 भी लॉन्च किया है।

भारतीय रेल के नए डीजल इंजन

श्री विमलेश चन्द्र

कुछ वर्ष से पहले जब 11 अक्टूबर 2017 को अमेरिका से पहला डीजल इंजन समुद्र के रास्ते गुजरात के बंदरगाह मुंद्रा पोर्ट पर भारत में आया था तब यह रेलवे में रुचि रखने वाले और रेलवे ड्राइवर लोगों के लिए बहुत आश्चर्य और चर्चा का विषय था कि अपने देश में जब डीजल इंजन बन रहा है तो विदेश से क्यों मंगाया गया, लेकिन जब यह कमीशनिंग होकर चलने लगा तो सभी लोग तारीफ करने लगे कि सचमुच में यह अद्भुत और सरल संचालन वाला इंजन है। धीरे-धीरे इन इंजनों की संख्या बढ़ रही है और कार्य क्षमता भी। इसी से जुड़ी कुछ रोचक जानकारी प्रस्तुत है।

डीजल लोकोमोटिव फैक्टरी, मढ़ौरा (सारण) बिहार

इस फैक्ट्री की स्थापना 2,052.58 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से बिहार के मढ़ौरा स्थान में की गई है जोकि मढ़ौरा, बिहार के सारण जिले में एक शहर है। यह राज्य की राजधानी पटना से 81 किमी उत्तर में स्थित है। इसे जनवरी 2014 में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी थी। यह डीजल लोकोमोटिव फैक्टरी, मढ़ौरा अमेरिका के जनरल इलेक्ट्रिक (जीई) ग्लोबल सोर्सिंग इंडिया प्राइवेट का और भारतीय रेल का एक संयुक्त उपक्रम है। भारतीय रेल पर चलने के लिए तैयार किए जाने वाले 1,000 उच्च-शक्ति मालगाड़ी इंजनों का वर्ष 2019 से अगले 10 वर्षों में उत्पादन किया जाना है। जनरल इलेक्ट्रिक का बनाया हुआ यह पहला डीजल इंजन अमेरिका से बनकर 3 अगस्त, 2017 को निकला था और यह 11 अक्टूबर, 2017 को भारत के मुंद्रा पोर्ट पर पहुंचा था जबकि इस कारखाने से सितंबर 2018 से इंजनों का निर्माण करना शुरू किया गया तथा 19 फरवरी 2019 को यहाँ से पहला इंजन निकला। इसके 1,000 इंजनों में से पहले 50 इंजनों को अमेरिका से आयात किया गया है और बाकी इंजनों का निर्माण इस कारखाने में किया जा रहा है। जनरल इलेक्ट्रिक इन इंजनों का 13 वर्षों तक देखभाल करेगा। उसके बाद भारतीय रेल इसके रख-रखाव का काम करेगा। यहाँ से बन कर निकलने वाले डीजल इलेक्ट्रिक लोको के दो प्रकार हैं। पहला, डब्ल्यूडीजी- 4जी-4500 अश्वशक्ति (एचपी), जो ब्रॉड गेज (बीजी), इवोल्यूशन सीरीज डीजल फ्रेट लोकोमोटिव, 100 किमी प्रति/घंटा, 3-चरण प्रौद्योगिकी और आईजीबीटी प्रौद्योगिकी से युक्त है। यह डब्ल्यूडीजी-4जी का कुल 700 इंजन बनाकर देगा और दूसरा WDG-6G श्रेणी (6,000 एचपी) के 300 इंजन, जो अभी यहाँ से बनना शुरू हो गया है। WDG-6G श्रेणी में, 6,000 एचपी, ब्रॉड गेज (बीजी), फ्रेट लोकोमोटिव, 100 किमी प्रति घंटा, 3-चरण प्रौद्योगिकी और आईजीबीटी प्रौद्योगिकी से युक्त है। यह WDG-6G वाला इंजन, पहले DLW में बन चुके WDG-5 के 5,500 HP से भी ज्यादा HP वाला इंजन है। 4G और 6G की पहचान, मतलब 4G है तो 49001 सीरिज और यदि 6G है तो 69001 सीरिज। GE के इस इंजन में 5,000 या 5,500 HP क्षमता के इंजन के सीरीज नहीं है। 4G के एक इंजन का दाम 35 करोड़ रुपये है। एक रोचक बात यह है कि इन इंजनों का नंबर 49000 या 69000 से शुरू होने की बजाय 49001 और 69001 से शुरू हुआ है जबकि भारत में बने अधिकतर इंजनों के अंतिम अंकों की शुरुआत जीरो (0) से होती है।

रोजा डीजल शेड

कंपनी ने अपना पहला डीजल इंजन शेड रोजा जंक्शन स्टेशन के पास बनाया गया है। मतलब, यहीं पर इन इंजनों की देख-रेख की जाती है। यह स्टेशन दिल्ली-मुरादाबाद-हरदोई - लखनऊ रूट में पड़ता है। इसी तरह से गुजरात के गांधीधाम में इसका दूसरा डीजल इंजन शेड का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है। गांधीधाम वही शेड है, जहाँ भारतीय रेल में मीटर गेज का पहला डीजल इंजन स्थापित किया गया था। यह दोनों अपने देश में बनने लगा है। फलस्वरूप, इस इंजन का नेटवर्क धीरे-धीरे पूरे देश में फैल जाएगा।

अमेरिका से आया पहला इंजन WDG4G-49001

देश के शक्तिशाली डीजल इंजन (WDG-4G, 4,500 HP) की रोचक जानकारी

स्टेशन पर खड़ा इंजन नं. 49002

दिसम्बर 2020 के अंत तक GE के कुल 250 डीजल इंजन बन गए हैं। इस तरह से अमेरिका से मंगाए गए और भारत में बनाए गए GE के कुल इंजनों की संख्या 250 हो गई है। WDG-4G, 4,500 HP के ये इंजन काफी सफल और प्रसिद्ध हो गए हैं। अमेरिका से भारतीय रेल में आए पहले और दूसरे WDG-4G इंजन 49001 और 49002 में डिस्ट्रीब्यूटर पॉवर वायरलेस कंट्रोल सिस्टम (WPWCS) लगाया गया है। ट्रायल के लिए इन दोनों इंजनों को गांधीधाम लाया गया था। इस सिस्टम में वायरलेस के द्वारा दूसरे इंजन में या फिर बीच में लगे इंजन को भी कंट्रोल किया जाता है। मतलब, एक इंजन में ड्राइवर नहीं होता है। केवल मेन या पहले इंजन में ड्राइवर होता है। इससे दो मालगाड़ियों को एक साथ में लांगहाल के रूप में चलाने में आसानी होगी। यह काफी शक्तिशाली इंजन है, जो 100 किमी/घंटा पर सफलता पूर्वक चलता है। एक तरह से यह पुराने समय से चल रहे अल्को इंजनों की जगह पर काम करेगा। इसमें सभी विशेषताएं हैं, जैसेकि ज्यादा क्षमता, वातानुकूलित कैब, आरामदायक कुर्सी, इंजन में कई तरह के सेंसर, डीजल की बचत, चलाने में आसान, कम प्रदूषण, फेलियर कम से कम है। इसमें 4 स्ट्रोक, टर्बोचार्जर, 6 ट्रैक्शन मोटर और 12 सिलिंडर हैं।

देश के सबसे शक्तिशाली डीजल इंजन (WDG-6G, 6,000 HP) की रोचक जानकारी

अमेरिका से जो नए सीरिज के इंजन आए थे, मतलब WDG-6G सीरिज, इस सीरीज के पहले दो इंजन में से इसका पहला नया इंजन 10 फरवरी, 2019 को गांधीधाम के मुंद्रा पोर्ट पर आ गया। इसी के एक-दो दिन बाद दूसरा भी आ गया। कुछ दिन बाद इसके चार और इंजन भी अमेरिका से आ गए। इस तरह से यह कुल 6 इंजन हो गए थे। इन इंजनों को भी GE ट्रांसपोर्टेशन अमेरिका ने बनाया है। यह इंजन काफी शक्तिशाली है, जो 100 किमी/घंटा पर सफलतापूर्वक चलता है। इस साल WDG-6G के मतलब 6,000 HP वाले कई इंजन बनाए जाने वाले हैं।

इस तरह यह WDG-6G देश का सबसे शक्तिशाली डीजल इंजन है। पहले 2 इंजन गांधीधाम में आए थे। उन्हें दक्षिण मध्य रेलवे के विकाराबाद-पारली सेक्शन में ट्रायल के लिए मौलाअली डीजल शेड के अधीन भेज दिया गया था। तीन महीने के सफल ट्रायल तथा आरडीएसओ एवं सीआरएस से क्लीयरेंस मिलने के बाद और डिलिवरी निरीक्षण के बाद इसे रेलवे को सौंप दिया गया था, जो मुरादाबाद मंडल में चल रहे थे, जबकि इसमें से जिन 4 इंजन की रोजा डीजल शेड में कमीशनिंग हुई थी, वो भी चलने लगे हैं। इसमें 4 स्ट्रोक, टर्बोचार्जर, 6 ट्रैक्शन मोटर, इंटरकूल्ड मशीन, इलेक्ट्रॉनिक फ्यूल इंजेक्शन सिस्टम, लोवर इमीशन, हाई टेक फीचर और 16 सिलिंडर होने के साथ-साथ लगभग दो दर्जन विशेषताएँ हैं। इस तरह से ये दोनों प्रकार के नए डीजल इंजन ज्यादा लोड वाली मालगाड़ी के साथ बेहतर उपयोग में आएंगे। ■

सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर, अहमदाबाद

मार्च 2020 से डीजल लोकोमोटिव फैक्टरी से WDG-6G इंजन बनने लगा था और दिसम्बर 2020 तक कुल 25 इंजन बन चुके थे। जबकि 26वां इंजन जनवरी 2021 में पश्चिम रेलवे के गांधीधाम को प्रदान किया गया है।

भारतीय रेलों की स्थापना के पहले और अब

ले० श्री हेमेन्द्र प्रसाद घोष

भारत में रेलों की स्थापना इस देश को अंग्रेजों की अनेक देनों में से एक देन है । भारत में 21 मील लम्बी पहली रेल लाइन बम्बई और थाना के बीच 16 अप्रैल 1853 में चली थी ।

इस रेल गाड़ी से थाना जाने वाले लोगों को अंग्रेज़ी के दैनिक पत्र ''टाइम्स ऑफ इंडिया'' ने विस्तृत हिदायतें दी थीं और उस समय के दृश्य का वर्णन इस शब्दों में किया था – ''300 फीट लम्बे शानदार प्लेटफॉर्म को यात्रियों की सुविधा के लिए अस्थायी रूप से छा कर झंडे तथा झंडियों से सजाया गया है । अन्ततः इस पर छत डाली जाएगी । यहां से 18 डिब्बे खींच कर ले जाए जाएंगे। यात्रियों के लिए टिकटों के नम्बर के अनुसार गाड़ी में स्थान नियत कर दिया गया है जिससे चढ़ने तथा बैठने में कम से कम समय लगे। गाड़ी को आवश्यकतानुसार दो या तीन इंजन खींचेंगे । थाना पर बड़े बड़े शानदार खेमे लगाए गए हैं जहां 400 यात्रियों की दावत के लिए व्यवस्था की गयी है। यह अब तक दिये गये डिनरों में सबसे महत्वपूर्ण डिनर है। थाना में 1.5 घण्टा बिताने के बाद गाड़ी वापस बोरीबन्दर स्टेशन पर लौट आएगी जहां से कि वह चली थी ।..''

हावड़ा-बर्दवान रेल

ईस्ट इंडियन रेलवे के बाद में उद्घाटन लॉर्ड बिशप के आशीर्वचन के साथ हुआ था और इसकी पहली गाड़ी बर्दवान तक गयी थी। हुबली नदी के पश्चिमी तट पर स्थित हावड़ा इस रेलवे का अन्तिम स्टेशन था। उस समय कलकत्ते तक रेल ले जाने के लिए नदी पर पुल बनाना बहुत ही महंगा समझा गया था।

हड़प्पा के दिनों में

हड़प्पा में हुई खुदाई से प्रकट होता है कि जब यह एक समृद्ध नगर था उस समय भी पहियों वाली सवारियों का प्रचलन था । लेकिन यह कह सकना कठिन ही है कि पहियों वाली इन सवारियों को मनुष्य, बैल या ऊंट में से कौन खींचा करता था और ये नगर के बाहर चल भी पाती थीं या नहीं, क्योंकि उस समय सड़कों आदि का सौभाग्य नगरों को ही प्राप्त था । पहियों वाली सवारियां सूखे मौसम के अलावा अन्य मौसमों में देहाती इलाकों में तो शायद ही चल पाती हों । लोग पैदल चलना ही पसन्द करते थे क्योंकि उस समय जो भी तथाकथित सड़कें थीं, वे खराब थीं। जोकाई के शब्दों में, ''आने-जाने का यह साधन (अर्थात् पैदल चलना) अधिक द्रुतगामी था क्योंकि यदि सड़कें खराब हों तो सवारी निश्चय ही एक मनुष्य से अधिक भारी सिद्ध होगी । मनुष्य को कीचड़ से केलव दो पैर निकालने होंगे जबकि सवारी की चार पहिये। जब मुख्य सड़कें ही नहीं थीं तो सहायक सड़कें होंगी ही कहां ?''

अमीरों की पालकियाँ

अमीर लोग आने-जाने के लिए पालकियों का प्रयोग करते थे, जिसे 4 या 6 व्यक्ति कंधा पर लेकर चलते थे । उत्सवों या समारोहों के लिए रथों का प्रयोग किया जाता था, जिनमें घोड़ें और कभी कभी हाथी तक जोते जाते थे । लेकिन पहियों वाली जो सवारी सामान्यतः प्रयोग की जाती थी वह दो पहियों की गाड़ी थी जिसमें दो बैल जुतते थे और इन्हीं बैलों को खेतों में हल चलाने आदि में प्रयोग किया जाता था । राजपूताना (उत्तरी भारत) के रेगिस्तान में मनुष्यों तथा वस्तुओं के इधर उधर लाने ले जाने के लिए तथा पहियों वाली सवारी खींचने के लिए ऊंट का प्रयोग किया जाता था । हाथियों तथा घोड़ों को व्यापारिक कामों में खूब सजाकर प्रयोग किया जाता था और हाथियों के मस्तक आदि पर चित्रकारी भी की जाती थी ।

रानीगंज में पहली रेलगाड़ी के आगमन का दृश्य--एक कलाकार की दृष्टि में

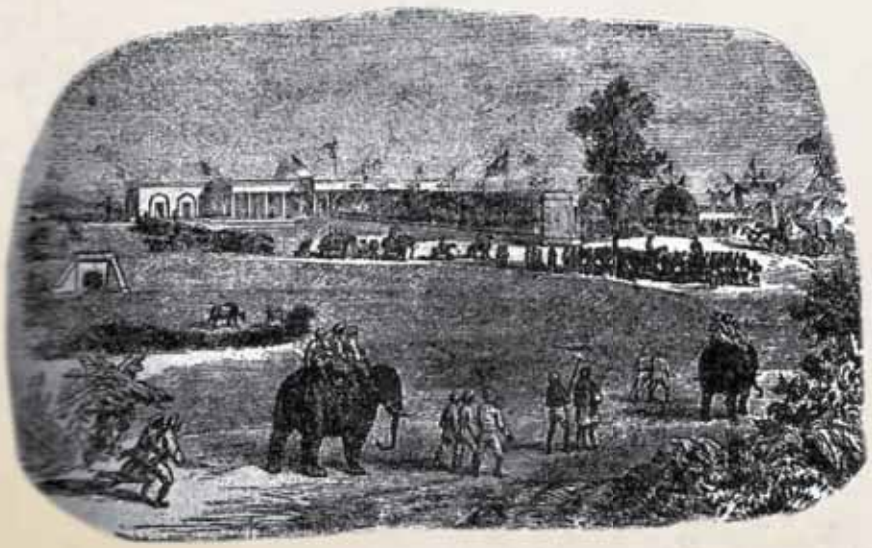

पालकी

मानव की कल्पना शक्ति ने मनुष्य को इधर उधर ले जाने के लिए जो विभिन्न साधन निकाले उनमें पालकी सबसे अधिक लोकप्रिय सिद्ध हुई । जिस समय मजदूर कम पैसों पर आसानी से मिल जाते थे, उस समय मनुष्य को इधर उधर आने ले जाने के लिए यह न केवल सर्वाधिक सुविधाजनक वरन् सबसे सस्ता था । इसका विशेष लाभ यह था कि जहां सडके हो ही नहीं और खेत तथा पहाड़ी क्षेत्र हो वहां भी इसे काम में लाया जा सकता था । कलकत्ते में पालकी का सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता था । भारतीय इसे अन्य सवारी की अपेक्षा ज्यादा पसन्द करते हैं क्योंकि इसके अन्दर औरतें परदे में जा सकती हैं । कलकत्ते में आरंभिक दिनों में पालकी का योरोपियन भी प्रयोग करते थे ।

19वीं सदी में यात्रा के साधन

चित्रकार कोल्सवर्दी ग्रांट अपनी एक पुस्तक में उन सवारियों का विवरण दिया है जो 19वीं सदी के मध्य में प्राचीन कलकत्ते में प्रयोग की जाती थीं । उसने आवागमन के निम्न 6 साधनों के प्रयोग का वर्णन किया है:–

(1) अंग्रेजी रथ जिस प्रांतों के गवर्नर, जज, संभ्रांत व्यक्ति तथा शासक प्रयोग करते थे । इसके साथ ही उस गाड़ी का भी नाम जोड़ा जा सकता है जिसे डाक्टर प्रयोग किया करते थे और सभी 'पिल-बाक्स' के नाम से जानते थे ।

(2) लन्दन एण्ड ब्राइटन कोच-जब 'जैनाबिया' से यह पहली बार इंग्लैण्ड की सड़कों कि मिट्टी पहियों से लगायें, उसी हालत में जिसमें वह लन्दन बन्दरगाह से चली थी, कलकता आयी (क्योंकि पहियों से मिट्टी धोना शायद पाप माना जाता था), तो वहां के भारतीयों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ । इस गाड़ी के मालिक का नाम था श्री हौलरोयड़ था ।

(3) ब्रोहैम (4) पालकी गाड़ी (5) बग्धी और (6) पालकी ।

चार पहिये वाली पालकी

आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है । इसी के फलस्वरूप एक नये प्रकार की सवारी का अनुभव हुआ । पालकी ले जाने वाले लागों की 1828 में आम हड़ताल हुई । इस हड़ताल में सभी लोगों की बड़ी असुविधा हुई । इस परेशानी के शिकार श्री ब्राउनलो नामक एक सज्जन भी हुए जिनके पास आवागमन का एकमात्र साधन पालकी थी जो उनकी अपनी सम्पत्ति थी । आपने पालकी में दो धुरे और चार पहिये लगाये और टट्टू जोतकर अपनी इस नई सवारी में बैठकर दफ्तर गये । यह आविष्कार सभी गो पसन्द आया और सभी ने रामबाण औषधि की तरह नयी सवारी को अपना लिया ।

कुछ अन्य सवारियां

उक्त सवारियों से कुछ निचली श्रेणी की तीन अन्य सवारियों का भी उल्लेख किया जा सकता है । इनमें से एक का नाम करैंचर था जिसे दो घोड़े खिंचते थे। यह इंग्लैण्ड में प्रचलित प्राचीन हैकनी कोच का ही दूसरा रूप थी किन्तु उससे आधे आकार की थी । दूसरी सवारी रथ था जो बहुत ही आकर्षक ढंग से सजाया जाता था । यह सर्वथा भारतीय वाहन है जिसमें चार पहिये होते हैं और जिसमें बैलों की एक जोड़ी जोती जाती है । तीसरी सवारी इक्का है जिसमें एक घोड़ा जाता है । (रथ, पालकी एवं इक्का आज भी उत्तर भारत में देखने को मिल जाते हैं । रथ और पालकी का प्रयोग प्राय: विवाह आदि उत्सव पर ही होता है । सं॰)

रेलों का अभ्युदय

रेलों के अभ्युदय ने देश का स्वरूप और जनता की हालत ही बदल दी । इन्होंने देश के विभिन्न स्थानों की दूरी समाप्त कर दी तथा एक भाग से दूसरे भाग के बीच आना-जाना आसान बना दिया । यदि युद्ध हुआ तथा क्रांति के दिनों में रेलों ने सेना तथा युद्ध-सामग्री को इधर से उधर पहुंचाने का महत्त्वपूर्ण काम किया तो अकाल दिनों में एक स्थान से दूसरे स्थान को गल्ला ले जाने का काम करके भूख का ज्वाला से पीड़ित लोगों को भी बचाया ।

1874 में बंगाल में पड़े अकाल का सामना करने के लिए जबकि परिवहन की सुरक्षा आवश्यक हो गयी थी, गजब की तेजी से काम किया गया और प्रतिदिन एक मील की हिसाब से रेलवे लाइन 53 दिनों में बना डाली गयी । चमताघाट से दरभंगा तक जाने वाली लाइन 23 फरवरी को आरंभ होकर 17 अप्रैल को पूरा हो गया और 52 मील लम्बी रेलवे लाइन 53 दिनों में बना डाली गयी।

स्टीफनसन ने जो पहला इंजन बनाया था, वह न तो ''राकेट'' था न सवारी गाड़ी ले जानेवाला इंजन था । कोयल खानों में काम आने वाले अनेक प्रकार के इंजन बनाकर हर परीक्षण में अच्छा इंजन बनाने की कोशीश करते करते उसने पहला ''रेल इंजन' बनाया जिसे ब्रिटेन की स्टाक्टन एण्ड डारलिंगटन रेलवे ने पहली बार सवारियां बैठाकर ले जानेवाली रेल में प्रयोग किया था । यह गाड़ी सितम्बर,

कलकत्ते में आयी प्रथम 'लन्दन एण्ड ब्राइटन कोच'

आदमी द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी

1825 में चली थी । भारतीय रेलों के 'फेयरी क्वीन' इंजन की भांति यह इंजन अब भी संभाल कर रखा हुआ है ।

ब्रिटेन में स्टाक्टन-डारलिंगटन लाइन चालू होने में 28 वर्ष बाद ही 1853 में भारत में प्रथम रेल चालू हुई । इसी से यह प्रकट होता है कि इंग्लैण्ड में कितनी तेजी से प्रगति हुई और इंग्लैण्ड में प्रचलित परिवहन की इस प्रणाली को भारत में अपनाये जाने की कितनी उत्कट इच्छा अंग्रेजों में थी ।

बम्बई-थाना लाइन की सफलता ने रेल-निर्माताओं में यह साहस भर दिया कि वे वास्तव मं उपमहाद्वीप सरीखे इस विशाल देश में रेलवे लाइनें फैलाएं।

रेलें बनाने का प्रथम विचार

कहते हैं कि रेल परिवहन की सुविधा का विस्तार भारत में भी करने की योजनाओं पर इंग्लैण्ड में इंजीनियरों तथा पूंजीपतियों ने 1840-41 में ही विचार किया था लेकिन दो-तीन वर्ष के बाद ही ईस्ट इंडिया कम्पनी के डाइेक्टरों के सामने कुछ निश्चित प्रस्ताव रखे जा सके । उस समय रेलें चलाने के विचार का भारत सरकार ने विरोध तो नहीं किया परन्तु स्वागत भी नहीं किया क्योंकि कुछ लोगों को हर नयी चीज रुचती नहीं है लेकिन इन विचार को दबाया भी नहीं जा सका ।

ग्रेट इंडियन पैनिनशुला रेलवे की प्रथम 20 मील लम्बी लाइन का 1853 में उद्घाटन होने के बाद भारत में रेलों का बराबर विस्तार होता गया और 1893 में जनता के उपयोग के लिए चालू रेल लाइन की लम्बाई 17000 मील हो गयी थी जिसकी पूंजीगत लागत 22 करोड़ 70 लाख पौण्ड थी । (आज भारत में रेल मार्ग की लम्बाई लगभग 35000 मील तथा कुल पूंजीगत लागत लगभग 108 करोड़ पौण्ड है । सं॰)

भारत में रेलों के निरन्तर विस्तार के कारण यह आवश्यक हो गया कि इनमें आपस में अधिक अच्छा समन्वय हो और सरकार का अधिकाधिक नियंत्रण हो । इस प्रश्न पर सावधानी से विचार करने के लिए एक समिति नियुक्त की गयी जिसकी सिफारिशों के अनुसार सरकार ने निजी प्रबन्ध-व्यवस्था में चल रही सभी रेलों को अपने अधिकार में ले लिया और इस प्रकार रेलों की और भी तेजी से प्रगति संभव हो सकी ।

स्वावलम्बन की ओर

शुरू में रेल-इंजनों, सवारी-डिब्बों तथा माल गाड़ी के डिब्बों के लिए भारत को विदेशों पर निर्भर रहना होता था जो रेलों के विस्तार में एक बड़ी बाधा थी और यह अत्यधिक व्यय-साध्य भी थी । भारत की परवाह न करते हुए अपने देश को धनवान बनाने की नीति विदेशी सरकार की थी जिसने ये कठिनाइयां और भी गुरुतर बना दीं । अपनी आवश्यकता की चीजों के विषय में भारतीय रेलों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बहुत धीमे धीमे चला गया। किन्तु स्वाधीनता के बाद से वर्तमान वर्कशापों का विस्तार किया गया और रेल-इंजन, सवारी गाड़ी एवं माल गाड़ी के डिब्बे बनाने के लिए नयी नयी वर्कशापों की स्थापना की गयी । रेल की पटरियां अब भारत के ही इस्पात और लोहे के कारखानों से आती हैं । वह दिन दूर नहीं, जब बिजली की रेलों के लिए इंजन आदि सभी कुछ देश में ही बनने लगेगा ।

सामाजिक एवं आर्थिक अभाव

लोगों में समानता तथा एकता की भावना लाने में भी रेलें बहुत बड़ा काम करती हैं । कृत्रिम सामाजिक भेद-भावों को मिटाने में ये अधिक सफल हुई हैं । इन भेद-भावों की उपयोगिता कब की समाप्त हो चुकी है और अब थे हानिकर अन्धविश्वास मात्र रह गये हैं । रेलों ने पहाड़ों और नदियों जैसी प्राकृतिक बाधाओं को सुरंगें और बांध बनाकर पार किया और विश्रृङ्खल जन समुदायों को एकताबद्ध किया और इस प्रकार राष्ट्र का निर्माण संभव बनाया । रेलों के कारण शासन-व्यवस्था करनी सुगम हो गयी । इनके कारण ही भारत में सूरोपीय पद्धति पर नये उद्योगों का विकास हो सका ।

रेलों को जिन कठिनाइयों विशेषत: प्रारंभिक दिनों की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा वे अनेक प्रकार की थीं और जटिल थीं। इन्हें दूर करने के लिए विज्ञान तथा अनुभवी व्यक्तियों की सहायता लेना जरूरी था । रेलों ने विज्ञान की पूरी पूरी सहायता ली तथा अपूर्व सफलता भी प्राप्त की ।

रेल-संचालन व्यवस्था में सबसे नयी चीज है बिजली चालित रेल और इस नवीनता का भारतीय रेलों में समावेश किया जा रहा है । इससे समय की बचत होगी और देश के उन कोयला भंडारों का खाली होना रुक सकेगा जो कि अनन्त नहीं कहे जा सकते ।

रेलों ने भारत में एक नये युग का सूत्रपात किया है जिसे शान्ति और प्रगति का युग कह सकते हैं; जिसमें, आशा है कि, गरीबी के स्थान पर सब चीजों की बहुलता, अभावों के स्थान पर समृद्धि, अशिक्षा के स्थान पर शिक्षा, अज्ञान के स्थान पर नूतन ज्ञान की खोज तथा बेरोजगारी के स्थान पर काम मिल सकेगा। अब तो ये रेलें सरकार के लिए, और दूसरे रूप में देखें तो जनता के लिए, आमदनी का साधन बन गयी हैं । देश के विकास तथा जनता की प्रगति के साथ साथ यह आमदनी बढ़ती ही जाएगी।

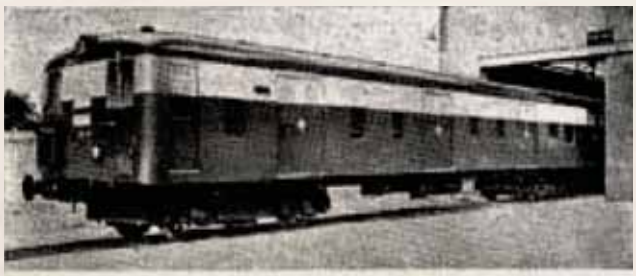

बिजली चालित गाड़ी का भारत में बना डिब्बा

रेलकर्मी पर्सिवल डग्लस कैरोल : शौर्य की अद्भुत गाथा

श्री सुधेन्दु ज्योति सिन्हा

पर्सिवल डग्लस कैरोल 20 मार्च 1959 को बम्बई-कोलकाता मेल की ड्राइविंग सीट पर बैठा हुआ था। चक्रधरपुर का पर्सी अपने समय पालन के लिए माना जाता था और उसकी ट्रेन से लोग अपनी घड़ियां मिलाते थे। स्टेशन मास्टर, चक्रधरपुर को अगले स्टेशन राजखरसावां से लाइन क्लियर मिली और उसने स्टार्टर सिग्नल डाउन किया। पर्सी बम्बई-कोलकाता मेल लेकर चल पड़ा। स्टेशन सेक्शन को उसने सावधानी से पार किया और ब्लॉक सेक्शन में घुसते ही उसने अपनी गाड़ी की गति बढ़ा दी। गाड़ी के झटके के वह मजे ले रहा था। सेक्शन का चप्पा-चप्पा उसे पता था, मानो हर एक इंच उसकी हथेली पर उभरा हो। कोई आंखें बंद कर दे तो भी वह पत्तों की सरसराहट और आसपास की गंध से बता सकता था कि ट्रेन कहां पर है। हर एक इंजन ड्राइवर इस स्तर की दक्षता हासिल करना चाहता है लेकिन कुछ एक ही ऐसा कर पाते हैं। जब रेल की पटरियों की पूरी ज्यामिति मानस पटल पर अंकित हो जाती है - कोई द्वंद्व नहीं, कोई दुविधा नहीं।

असाधारण शौर्य हेतु
कीर्ति चक्र (मरणोपरांत-1961)

लेकिन उस सवेरे भाग्य की देवी नाराज थीं। जैसे ही उसने पूरी सावधानी से सीटी बजाते हुए तीखे मोड़ को पार किया कि सामने नजारा देखकर वह स्तब्ध रह गया। चारों ओर मालगाड़ी के डिब्बे बिखरे पड़े थे। उन्होंने दोनों लाइनों को बाधित कर रखा था। थोड़े ही समय पहले दो माल गाड़ियां आपस में टकरा गई थीं। मध्य सेक्शन की यह एक खतरनाक दुर्घटना थी। अगल-बगल के स्टेशन को इसका कुछ पता नहीं था, अन्यथा ट्रेन को ब्लॉक सेक्शन में जाने की अनुमति नहीं दी जाती। दोनों फायरमैन डरे हुए थे और सबको पता था कि मौत निश्चित है। जब मृत्यु ललकारती है, तब साहस की यात्रा प्रारंभ हो जाती है। वह अनंत यात्रा, जिसे केवल वीर ही शुरू कर सकते हैं।

राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद से कीर्ति चक्र प्राप्त करतीं श्रीमती ऐडना कैरोल

पर्सी अपने साथियों एवं बड़ों-छोटों, सब का प्यारा था, मगर उसे सबसे ज्यादा प्यार अपने इंजन से था। वह उसे चमचमाकर रखता था, बिल्कुल चकाचक। उसे पता था कि वह बच नहीं सकता। लेकिन उसकी चिंता उसकी ट्रेन पर सवार 500 यात्रियों के लिए थी, जिन्हें रेलकर्मी और रेलवे की व्यवस्था पर पूरी आस्था थी। पर्सी ने तेजी से गणना की। वह देख रहा था कि सामने बड़ी बाधा और इंजन के बीच की दूरी इमरजेंसी ब्रेकिंग डिस्टेंस से भी कम थी। अब परीक्षा शुरू हो चुकी थी। उसने ब्रेक लीवर को हल्का किया और ब्रेक लगाने का प्रयास किया। वह स्पष्ट देख पा रहा था कि वह किसी स्थिति में अपने इंजन को वैगन से टकराने से रोक नहीं सकता था। अपने फायरमैन को उसने जोर से आदेश दिया - ''अपने आप को बचाओ! कूदो'' दोनों फायरमैन कूद गए।

पर्सी अपनी सीट पर बिल्कुल स्थिर था। वह ट्रेन को रोकने का भरपूर प्रयास कर रहा था। उसका इंजन वैगन से टकराया और किनारे पर लुढ़क गया। पर्सी खुद अपने इंजन के चक्कों की चपेट में आ गया, लेकिन यात्री डिब्बे ट्रैक पर सुरक्षित थे। कैरोल के ऊपर पूरा का पूरा फौलादी दानव बैठा था। यह उसकी अंतिम यात्रा थी। ट्रेन में यात्रा कर रही एक सिंधी लेडी डॉक्टर को तुरंत बुलाया गया। वह हाल ही में अमेरिका से मेडिकल ट्रेनिंग करके लौटी थी। उसने प्राथमिक उपचार किया। 22 मार्च 1959 को पर्सी का देहांत हो गया।

श्रीमती ऐडना कैरोल सफेद लिबास में भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के समक्ष उपस्थित थीं। प्रशस्ति पत्र पढ़ा गया, ''अपनी अद्भुत सूझबूझ और शीघ्र निर्णय से कैरोल ने बहुतों की जान बचाई। इस दौरान उसे अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा। वह अपने इंजन से कूद सकता था, अपनी जान बचा सकता था, लेकिन उसने अपने साहस से अति उत्तम कीर्तिमान स्थापित किया।'' श्रीमती ऐडना कैरोल ऑस्ट्रियन कंपोजर की पंक्ति 'साहस जब तुम्हें खतरा ललकारे' को याद कर रही थीं, जो पूरी तरह पर्सी का प्रतिनिधित्व करता था। अपने अद्भुत बलिदान से पर्सी कैरोल ने साहस की एक अनुपम गाथा रच डाली। ■

सलाहकार, नीति आयोग

फोटोग्राफ सौजन्य : हैरी मॅकक्लूर, संपादक-प्रकाशक, एंग्लो-इंक बुक्स। **पुस्तकालय सहायताः** रेल भवन पुस्तकालय। **वेबसाइट :** https://www.gallantryawards.gov.in **संग्रहः** रक्षा मंत्रालय, वी.एन. सिंह, रेल मंत्रालय। **संदर्भ :** 'फुटप्रिंट्स ऑन द ट्रैकः एंग्लो इंडियन रेलवे मेमोरीज', नोएल थॉमस, एंग्लो-इंक बुक्स (दूसरा संस्करण, 2014), **विशेष उल्लेख :** पुनः दृश्य के लिए हैरी मॅकक्लूर को।

भारतीय रेल में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

रेल मंत्रालय ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर रेल भवन में एक सम्मान समारोह आयोजित किया, जिसका विषय 'महिला नेतृत्व : कोविड-19 की दुनिया में समान योगदान' देते हुए था। इसमें विभिन्न रेलों के महाप्रबंधक ने प्रमुख विभागाध्यक्षों और वरिष्ठ कार्मिक अधिकारियों के साथ भाग लिया। इस कार्यक्रम में विशेष योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित भी किया गया।

उत्तर रेलवे ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

उत्तर रेलवे में प्रधान कार्यालय, बडौदा हाउस नई दिल्ली में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समापन उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री आशुतोष गंगल की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा, श्रीमती शिखा गंगल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के आयोजन के अवसर पर आज एक स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें स्त्री संबंधी समस्याओं, एनीमियां, खून की जांच, अस्थि रोग संबंधित समस्याओं व उनकी जांच कर निदान करने के विषय में महिला कर्मियों को अवगत कराया गया। 250 से अधिक महिला कर्मियों ने इस जांच शिविर का लाभ उठाया।

इंजनों को बहादुर महिला वारियर्स को समर्पित किया

'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' पर उत्तर रेलवे ने तुगलकाबाद लोको शेड को स्वतंत्रता के लिए युद्ध करने वाली महिलाओं से जोड़ा। लोको शेड रेल इंजन के नामं रानी अहिल्याबाई, रानी अवंतीबाई, रानी वेलु नचियार, झलकारी बाई, ऊदा देवी रखा है।

उत्तर मध्य रेलवे पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' पर उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में अध्यक्षा महिला कल्याण संगठन, श्रीमती मीना त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 10 महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया गया और वक्ता के रूप में आमंत्रित सुश्री अइयेशाक्यधम्मदिना ने इस अवसर पर महिला सशक्तीकरण के संबंध में व्याख्यान दिया। इस दौरान 'महिला कल्याण संगठन' की सचिव श्रीमती उर्मिला ओझा एवं अन्य सदस्य उपस्थित भी उपस्थित थीं। प्रयागराज, आगरा एवं झांसी मंडलों में भी 'महिला दिवस' मनाया गया। इसी क्रम में बुंदेलखंड एक्स. का झांसी से ग्वालियर के मध्य एवं नेताजी एक्सप्रेस का टूंडला से पं. दीन दयाल उपाध्याय स्टेशन के मध्य पूर्णत: महिला रेलकर्मियों द्वारा संचालन किया गया। इस अवसर पर प्रयागराज मंडल में सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें प्रोफेसर रूमा पुरकैत, विभागाध्यक्ष एंथ्रोपोलॉजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा मंडल की महिला शक्ति को मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस उपलक्ष्य पर सूबेदारगंज तथा कानपुर सेंट्रल स्वास्थ्य केंद्रों को पूर्णत: महिलाओं द्वारा संचालित किया गया। रेलवे सुरक्षा बल की 'मेरी सहेली' टीम द्वारा विशेष जागरुकता रैली का आयोजन किया गया तथा स्टेशन पर सभी कार्य पूर्णत: महिला रेल कर्मियों द्वारा सम्पादित किए गए। महिला दिवस के अवसर आगरा छावनी स्टेशन के सभी स्टेशनों आरपीएफ थाना, पार्सल कार्यालय, पूछताछ, आरक्षण, कार्यालय, टीसी/सीटीआई कार्यालय, गार्ड/ड्राइवर लोको लॉबी कार्यालय का संचालन महिला कर्मचारियों द्वारा किया गया।■

चिरेका में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का पालन

चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के इस वर्ष के विषय 'चुनौती के लिए चुनें' के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रीमती नमिता कश्यप, अध्यक्षा, चिरेका, महिला कल्याण संगठन, मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थीं। इस मौके पर श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक, चिरेका श्री एस.डी. पाटीदार, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं अध्यक्ष, चिरेका एस.बी.एफ.एम.सी. उपस्थित थे। श्रीमती नमिता ने श्री एस.डी. पाटीदार, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी चिरेका के प्रयास से तथा स्टाफ बेनिफिट फंड की प्रबंधकीय समिति की सहायता से इस आयोजन की सराहना की। इस मौके पर महिलाओं द्वारा 'कोविड-19 की अवस्था' विषय पर केंद्रित लघु नाटिका, समूह नृत्य और गान और कविता की प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात चयनित महिला कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र, सम्मान-उपहार देकर सम्मनित किया गया तथा

चिरेका एस.बी.एफ. द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए। एक अन्य कार्यक्रम में महाप्रबंधक, चिरेका की उपस्थिति में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के मौके पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रेलवे बोर्ड के शीर्ष अधिकारियों एवं सभी रेल जोन के अधिकारियों और महिलाओं ने कार्य उपलब्धि को साझा किया। इस मौके चिरेका की 10 महिला कोरोना वॉरियर्स को सम्मानित किया गया। ■

मेट्रो रेलवे में 'महिला दिवस' मनाया गया

दिनांक 08.03.2021 को मेट्रो रेलवे में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए मेट्रो रेलवे द्वारा उठाए गए कदमों को उजागर करना था। मेट्रो रेल भवन में मेट्रो रेलवे के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका बढ़ाने पर चर्चा हुई, जिसमें महिला वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा कालीघाट रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट और नोआपाड़ा मेट्रो स्टेशन पर महिलाओं के लिए एक चेंजिंग रूम (वस्त्र बदलने का कक्ष) का उद्घाटन किया गया। इस दिवस की स्मृति में महिला कर्मचारियों के लिए एक वाद-विवाद और रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। ■

बरेका में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

अंतर राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बनारस रेल इंजन कारखाना में महाप्रबंधक सुश्री अंजलि गोयल द्वारा विद्युत रेल इंजन 'धरा' का लोकार्पण किया गया, जिसे सहायक लोको पायलट सुश्री प्रिया राय द्वारा गंतव्य स्थान को ले जाया गया। इस 6,000 अश्व शक्ति डब्ल्यूएपी-7 विद्युत रेल इंजन संख्या-37555 को पूर्वोत्तर रेलवे के गोंडा विद्युत शेड को भेजा गया।

स्थानीय प्राविधिक प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में सुश्री अंजलि गोयल, महाप्रबंधक ने महिलाकर्मियों को शुभकामनाएं दीं। महिलाकर्मियों ने गीत, गजल एवं काव्य पाठ आदि के माध्यम से महिलाओं की व्यथा, संघर्ष एवं स्वाभिमान को उजागर किया। इसी क्रम में महाप्रबंधक ने महिलाओं को समर्पित पत्रिका 'निहारिका' का विमोचन किया और अविस्मरणीय योगदान देने वाली 11 महिला कर्मियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर सर्वश्री राजेश कुमार राय, प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर, डी.एस. जंगपांगी,

प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक, वी.के. सक्सेना, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, पी.के.सिंह, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी, वाई.के. श्रीवास्तव, प्रमुख वित्त सलाहकार, आलोक कुमार, प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त, संतोष कुमार, प्रमुख मुख्य इंजीनियर, डॉ. सुजीत मल्लिक, प्रमुख मुख्य चिकित्सा अधिकारी उपस्थित थे। ■

पश्चिम रेलवे पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

संपूर्ण पश्चिम रेलवे द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' उत्साह के साथ मनाया गया। पश्चिम रेलवे की 3 महिला लोको पायलटों सुश्री कुमकुम नागेंद्र, सुश्री उदिता वर्मा और सुश्री काजल गुप्ता को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय द्वारा सम्मानित किया गया, जिसके लिए महाप्रबंधक श्री आलोक कंसल ने तीनों को बधाई दी है।

8 मार्च, 2021 को रेल मंत्रालय ने एक सम्मान समारोह आयोजित किया, जिसका विषय 'महिला नेतृत्व : कोविड-19 की दुनिया में समान योगदान' देते हुए था। इसमें महाप्रबंधक ने प्रमुख विभागाध्यक्षों और वरिष्ठ कार्मिक अधिकारियों के साथ भाग लिया। आरपीएफ इंस्पेक्टर श्रीमती गायत्री पटेल ने कोविड-19 के दौरान अपनी ड्यूटी के अनुभवों को साझा किया। एक संवाद कार्यक्रम में मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता डॉ. प्रज्ञा अजिंक्य ने महिला मुक्ति पर बात की। चर्चगेट, वसई रोड, अंधेरी और बोरीविली

स्टेशनों पर 'सखी बंधन बैंड' टिकट चेकिंग स्टाफ ने महिला यात्रियों को बांधा। ट्रेनों में योग सत्र आयोजित किया गया। बोरीविली बुकिंग कार्यालय में एक लेडीज रेस्ट रूम का उद्घाटन किया गया। वसई रोड स्टेशन पर सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन लगाई गई। वलसाड रेलवे अस्पताल में स्वास्थ्य जागरूकता सत्र में डॉ. रूपल पटेल ने आंखों से संबंधित बीमारी की व डॉ. अनामिका ने सर्वाइकल एंड ब्रेस्ट कैंसर के बारे में बताया। ■

रेल कोच फैक्टरी में महिला दिवस का आयोजन

रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती नीता गुप्ता, अध्यक्ष आरसीएफ महिला कल्याण संगठन ने की। कार्यक्रम में अपनी रेल सेवा के 25 वर्ष पूरे करने पर आरसीएफ की 76 महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा विभिन्न विभागों से 26 महिला कर्मचारियों को (वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला) पुरस्कार से नवाजा गया। वारिस शाह हॉल में आयोजित कार्यक्रम में महिला सशक्तीकरण पर एक चर्चा आयोजित की गई, जिसमें महिला कर्मचारियों को आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। कोविड-19 के दौरान अहम योगदान देने वाली डॉक्टर राजविन्दर कौर और सीनियर नर्सिंग सुपरडेंट गुरविन्दर कैला को भी सम्मानित किया गया। इस वर्ष सेवानिवृत्त होने वाली 10 महिला कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया। महिलाओं के लिए डायटीशियन डॉक्टर मोनिका द्वारा आवश्यक हेल्थ टिप्स एवं योगा पर कार्यशाला भी आयोजित की गई। कार्यक्रम में महिला कर्मचारियों के लिए म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। ■

दक्षिण मध्य रेलवे : 150 महिला कर्मी सम्मानित

3 फरवरी, 2021 को दक्षिण मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन (एससीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ) ने एक समारोह में जोन की 150 महिला रेलवे कर्मचारियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर दमरे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती जयंती मल्लया मुख्य अतिथि थीं। इस कार्यक्रम में श्रीमती उषा जैन, कोषाध्यक्ष, श्रीमती अरुणा विश्वनाथ, संयुक्त सचिव एवं एससीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ की अन्य कार्यकारी सदस्य, मुख्यालय, हैदराबाद एवं सिकंदराबाद मंडल से विजेताओं ने भाग लिया। चार मंडल-विजयवाड़ा, गुंतकल, गुंटूर, नांदेड़ और दो कारखानों-रायनपाडु और सीआरएस तिरुपति के विजेताओं ने वर्चुअली पुरस्कार प्राप्त किया।

महिला कार्यबल 12% से अधिक है, जो लोको पायलट, गार्ड, तकनीशियन, ट्रैक मेंटेनर, रेलवे सुरक्षा बल के जवान,

टिकटिंग स्टाफ और खेल, चिकित्सा, प्रशासनिक क्षेत्रों आदि क्षेत्रों में काम कर रहा है। संयुक्त कोषाध्यक्ष श्रीमती माधवी विजयकुमार के धन्यवाद प्रस्ताव से कार्यक्रम का समापन हुआ। ■

पश्चिम मध्य रेल महिला कल्याण संगठन द्वारा महिला दिवस का आयोजन

दिनांक 08, मार्च 2021 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पश्चिम मध्य रेल महिला कल्याण संगठन (मुख्यालय) द्वारा सीनियर रेलवे इंस्टीट्यूट में महिला रेलकर्मियों के सम्मान में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पश्चिम मध्य रेल महिला कल्याण संगठन (मुख्यालय) की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना सिंह की अध्यक्षता में 'मेरी संस्कृति मेरी अभिव्यक्ति' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके साथ ही अनेक कार्यक्रम जैसे मेहंदी, रंगोली एवं सलाद सजावट आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। जिसमें बहुत अधिक संख्या में महिला रेलकर्मियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। महिलाओं का उत्साह बढ़ाने के लिए उन्हें पुरस्कृत कर सम्मानित भी किया गया। इस कार्यक्रम में पश्चिम मध्य रेल सांस्कृतिक अकादमी द्वारा एक नाटक का मंचन किया गया। इस अवसर पर पश्चिम मध्य रेल मुख्यालय महिला कल्याण संगठन की अन्य सदस्याएं भी उपस्थित रही। ■

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर भारतीय रेल की प्रथम महिला लोको ड्राइवर श्रीमती सुरेखा यादव तथा अन्य महिला स्टाफ द्वारा मुंबई-लखनऊ स्पेशल ट्रेन का संचालन किया गया। इस अवसर पर महिला स्टाफ का अभिवादन करते हुए अधिकारीगण

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की महिला खिलाड़ी ने जीता सीनियर नेशनल पावर लिफ्टिंग चैम्पिनशीप में गोल्ड मेडल

पावर लिफ्टिंग इंडिया द्वारा सीनियर नेशनल पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप का आयोजन 17 से 21 फरवरी, 2021 को कोयंबटूर में किया गया था। इस नेशनल प्रतियोगिता में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की 56 किलोग्राम वर्ग समूह में जे. रामालक्ष्मी ने स्कॉट 175 किलोग्राम, बेंच प्रेस 115 किलोग्राम तथा डेड लिफ्ट 167.5 किलोग्राम अर्थात् कुल 457.5 किलोग्राम वजन उठाकर अपने वजन वर्ग समूह में स्वर्ग पदक प्राप्त की है। आयरन वुमैन रामालक्ष्मी भारतीय रेल सहित सीनियर नेशनल पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का नाम रौशन कर मेडल दिला रही हैं। वहीं भारतीय रेल की टीम में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की महिला खिलाड़ी सन्तोषी मांझी को रिजर्व खिलाड़ी में रखा गया था। सन्तोषी मांझी दो बच्चों की माँ हैं एवं भारतीय रेल की प्रथम महिला बॉडी बिल्डर भी हैं, जो अन्तराष्ट्रीय बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में रेलवे का नाम रौशन कर चुकी हैं। दोनों महिला खिलाड़ी दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर रेल मंडल में कार्यरत हैं। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महिला खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर महाप्रबंधक सहित अन्य अधिकारियों ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। ■

इंटर-क्लब टेनिस ओपन टूर्नामेंट का आयोजन

दिनांक 28 फरवरी, 2021 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे खेल संघ के तत्वावधान में एक दिवसीय बिलासपुर इंटर-क्लब टेनिस ओपन टूर्नामेंट का आयोजन नॉर्थ ईस्ट इंस्टीट्यूट टेनिस कोर्ट, बिलासपुर में किया गया, जिसमे साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल), एनटीपीसी, बिलासपुर क्लब एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे - इन चार टीमों ने भाग लिया। इस टूर्नामेंट का मूल उद्देश्य खेल के साथ अपने प्रमुख उपभोक्ताओं के साथ व्यावसायिक संबंधों को मजबूती प्रदान करना था। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक, श्री गौतम बनर्जी ने इस टूर्नामेंट का उद्घाटन किया। मंडल रेल प्रबंधक/बिलासपुर श्री आलोक सहाय, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक, श्री एन.डी.राव, सचिव, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, श्री हिमांशु जैन, उप महाप्रबंधक (सा.), श्री कन्हैया गोयल आदि उपस्थित रहे।

अपर महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार एवं प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं अध्यक्ष, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे खेल संघ, श्री सुखबीर सिंह द्वारा विजेता टीम एनटीपीसी को रनिंग ट्रॉफी प्रदान की गई। अन्य सभी प्रतिभागी टीम के खिलाड़ियों को एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे खेल संघ एवं नॉर्थ ईस्ट इंस्टीट्यूट के सहयोगी कर्मियों को भी स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। ■

नई दिल्ली में आयोजित विश्वकप निशानेबाजी प्रतियोगिता में भारतीय रेल के स्वप्निल कौशल ने 50 मीटर, राइफल थ्री पोजीशन टीम वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया

इटली के मैटियो पैलीकोन में आयोजित रैंकिंग सीरीज टूर्नामेंट में रेलवे की विनेश फोगट ने स्वर्ण पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया। वे वर्तमान में 53 किलो भार संवर्ग में विश्व की नंबर एक पायदान पर हैं।

इटली के मैटियो पैलीकोन में आयोजित रैंकिंग सीरीज टूर्नामेंट में रेलवे के बजरंग पुनिया ने स्वर्ण पदक जीतकर भारतवर्ष को गौरवान्वित किया। वे वर्तमान में 65 किलो भार संवर्ग में विश्व के नंबर एक पायदान पर हैं।

भारतीय रेल की खिलाड़ी अन्नू रानी ने 63.24 मीटर भाला फेंककर अपना ही पुराना राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़ा

नई दिल्ली में आयोजित विश्वकप निशानेबाजी प्रतियोगिता में भारतीय रेल की श्रेया सक्सेना ने राइफल थ्री महिला टीम वर्ग में रजत पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया

भारतीय रेल की खिलाड़ी कमल प्रीत ने 15 से 19 मार्च के बीच पटियाला, पंजाब में आयोजित 24वें राष्ट्रीय फेडरेशन कप में डिस्कस थ्रो में 65.06 मीटर डिस्क फेंककर न सिर्फ राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़ा बल्कि ओलंपिक के लिए क्वॉलिफाई भी किया

बीसीसीआई द्वारा राजकोट में आयोजित सीनियर एक दिवसीय ट्राफी को भारतीय रेल ने झारखंड को 7 विकेट से हराकर जीता।

भारतीय रेल की दक्षिण पूर्व रेलवे की सुतिर्था मुखर्जी ने टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वॉलिफाई कर लिया है।

सिकंदराबाद में आयोजित 72वीं नेशनल ट्रैक साइक्लिंग चैंपियनशिप को भारतीय रेल की महिला टीम ने जीतकर धूम मचा दी।

31 मार्च से 4 अप्रैल के बीच जयपुर, राजस्थान में आयोजित 66वीं सीनियर नेशनल बाल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2020-21 भारतीय रेल की टीम ने जीती।

आप सब का
भारतीय रेल
के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

'भारतीय रेल'

में प्रकाशित करेंगे

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पसंद किए गए लेख की जानकारी ई-मेल से दी जाएगी। प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

शर्तें लागू

पश्चिम मध्य रेल ने जीडी-जीक्यू रूट की गति को 130 केएमपीएच करने के लक्ष्य को 1 वर्ष पहले ही प्राप्त किया

सेक्शनल गति बढ़ाना भारतीय रेल का हमेशा से एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य रहा है, क्योंकि यह कई क्षेत्रों, जैसे कि मार्गों की गतिशीलता, सेक्शनों की क्षमता एवं उच्च गति हेतु यात्री अपील की मांग को पूरा करता है। सेक्शनल गति में वृद्धि समग्र रेलवे उत्पादकता, परिचालन दक्षता और परिसंपत्तियों के उपयोग के प्रमुख संकेतकों में से एक है। इस प्रकार, पश्चिम मध्य रेल ने 2020-21 में जीडी-जीक्यू ग्रुप 'ए' मार्ग अर्थात् दिल्ली मुंबई कॉरिडोर पर मथुरा-नागदा सेक्शन और दिल्ली-चेन्नई कॉरिडोर पर बीना-इटारसी सेक्शन में 130 किमी प्रति घंटे तक की सेक्शनल गति में वृद्धि की चुनौती स्वीकार की।

पश्चिम मध्य रेलवे ने मौजूदा परिसंपत्तियों की योजना बनाने/ उपयोग करने, सेक्शनों के घुमावदार मोड़ में सुधार और अपग्रेड करने, ट्रैक रखरखाव में अपग्रेडेशन की निगरानी और उच्च गति संचालन में जोखिम कम करने की बहु-स्तरीय रणनीति के साथ इस क्षेत्र में कदम रखा। इस रणनीति को आवश्यकतानुसार दोनों सेक्शनों में निर्बाध रूप से कार्यान्वित किया गया।

मथुरा-नागदा सेक्शन में अप और डाउन, दोनों दिशाओं में 545 किमी के ट्रैक को टैम्पिंग ऑफ ट्रैक एंड टर्नआउट, जीपीएस आधारित ओएमएस रन, ऑस्लिोग्राफ रन, रूट प्रूविंग रन और सीओसीआर रन के माध्यम से ट्रैक मेंटेनेंस और मॉनिटरिंग में अपग्रेड किया गया। 200 से अधिक घुमावदार मोड़ों को ऑन ट्रैक ट्रैकिंग मशीन एवं मोड़ों में सटीक मॉडिफिकेशन के माध्यम से सुपर ऐलीवेशन और ट्रांजिशन डिजाइन में अपग्रेड किया गया। अनधिकृत प्रवेश पर अंकुश लगाने के लिए बाउण्ड्री वॉल/फेंसिंग का निर्माण किया गया। इन सभी को एक सुदृढ़ ट्रैक मैनेजमेंट सिस्टम के साथ जोड़ा गया, जो नियमित रूप से सुरक्षा से संबंधित यूएसएफडी और निरीक्षण अनुसूचियों को अपडेट करता है। पश्चिम मध्य रेलवे ने इस अवसर का सफलतापूर्वक लाभ उठाते हुए मई 2020 में सेक्शन की गति 130 किमी प्रति घंटा तक अपग्रेड कर दिया, जिससे परिचालन समय में कुल 92 मिनट की बचत हुई। फलस्वरूप, ट्रेनों की क्षमता तथा गतिशीलता दोनों में वृद्धि हुई। इसके बाद, तेज रफ्तार और हाई स्पीड चार्ट के कारण ट्रांजिट समय में कमी के लाभ को देखते हुए हाई स्पीड लोको वाली कई एलएचबी गाड़ियों को भी सेक्शन में 130 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलाने की अनुमति दी गई।

इसी प्रकार से बीना-इटारसी रेलखंड के बीना-भोपाल सेक्शन में अप, डाउन, मध्य लाइन तथा भोपाल-इटारसी सेक्शन में अप तथा डाउन में 233 किमी ट्रैक अपग्रेड किया गया। हालाँकि इस सेक्शन में अपग्रेडेशन का यह कार्य और भी चुनौतीपूर्ण था। 400 से अधिक घुमावदार मोड़ अपग्रेड किए गए तथा उच्च गति के संचालन की जरूरतों को पूरा करने के लिए 40 किमी की बाउण्ड्री वॉल/फेंसिंग बनाई गई। कमजोर फॉर्मेशन, मेन लाइन प्लेटफॉर्म और घाट सेक्शन के अतिरिक्त समस्याओं को पीएसआर में शामिल किया गया, जो इन अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्रों में संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त उपाय प्रदान करते हैं। इस प्रकार पश्चिम मध्य रेल ने दिसंबर 2020 में बीना-इटारसी सेक्शन में भी सेक्शनल गति बढ़ाने में सफलता प्राप्त की। फलस्वरूप, इस सेक्शन में ट्रेन परिचालन समय में कुल 52 मिनट की समय का बचत हुई। यह उपलब्धि रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित दिसंबर 2021 के लक्ष्य से एक वर्ष पहले यानी दिसंबर 2020 में ही हासिल कर ली गई।

इसके साथ ही पश्चिम मध्य रेलवे भारतीय रेल पर अपने सभी ग्रुप 'ए' मार्गों पर 130 किमी प्रति घंटे तक की गति बढ़ाने वाला पहला रेल जोन बन गया। उपरोक्त दो मार्गों के अलावा इस वर्ष कई अन्य सेक्शनों की भी सेक्शनल गति बढ़ाई गई। फलस्वरूप, पश्चिम मध्य रेलवे ने 2020-21 में 778 किमी के लक्ष्य के मुकाबले 873 किमी की गति में वृद्धि की एक आश्चर्यजनक उपलब्धि हासिल की।

इस कोविड-19 महामारी के कठिन समय में पश्चिम मध्य रेलवे ने काम और निगरानी के नए तरीके सीखकर और अपना कर उक्त असाधारण उपलब्धि को हासिल किया जो श्री एस. के. सिंह, महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे के मार्गदर्शन में तथा कोटा एवं भोपाल मंडल में कार्यरत कर्मियों के नेतृत्व में इंजीनियरिंग विभाग की व्यावसायिक प्रतिबद्धता और योग्यता को दर्शाता है। पश्चिम मध्य रेल आगामी वर्षों में और अधिक परिश्रम करेगी और ग्रुप 'बी' मार्गों में भी गति सीमा बढ़ाएगी। ■

मुंबई-नागपुर हाईस्पीड रेल कॉरिडोर की परियोजना रिपोर्ट हेतु लीडार सर्वेक्षण शुरू

मुंबई-नागपुर हाईस्पीड रेल कॉरडोर (लगभग 736 किमी) की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने हेतु लीडार सर्वेक्षण 11 मार्च से शुरू हुआ, जिसमें अत्याधुनिक एरियल लीडार और इमेजरी सेंसर से लैस एक हेलिकॉप्टर ने पहली बार उड़ान भरते हुए जमीनी सर्वे करते हुए सर्वेक्षण से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण आंकड़ों को कैप्चर किया।

नेशनल हाई स्पीड रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड लाइट डिटेक्शन एंड रेजिंग सर्वे (लीडार) तकनीक को अपना रहा है, जो तीन से चार माह में सभी जमीनी विवरण और डेटा मुहैया कराती है, जबकि सामान्य रूप से इस कार्य में 10 से 12 माह का समय लगता है।

जमीनी सर्वेक्षण किसी भी अवसंरचना परियोजना के लिए बेहद जरूरी है क्योंकि इस सर्वेक्षण से संरेखण के आसपास के क्षेत्रों का सटीक विवरण मिलता है। इस तकनीक में सटीक सर्वेक्षण डाटा पाने के लिए लेजर डेटा, जीपीएस डेटा, फ्लाईट मापदंडों और वास्तविक तस्वीरों का उपयोग किया जाता है।

एरियल लीडार सर्वेक्षण के दौरान, प्रस्तावित संरेखण के आसपास के 150 मीटर क्षेत्र पर सर्वेक्षण किया जा रहा है। आंकड़ों के संग्रह के बाद, गलियारे के लिए परियोजना प्रभावित भूखंडों/ संरचनाओं की पहचान राइट ऑफ वे आदि के लिए ऊर्द्धाधर एवं क्षैतिज संरेखण का डिजाइन, संरचना, स्टेशनों व डिपो का स्थान, आवश्यक भूमि के लिए 1:2500 के पैमाने पर

प्रस्तावित संरेखण के कॉरिडोर के तीन आयामी (3डी) स्थलाकृतिक मानचित्र उपलब्ध होंगे। संरचनाओं, पेड़ों और अन्य विवरणों के स्पष्ट तस्वीर प्रदान करने के लिए, लीडार सर्वेक्षण के लिए 100 मेगापिक्सेल कैमरों का उपयोग किया जा रहा है।

एनएचएसआरसीएल को सात हाई स्पीड कॉरिडोर की परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का जिम्मा सौंपा गया है। इन कॉरिडोरों के जमीनी सर्वेक्षण हेतु लीडार तकनीक का उपयोग किया जाएगा। मुंबई नागपुर एचएसआर कॉरिडोर की प्रस्तावित योजना मुंबई शहर को नागपुर, खापरी डिपोर्ट, वर्धा, पुलगांव, कारंजालाड, मालेगाँव जहाँगीर, मेहकर, जालना, औरंगाबाद, शिरडी, नासिक, इगतपुरी, शाहपुर जैसे शहरों / कस्बों से जोड़ेगी। ■

पश्चिम मध्य रेल के कोटा मंडल में नए कोचों को अधिकतम 180 केएमपीएच की गति का परीक्षण

भारतीय रेल मंत्रालय के मार्गदर्शन में अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन, लखनऊ के द्वारा तैयार किए गए नये यात्री कोच वातानुकूलित तृतीय श्रेणी इकोनॉमी कोचों को अधिकतम 180 किमी प्रति घंटा की गति का ट्रायल किया गया।

अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन की विशेषज्ञ टीम ने दिनांक 24 से 28 फरवरी कुल पांच दिन तक कोटा मंडल के नागदा-कोटा-सवाई माधोपुर खंड पर इन नये कोचों को 180 किमी प्रति घंटा की अधिकतम गति पर चलाया गया। दिनांक 26 फरवरी को मंडल के कोटा-लावान खंड के अप एवं डाउन ट्रैक पर भी इन वातानुकूलित तृतीय श्रेणी इकोनॉमी कोचों का अधिकतम गति पर सफल परिचालन किया गया। ट्रायल पूर्ण रूप से सफल रहा और उक्त कोचों ने अधिकतम 180 किमी प्रति

घंटा की स्पीड पर अपनी यात्रा सुगमतापूर्वक पूर्ण की।

वातानुकूलित तृतीय श्रेणी इकनॉमी कोच को कपूरथला रेल कोच फैक्ट्री में तैयार किया गया है। इन नए कोचों में यात्रियों के लिए 83 बर्थ की व्यवस्था की गई है। इन कोचों को शानदार फिनिशिंग एवं आधुनिक सुविधाओं से लैस किया गया है। इसमें फायर अलार्म सिस्टम की व्यवस्था भी है।

इन कोचों के सफल परीक्षण के पश्चात् रेल मंत्रालय भविष्य में इन वातानुकूलित तृतीय श्रेणी इकोनॉमी कोचों को शीघ्र ही ट्रैक पर चलाया जायेगा। इस परीक्षण से ट्रैक पर अधिकतम गति से ट्रेन दौड़ाने में कोटा मंडल के ट्रैक की उत्कृष्टता भी साबित हुई जो कि पश्चिम मध्य रेल के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। ■

किसान रेल से फूलों की खेती करने वाले किसानों की आमदनी बढ़ी

भारतीय रेल की किसान रेल से 9 मार्च 2021 को महाराष्ट्र के लातूर और उस्मानाबाद क्षेत्र के छोटे किसानों ने पहली बार कुर्दुवाडी स्टेशन से आदर्श नगर, दिल्ली तक 650 किलोग्राम फूलों का लदान किया, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है।

ये फूल उस्मानाबाद जिले के पडोली, वाघोली, टेर, पनवाड़ी और उपला गाँव और लातूर जिले के मुरुड में उगाए गए थे, जिन्हें महाराष्ट्र के सूखा प्रभावित क्षेत्रों के रूप में जाना जाता है। एक / दो एकड़ जमीन रखने वाले छोटे किसान, किसान रेल के माध्यम से सबसे अधिक खराब होने वाले फूलों के त्वरित और सस्ते परिवहन के साथ नए बाजार तक पहुंचते हैं, जिससे उन्हें अधिक कीमत मिलती है। दुमला, उस्मानाबाद, महाराष्ट्र के एक छोटे किसान श्रीधर भीमराव काले बहुत उत्साहित थे, कि फूलों को अब जल्दी और कम लागत पर बाजार में पहुँचाया जाता है और बहुत ही लाभदायक मूल्य पर बेचा जाता है। भारतीय रेल द्वारा शुरू की गई किसान रेल महाराष्ट्र के किसानों के जीवन को बदल कर ,खुशहाली ला रही है, जिससे उन्हें पेरिशेबल सामान (फल और सब्जियां) की निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला और साथ ही सोलापुर, अहमदनगर, कलबुरगि से इस महामारी के दौरान आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के माध्यम से अपनी आय बढ़ाने में सक्षम बनाया गया

है। लातूर, उस्मानाबाद, नासिक, जलगाँव, अमरावती और महाराष्ट्र के नासिक जिले उत्तर भारत के विभिन्न नए बाजारों और दिल्ली एनसीआर, बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र जैसे पूर्वी भागों में हैं। 12 मार्च 2021 तक, महाराष्ट्र से 61,252 टन पेरीशबल्स खेत की उपज किसान रेल की 200 ट्रिप्स के माध्यम परिवहन किया गया था, जिससे बड़ी संख्या में सीमांत किसान लाभान्वित हुए ■

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर नए दिशात्मक संकेत

यात्रियों की सुविधा के लिए मध्य रेल के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस में हाल ही में प्लेटफॉर्म नंबर संकेत और दिशा-निर्देश बोर्ड उपलब्ध कराए गए हैं। उपनगरीय और लंबी दौड़ वाली ट्रेनों में प्लेटफॉर्म नंबर दिखाने वाले बड़े फॉण्ट हैं, जिससे यात्री आसानी से प्लेटफॉर्म को लंबी दूरी से समझ सकते हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से प्रतिदिन लाखों यात्री ट्रेन से यात्रा करते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस के उपनगरीय क्षेत्र में 1 से 7 प्लेटफॉर्म हैं और तीन दिशा मंडल हैं। इसके अलावा, स्टेशन पर इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन, एस्केलेटर, बैगेज सैनिटाइजर मशीन आदि उपलब्ध कराए गए हैं। ■

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे : स्काउटिंग के जन्मदाता लॉर्ड बेडेन पावेल का जन्म दिन मनाया गया

सत्या ओपन ग्रुप द्वारा 22 फरवरी को 'चिंतन दिवस' के रूप में स्काउटिंग के जन्मदाता लॉर्ड रॉबर्ट स्टेफेन समिट बेडेन पावेल का जन्मदिन मनाया गया। यह दिन स्काउटिंग गाइडिंग के सदस्यों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिन रहता है।

इस अवसर पर सर्वधर्म एवं स्काउट गाइड्स रोवर्स एवम रेंजर के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

किया गया और साथ ही नुक्कड़ नाटक एवं नृत्य का भी आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि सहायक कार्मिक अधिकारी एवं सहायक जिला आयुक्त (कब) बिलासपुर मंडल श्री यू. शिव शंकर राव, जिला संगठन आयुक्त बिलासपुर मंडल श्री दिलीप स्वाइन, जिला सचिव श्री बिलासपुर मंडल संजय मेश्रम उपस्थित थे। ■

उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा फ्लॉवर शो का आयोजन

उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन ने सरोजनी नगर नर्सरी, नई दिल्ली में 66वें अंतर मंडलीय फ्लॉवर शो का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन संगठन की अध्यक्षा श्रीमती शिखा गंगल ने किया। इस शो में लखनऊ, मुरादाबाद, अम्बाला, फिरोजपुर और दिल्ली मंडलों के साथ-साथ निर्माण विभाग ने भी सुंदर पौधों और पुष्पों के साथ भाग लिया। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री आशुतोष गंगल, दिल्ली मंडल के रेल प्रबंधक, श्री एस.सी. जैन तथा उत्तर रेलवे मुख्यालय व मंडलों के अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। इस शो में साल्विया, क्लार्किया, वॉइला, सुन्दरिया तथा अन्य अनेक प्रकार के पुष्पों का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने कहा कि हम सबको पर्यावरण को और बेहतर बनाने के प्रयास करने चाहिए। ■

मंडल अस्पताल, दिल्ली में 3डी ऑगमेंटिड टोटल नी-रिप्लेसमेंट किया गया

उत्तर रेलवे मंडल अस्पताल, दिल्ली में 3डी ऑगमेंटिड टोटल नी-रिप्लेसमेंट किया गया। यह एक नवीनतम और स्वदेशी तकनीक है। इसमें पहले सीटी स्कैन की मदद से घुटने का 3डी मॉडल तैयार किया जाता है। इसके बाद रोगी की सर्जरी करने से पहले कम्प्यूटर पर उसकी आभासी सर्जरी की जाती है और सर्जन प्रत्येक रोगी के सटीक आंकड़ों और सूचनाओं को एकत्रित करता है। इस विधि द्वारा-प्री-ऑपरेटिव

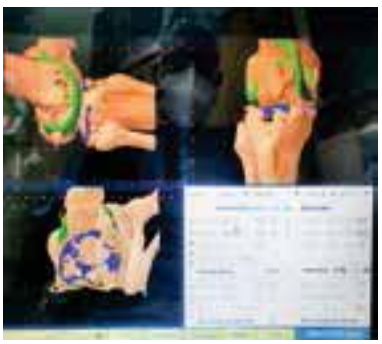

इंप्लांट का आकार और मरीज के लिए कौन सी कंपनी का प्रत्यारोपण सबसे उपयुक्त है, उसे चुना जा सकता है। कोण की गणना के लिए फीमर हड्डी के अंदर रॉड नहीं बदली जाती है क्योंकि यह 3 डी मॉडल पर पहले से ही कर ली जाती है, इसलिए परंपरागत पद्धति की तुलना में फैट इम्बॉलिज्म और रक्त की हानि की संभावना कम होती है। जल्दी रिकवरी होती है। यह लागत अनुकूल है क्योंकि यह रीयूजेबल और कस्टमाइज जिग प्रणाली है। ■

दक्षिण मध्य रेलवे महाप्रबंधक, द्वारा माल डिब्बा कारखाने, रायानापडू का निरीक्षण

श्री गजानन मल्लया, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे ने 17 फरवरी, 2021 को माल डिब्बा कारखाने, रायानापडू का वार्षिक निरीक्षण किया। उनके साथ श्री जे.के. जैन प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर और अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। निरीक्षण के पश्चात महाप्रबंधक ने सीसीटीवी मॉनीटरी कक्ष, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, महिला विश्राम कक्ष, पर्यवेक्षक बैठक हॉल, फ्लेक्सिबल रोलर कन्वेयर, लिक्विड एक्सट्रैक्टर ऑप्टिकल स्पेक्ट्रोमीटर तथा केंद्रीय निरीक्षण कक्ष का उद्घाटन भी किया और एक नए शेड की आधारशिला रखी। उन्होंने कटलैर में निर्माणाधीन बड़े पुल की प्रगति का निरीक्षण किया और उसकी समीक्षा की तथा कोंडपल्ली-काजीपेट सेक्शन के बीच पिछली खिड़की निरीक्षण किया। महाप्रबंधक ने कोंडपल्ली-डोर्नकल सेक्शन के बीच तीसरी लाइन कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया। ■

तेलंगाना की पहली किसान रेल वारंगल से आरंभ

दक्षिण मध्य रेलवे ने तेलंगाना राज्य से 8 फरवरी, 2021 को अपनी पहली किसान रेल सिकंदराबाद मंडल के वारंगल स्टेशन से हल्दी के लदान के साथ शुरू की गई। 10 पार्सल वैनों में 230 टन सूखी हल्दी का लदान करके पश्चिम बंगाल में सियालदह मंडल के बारासात स्टेशन तक परिवहन किया जा रहा है।

वरंगल जिला कृषि उत्पादों, विशेषकर व्यावसायिक फसलों की खेती का केंद्र है। अब तक यह कृषि उत्पाद सड़क माध्यम से वारंगल से देश के विभिन्न हिस्सों तक परिवहन किया जा रहा था। इसे दूर करने के लिए, सिकंदराबाद मंडल के माल लदान दल ने किसानों/व्यापारिक समुदाय के साथ नियमित रूप से बैठकें कीं और उन्हें किसान रेल से अपनी उपज का लदान करने पर मिलने वाले दर लाभ और तेज परिवहन के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर श्री गजानन मल्लया, महाप्रबंधक, ने किसानों और व्यापारियों को यह आश्वासन दिया कि रेलवे उनकी उपज का परेशानी मुक्त परिवहन करने में पूरी तरह सहायता करेगी। ■

आरडीएसओ में 65वें रेल सप्ताह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

दिनांक 17 मार्च, 2021 को आरडीएसओ में 65वें रेल सप्ताह समारोह का आयोजन अधिकारियों और कर्मचारियों के सीमित संख्या एवं कोविड-19 के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए किया गया। श्री वीरेन्द्र कुमार, महानिदेशक, आरडीएसओ ने उत्कृष्ट और सराहनीय सेवाओं के लिए 53 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री ए. के. पांडेय, महानिदेशक विशेष (वेंडर विकास), श्री रमेश पिंजानी, एडीजी/आरडीएसओ एवं कई अन्य अधिकारी और कर्मचारी वेबकास्ट के माध्यम से समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर महानिदेशक द्वारा चल दक्षता शील्ड में मोस्ट क्लीन आफिस के लिए इंजन विकास एवं यूटीएचएस

निदेशालय को संयुक्त रूप से प्रदान की गई, सिग्नल लैब को मोस्ट क्लीन प्रयोगशाला के लिए प्रदान की गई तथा बेस्ट रिसर्च प्रोजेक्ट शील्ड मनो-तकनीकी निदेशालय को प्रदान की गई। ■

पूर्वोत्तर रेलवे पर रेल सप्ताह पुरस्कार वितरण समारोह में 105 रेलकर्मी सम्मानित

65वें रेल सप्ताह समारोह के अवसर पर 12 फरवरी, 2021 को आयोजित रेल सप्ताह पुरस्कार वितरण समारोह में पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने विभिन्न विभागों के 105 रेलकर्मियों को उनकी विशिष्ट एवं उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रशस्ति-पत्र, मेडल एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। श्री त्रिपाठी ने विभिन्न कैटेगरी में अन्तर्मंडलीय कार्यकुशलता शील्ड एवं ट्राफियां भी प्रदान कीं। अन्तर्मंडलीय सर्वांगीण कार्यकुशलता शील्ड लखनऊ मंडल को प्रदान की गई। पुरस्कार वितरण के पूर्व, पूर्वोत्तर रेलवे कला समिति के कलाकारों द्वारा मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर श्रीमती मीना त्रिपाठी, अध्यक्ष, पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन एवं सदस्यायें, अपर महाप्रबंधक श्री अमित कुमार अग्रवाल, सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष, मुख्यालय के वरिष्ठ रेल अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिवार

के सदस्य तथा मंडलों में वीडियो लिंक के माध्यम से जुड़े मंडल रेल प्रबंधक, शाखा अधिकारी तथा पुरस्कार प्राप्तकर्मी तथा परिवार जन उपस्थित थे।। ■

एडवांस वेपन प्रशिक्षण सिम्यूलेटर का उद्घाटन

महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने 22 फरवरी, 2021 को द्वितीय वाहिनी रेलवे सुरक्षा विशेष बल, रजही कैम्प, गोरखपुर के प्रांगण में नवनिर्मित 'एडवांस वेपन प्रशिक्षण सिम्यूलेटर' का उद्घाटन किया। इस सिम्यूलेटर केन्द्र से प्रशिक्षुओं को भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में कार्य करने, अपराधों, आतंकवादी घटनाओं सहित अनेक तरह की चुनौतियों से निपटने का कुशल प्रशिक्षण प्राप्त होगा।

रेलवे सुरक्षा विशेष बल के कमाण्डेंट श्री अनिरुद्ध चौधरी ने बताया कि इस वेपन ट्रेनिंग सिम्यूलेटर पर 5.66 एम.एम. इन्सास, 6.62 एम.एम. एस.एल.आर., 7.62 एम.एम. एआरएम, 9 एम.एम. एमपी-5, 9 एम.एम.ग्लाक-17 पिस्टल, 5.56 एम.एम. एलएमजी का प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह सिस्टम विभिन्न प्रकार के टारगेट तथा टेक्निकल फायरिंग की सुविधा से युक्त है।

इसके पूर्व, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे को 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया गया। प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री अतुल कुमार श्रीवास्तव ने महाप्रबंधक को स्मृति चिन्ह प्रदान किया। ■

टीकाकरण बूथ का उद्घाटन

महाप्रबंधक, श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने 28 जनवरी, 2021 को ललित नारायण मिश्र केन्द्रीय रेलवे चिकित्सालय, में कोविड-19 से बचाव हेतु को-वैक्सीन टीकाकरण बूथ का उद्घाटन किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने प्रभारी चिकित्सा निदेशक डॉ. दीपांकर चौरसिया को को-वैक्सीन की उपलब्धता सुनिश्चित करने, उसे लगाये जाने वाले कर्मियों के वैक्सीनेशन के उपरान्त कोई आपात स्थिति आने पर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराये जाने का निर्देश दिया। अपर मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. नन्द किशोर ने बताया कि राज्य सरकार के सहयोग से टीकाकरण हेतु रेलवे अस्पताल में दो बूथ लगाए गए हैं। ■

पूर्व मध्य रेलवे : महाप्रबंधक ने किया धनबाद मंडल का निरीक्षण

पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक ने 17 फरवरी, 2021 को धनबाद मंडल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने धनबाद-पाथरडीह रेलखंड के विभिन्न स्टेशनों, रिले रूम, कोचिंग डिपो आदि का निरीक्षण किया।

महाप्रबंधक द्वारा सर्वप्रथम धनबाद स्टेशन पर क्विक वॉटरिंग सिस्टम की भी शुरुआत की गई, साथ ही पाथरडीह यार्ड रिमॉडलिंग कार्य आदि का गहन निरीक्षण किया गया। महाप्रबंधक ने मोटर ट्रॉली द्वारा ओवर हेड वाय (विद्युतीकृत रेल खंड) में अवस्थित पूर्व मध्य रेल के अंतिम सेमाफोर सिग्नल का भी मुआयना किया। निरीक्षण के दौरान धनबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री आशीष बंसल उपस्थित थे।

महाप्रबंधक ने अति महत्त्वपूर्ण पाथरडीह यार्ड रिमॉडलिंग

कार्य का विशेष मुआयना किया तथा धनबाद के कोचिंग डिपो का गहन निरीक्षण किया। इसी क्रम में उन्होंने अंडर व्हील लेथ तथा डीवी ओवरचार्जिंग गजट का शुभारंभ किया। ■

उत्तर मध्य रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की 12वीं राज्य परिषद् बैठक सम्पन्न

उत्तर मध्य रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की 12वीं राज्य परिषद की वेबिनार बैठक 8 मार्च, 2021 की वी के त्रिपाठी, संरक्षक एवं महाप्रबंधक उमरे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

राज्य मुख्य आयुक्त एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री नवीन कुमार सिन्हा ने संगठन के उल्लेखनीय कार्यों को रेखांकित किया। अपर महाप्रबंधक श्री रंजन यादव ने भी संस्था के कार्यों की सराहना की। तद्उपरांत सभी जिले- प्रयागराज, आगरा एवं झांसी द्वारा आडिट एकाउण्ट रिपोर्ट, पंजीकरण रिपोर्ट एवं वार्षिक कार्यक्रम की रिपोर्ट स्लाइड के माध्यम से प्रस्तुत की गई। राज्य कोषाध्यक्ष द्वारा राज्य मुख्यालय भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के आडिट एकाउण्ट की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। बैठक में राष्ट्रीय मुख्यालय भारत स्काउट्स एवं गाइड्स नई दिल्ली के निर्देशानुसार संरक्षक एवं महाप्रबंधक उमरे द्वारा इस बैठक में सभी के सहमति से भारत स्काउट्स एवं गाइड्स उमरे राज्य के बाई लॉज में संसोधन करने का अनुमोदन अग्रिम कार्रवाई हेतु प्रदान कर दिया।

बैठक में राज्य सचिव, राज्य कोषाध्यक्ष श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह, संयुक्त राज्य सचिव, मुख्यालय आयुक्त एवं सभी जिले प्रयागराज, आगरा, झांसी के जिला मुख्य आयुक्त एवं अपर मण्डल रेल प्रबंधक, जिला आयुक्त(स्काउट/गाइड) तथा मुख्यालय के राज्स संगठन आयुक्त व राज्य प्रशिक्षण आयुक्त(स्काउट/गाइड) और राज्य परिषद के सभी स्काउट पदाधिकारियों ने भाग लिया। ■

महाप्रबंधक द्वारा कानपुर मेमू शेड का निरीक्षण

उत्तर मध्य रेलवे एवं पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने 06 मार्च को नए मेमू शेड का निरीक्षण किया। इस अवसर मंडल रेल प्रबंधक प्रयागराज मंडल श्री मोहित चंद्रा उपस्थित रहे। महाप्रबंधक को इस नए शेड के विषय में वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर/कोचिंग श्री राम सूरत सिंह ने पॉवर प्वाइंट के माध्यम से अवगत कराया। इस नए शेड में मासिक रूप से 30 मेमू के अनुरक्षण की क्षमता होगी। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने सर्विस शेड में सामानों के मूवमेंट के लिए क्रेनों को लगाने के निर्देश दिए। ज्ञात हो कि इस मेमू शेड को रेल विकास निगम लिमिटेड द्वारा निर्मित किया गया है। ■

पूसी रेल द्वारा गुवाहाटी स्टेशन पर हॉट एक्सल बॉक्स डिटेक्शन सिस्टम की स्थापना

ट्रेन परिचालन में संरक्षा उन्नत करने के लिए पू.सी. रेल ने एक और महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है। गुवाहाटी कोचिंग डिपो ने हाल ही में हॉट एक्सल बॉक्स की खोज में न्यूनतम मानव त्रुटि के लिए गुवाहाटी स्टेशन के दोनों तरफ अप एवं डाउन, दोनों दिशाओं में चार ऑटोमेटिक हॉट एक्सल बॉक्स डिटेक्शन सिस्टम (एचएबीडी) की स्थापना की है। इसके फलस्वरूप, पैसेंजर ट्रेनों के साथ-साथ मालगाड़ियों के सुरक्षित परिचालन सुनिश्चित होगी। बीयरिंगों में विभिन्न प्रकार की त्रुटियों

के कारण परिचालन के दौरान कोचों एवं वैगनों के पहियों के निरंतर चलते रहने के दौरान बीयरिंग्स के व्हील एक्सल बॉक्स का तापमान बढ़ सकता है। अगर इसका पता नहीं चलता है, तो बीयरिंग्स के जलने से इसका तापमान लगातार बढ़ता रहता है, जिसके कारण तेज गति पर चलते समय ट्रेन बेपटरी हो सकती है अथवा बड़ी दुर्घटना घट सकती है।

वर्तमान में, सम्पूर्ण देश के सभी प्रमुख स्टेशनों पर हॉट एक्सल बॉक्स की निगरानी मैनुअली की जाती है। ■

संरक्षा वृद्धि के लिए स्वनिर्मित ट्रॉली माउंटेड रेल लुब्रिकेशन प्रणाली

अलीपुरद्वार मंडल में एक ऑनबोर्ड ट्रॉली ट्रैक लुब्रिकेशन प्रणाली का निर्माण किया गया है, जो रेलों के गेज फेस के लुब्रिकेशन के लिए उपयोग किया जा सकता है। स्प्रिंग्स से लैस यह अटैच-डिटैच उपकरण रेल गेज फेस के साथ संपर्क बनाये रखता है, और एक ग्रीस पंप से जुड़ा होता है, जो ग्रीस को बाहर निकालने के लिए दबाव बनाए रखता है। ग्रीस को एक रबर सामग्री के माध्यम से लगाया जाता है, जो रेल गेज फेस के सीधे संपर्क में है।

पटरियों के गेजफेस लुब्रिकेशन विशेष रूप से मोड़ों में घर्षण को रोकने और रेल पहिया इंटरफेस के बीच रगड़न कम करके ऊर्जा बचाता है और पटरियों का जीवन बढ़ाता है। यह रेल और पहिया फ्लैंग्स पर पार्श्व बलों को भी कम करता है,

जिससे रेल पर पहिया का निकला हुआ किनारा चढ़ाई के कारण पटरी से उतर सकता है। इस उपकरण को टायर के स्क्रैप का उपयोग करके बनाया गया है, जो घर्षण के कारण बहुत अधिक घिसे बिना रेल गेजफेस के निरंतर संपर्क में रह सकता है। ■

पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल में कोविड-19 टीकाकरण केन्द्र का शुभारम्भ

मुंबई सेंट्रल स्थित पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल में कोविड-19 टीकाकरण केंद्र का शुभारम्भ 8 मार्च, 2021 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री आलोक कंसल तथा पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती तनुजा कंसल की गरिमापूर्ण उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। महाप्रबंधक श्री कंसल ने वैक्सीन की अपनी पहली खुराक भी प्राप्त की। इस टीकाकरण केन्द्र का निरीक्षण बृहन्मुंबई महानगरपालिका के अधिकारियों द्वारा किया गया था, जिसके बाद कोविड-19 के लिए टीकाकरण केंद्र के रूप में इसे मान्यता प्रदान की गई। ■

नव विद्युतीकृत हापा-भाटिया खंड का सफल गति परीक्षण

पश्चिम रेलवे ने राजकोट मण्डल के हापा - भाटिया खंड (109 रूट किमी/ 133 ट्रैक किमी) के विद्युतीकरण कार्य को पूरा किया है। रेल संरक्षा आयुक्त श्री आर.के. शर्मा ने 18 एवं 19 मार्च, 2021 को पूरे खंड का निरीक्षण किया। 19 मार्च, 2021 को इलेक्ट्रिक लोको के साथ गति परीक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री सुमित ठाकुर के अनुसार, रेल संरक्षा आयुक्त (सीआरएस) ने 19 मार्च, 2021 को हापा-कानालूस (कानालुस तक हाई राइज ओएचई) और खंबालिया-भाटिया खंड के नवविद्युतीकरण खंड का निरीक्षण किया और 110 किमी प्रति घंटा की अधिकतम अनुमेय सेक्शनल गति के साथ इस खंड पर गति परीक्षण भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। विद्युतीकरण का कार्य कल्पतरु पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड (केपीटीएल) और राजकोट मण्डल के सहयोग से रेलवे इलेक्ट्रिफिकेशन (आरई) इकाई अहमदाबाद द्वारा किया गया। राजकोट मण्डल के इस खंड में 5 सायडिंग हैं। हापा-भाटिया खंड के विद्युतीकरण कार्य के पूरा होने पर बिजली कर्षण द्वारा कनेक्टिविटी प्रदान होगी जिससे टनेज हॉल्ट में वृद्धि के परिणामस्वरूप रेलवे के राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। ■

चिरेका ने वित्त वर्ष 20-21 स्क्रैप बिक्री से फरवरी तक कमाए 17.73 करोड़ रुपए

चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) ने 21 फरवरी, 2021 तक स्क्रैप बिक्री के माध्यम से 17 करोड़ रुपये के लक्ष्य के मुकाबले 27 फरवरी तक स्क्रैप बेचकर 17.73 करोड़ रुपये कमाए हैं। यह धनराशि वित्तीय वर्ष 2017-18 में आय की तुलना में 64.16% अधिक है। वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान आयोजित विभिन्न ई-नीलामी के दौरान रबर स्क्रैप, कॉपर वायर एंड कटटिंग्स, अल्युमिनियम, लकड़ी स्क्रैप, रेल, स्लीपर, फैरस स्क्रैप, अलौह स्क्रैप आदि के रूप में उत्पन्न लगभग 6,022 मीट्रिक टन स्क्रैप का निपटान किया गया।

श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक, चिरेका ने कहा कि स्क्रैप बिक्री से जहां आर्थिक मजबूती मिली, वहीं चिरेका प्रांगण को अधिक स्वच्छ और विशाल बनाए रखने में भी सहयोग मिला है। ■

350वां रेल इंजन रवाना

सर्वाधिक रेल इंजन उत्पादन क्षेत्र में विश्व में सर्वश्रेष्ठ भारतीय रेल की सहायक इकाई चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना (चिरेका) ने रेल इंजन निर्माण कार्य क्षमता को कायम रखते हुए अब तक 350 रेल इंजनों का उत्पादन करने में सफलता हासिल की है। चिरेका द्वारा वर्तमान वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान मात्र 248 कार्य दिवसों में अबतक 350वें रेल इंजन का उत्पादन कार्य सफलतापूर्वक कर लिया गया है। इस उपलब्धि के लिए श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक, चिरेका ने पूरे चिरेका परिवार को बधाई दी। ■

एमसीएफ में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

एमसीएफ खेल-कूद संघ ने 30 से 31 जनवरी तक आवासीय परिसर में कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को शारीरिक तथा मानसिक रूप से मजबूत बनाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। इस अवसर पर महिलाओं के लिए रस्साकसी प्रतियोगिता, कर्मचारियों एवं बच्चों के लिए लांग जम्प, दौड़ एवं गोला फेंक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी विजेताओं को महाप्रबंधक महोदय के द्वारा पुरस्कृत किया गया। ■

एमसीएफ : नवीनीकृत पुस्तकालय का शुभारंभ

एमसीएफ में 01 फरवरी, 2021 को महाप्रबंधक श्री विनय मोहन श्रीवास्तव द्वारा नवीनीकृत राजभाषा पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्य सतर्कता अधिकारी सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एम. के. अग्रवाल, राजभाषा अधिकारी श्री संजय निगम भी मौजूद रहे। इस अवसर पर हरिद्वार से पधारे गायत्री परिवार के प्रान्तीय प्रतिनिधि, श्री संजय कुमार ने एमसीएफ महाप्रबंधक, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी को 70 पुस्तकों का एक सेट भेंट किया जिनको महाप्रबंधक द्वारा पुस्तकालय में स्थापित किया गया। ■

आरसीएफ ने तैयार किया कम समय तथा कम लागत में एक और शेल असेंबली जिग

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में लगातार बढ़ रहे कोच उत्पादन के मद्देनजर रेल डिब्बे की शेल असेम्बलिंग हेतु एक और जिग का निर्माण कर किया गया है, जिसका उद्घाटन महाप्रबंधक श्री रवींद्र गुप्ता द्वारा किया गया। इस मौके पर आरसीएफ के शीर्ष अधिकारी, सुपरवाइजर्स और स्टाफ उपस्थित थे।

इस जिग की स्थापना से शेल निर्माण के लिए जिगों की संख्या 13 हो गई है। टूल रूम शॉप द्वारा निर्मित इस जिग में कई ऐसी विशेषतायें हैं जो पुरानी जिगों के मुकाबले इसे विशेष बनाती है। इस जिग को बनाने में मात्र 2.5 महीने का समय लगा और इसकी लागत अन्य स्थापित जिगों से काफी कम आई है। यह ध्यान रहे की आरसीएफ में पिछले वर्ष भी जनवरी और जुलाई माह में टूल रूम शॉप ने वर्कशॉप में दो जिगों का निर्माण कर स्थापित किया था। आरसीएफ में स्थापित अन्य 10 जिगें बाहरी ट्रेड से मंगवा कर लगाई गईं थीं। इन नए जिगों की गुणवत्ता तथा सटीकता पुराने जिगों से बेहतर है। इस जिग में कई तकनीकी संशोधन किए गए हैं। जिग की ट्रसलों को हाल्फन चैनल पर लगाया गया है ताकि विभिन्न प्रकार के एलएचबी शेल को बनाने के लिए सुविधानुसार ट्रसलों को आसानी से एडजस्ट किया जा सके। इससे बार बार ट्रसलों में गैर जरूरी बदलाव नहीं करना

पड़ेगा और समय की भी बचत होगी। अंडरफ्रेम को जिग में लोड करते समय सेंटर में रखने के लिए दो ट्रसलों पर गाइड लगाये गए हैं जिससे अंडरफ्रेम लगभग सेंटर में लोड हो जाता है। इस के इलावा दोनों एन्ड ट्रसलों पर नया डिजाइन किया गया पिन लोकेटिंग अरेंजमेन्ट लगाया गया है जिससे अंडर फ्रेम की असेम्बलिंग में सुधार होगा। इसके अतिरिक्त बफर की ऊँचाई की सही पैमाइश के लिए भी विशेष प्रावधान किया गया है। ■

मेट्रो रेलवे : भूमिगत मेट्रो का निर्माण विषय पर तकनीकी संगोष्ठी

दिनांक 27 फरवरी को मेट्रो रेल भवन में 'भूमिगत मेट्रो का निर्माण' विषय पर एक तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री मनोज जोशी ने दीप प्रज्ज्वलित कर इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में श्री जोशी ने आशा व्यक्त की कि यह संगोष्ठी भूमिगत निर्माण के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी देने के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इस संगोष्ठी में मेट्रो रेलवे के वरीय अधिकारीगण उपस्थित थे जिसमें 'टॉप-डाउन कंस्ट्रक्शन एवं कंक्रीट टेक्नोलॉजी', 'दीर्घकालिक विकास हेतु सर्कुलर इकॉनोमी' जैसे तकनीकी मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई। संगोष्ठी के बाद एक तकनीकी प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई। ■

बरेका में आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण कक्ष 'मंथन' का उद्घाटन

बनारस रेल इंजन कारखाना संरक्षा विभाग के तत्वावधान में 50वें राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह के अंतर्गत बरेका कर्मशाला के पूर्वी गेट में दिनांक 08 मार्च को महाप्रबंधक अंजलि गोयल द्वारा नवनिर्मित आपदा प्रशिक्षण केन्द्र 'मंथन' का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने कहा कि बरेका के संरक्षा विभाग सहित रेलवे सुरक्षा बल, नागरिक सुरक्षा संगठन, सेंट जॉन्स एम्बुलेंस ब्रिगेड एवं अन्य संगठन आपदा काल में सदैव तत्पर रहते हैं । बरेका द्वारा बनाए गए 'आपदा प्रबंधन योजना' को राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के विशेषज्ञों द्वारा अनुमोदित किया गया है। इस अवसर पर रेलवे सुरक्षा बल, नागरिक सुरक्षा दल, सेंट जॉन्स एम्बुलेंस ब्रिगेड व स्काउट्स/गाइड्स द्वारा अग्निशमन, राहत एवं बचाव कार्य का सजीव प्रदर्शन किया गया, जिसमें अग्निशमन यंत्रों द्वारा आग पर काबू पाना, घायलों को काफी ऊंचाई से स्ट्रेचर एवं रस्सी तथा बिना पर्याप्त साधनों के नीचे उतारना, उनका प्राथमिक उपचार करना, दुर्घटना स्थल से घायलों को चिकित्सा हेतु स्थानान्तरित करने हेतु विभिन्न विधियों जैसे स्ट्रेचर ड्रिल, त्रिहत्था आसन, दोहत्था आसन, बिफोर एण्ड आफ्टर विधि, फायर मैन लिफ्ट तथा मानव बैसाखी आदि का प्रदर्शन किया गया। आयोजित कार्यक्रमों की शृंखला में कर्मशाला परिसर स्थित भंडार एवं डिपो में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संरक्षा शपथ, संरक्षा उपकरणों के प्रयोग तथा अग्निशमन पर प्रशिक्षण दिया गया। ■

200वां विद्युत रेल इंजन राष्ट्र को समर्पित

महाप्रबन्धक अंजलि गोयल की उपस्थिति में 31 दिसम्बर को न्यू लोको टेस्ट शॉप में आयोजित एक समारोह में बनारस रेल इंजन कारखाने द्वारा निर्मित 200वें विद्युत रेल इंजन WAP-7 'आशाकिरण' को सेवानिवृत्त होने वाले बरेका के दो कर्मचारियों द्वारा हरी झण्डी दिखाकर राष्ट्र की सेवा में समर्पित किया।

इस अवसर पर महाप्रबन्धक ने कहा कि बरेका के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कड़ी मेहनत एवं लगन से इस वित्तीय वर्ष के 255 विद्युत रेल इंजनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए कोविड-19 और लॉकडाउन होने के बावजूद सिर्फ 187 कार्यदिवसों में 200 विद्युत रेल इंजनों का निर्माण कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

कोविड-19 के कारण जो उत्पादन की क्षति हुई थी, न केवल उसे पूरा किया बल्कि पिछले वर्ष की तुलना में 5 अतिरिक्त इंजनों का निर्माण किया है। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त 200वें यात्री सेवा वाले 6,000 अश्व शक्ति WAP-7 विद्युत लोको संख्या-37518 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के भिलाई विद्युत लोको शेड को भेजा जा रहा है।

प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' मिशन के तहत इन इंजनों के निर्माण में लगभग 98% स्वदेशी उपकरणों का प्रयोग हुआ है। इससे एमएसएमई और घरेलू विनिर्माण क्षेत्र को बड़े पैमाने पर सहायता मिल रही है।

महाप्रबंधक अंजलि गोयल इस बार नई परम्परा की शुरुआत करते हुए अपने सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों (श्री यू.एस.एच.पी. यादव, एम.सी.एम./कारपेंटर एवं श्री के.डी. उपाध्याय, एम.सी.एम./क्रेन ड्राइवर) द्वारा 200वें विद्युत रेल इंजन 'आशाकिरण' को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया, जिससे बरेका के कर्मचारियों में काफी खुशी एवं उत्साह की लहर दौड़ गई एवं उन्होंने इसका तालियां बजाकर जोरदार स्वागत किया। ■

राजभाषा हिंदी : अनंत संभावनाओं का क्षितिज

श्री विपिन पवार

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा सन् 1917 में भरूच (गुजरात) में सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्रदान की गई। इसके पश्चात् 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने एकमत से हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया। सन् 1950 में संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के द्वारा देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा (महाराष्ट्र) के अनुरोध पर हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए सन् 1953 से प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने और हिंदी को प्रतिष्ठा देने के लिए 'विश्व हिंदी सम्मेलन' जैसे वैश्विक समारोह की शुरुआत की गई। 10 जनवरी, 1975 को नागपुर से शुरू हुआ यह सफर आज भी जारी है। अब इस दिवस को 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

संपूर्ण विश्व में हिंदी का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ है और हिंदी की लोकप्रियता में आशातीत वृद्धि हई है। हिंदी आज भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के एक विशाल क्षेत्र और जनसमूह की भाषा है। सन् 1952 में प्रयोग के दृष्टिकोण से हिंदी विश्व में पांचवें स्थान पर थी। सन् 1980 के आसपास वह मंदारिन एवं अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई। हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इस समय दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से अधिक है। वहीं हिंदी समझ सकने वालों की संख्या 1 अरब से कहीं ज्यादा है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर तथा संस्थाओं में हिंदी के प्रयोग-प्रसार में लगातार वृद्धि हुई है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम जैसे अनुप्रयोगों में तो अब हिंदी का ही बोलबाला है। गूगल, एप्पल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी हिंदी में बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है। आज अपने उत्पाद के प्रचार-प्रसार एवं गुणवत्ता आदि के लिए हिंदी भाषा को अपनाना बहुराष्ट्रीय कंपनियों की विवशता बन चुकी है और यही विवशता आज हिंदी के प्रचार-प्रसार और लोकप्रिय होने की बहुत बड़ी शक्ति है। सन् 1990 में जब भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन हुआ, तो इन कंपनियों की भाषा अंग्रेजी थी। बड़े विदेशी चैनल आए, जो अंग्रेजी में थे, लेकिन आज लाभ कमाने एवं दर्शक बढ़ाने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं चैनलों को हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का सहारा लेना पड़ा है। आज टीवी चैनल एवं मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक मुनाफा दिलाने वाली भाषा है। हर विदेशी उत्पाद का यूजर मैनुअल हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध है।

आज हिंदी की लोकप्रियता इतनी अधिक बढ़ चुकी है कि 40 से अधिक देशों के 600 से अधिक स्कूलों और विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। मॉरिशस में सन् 1950 से ही हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है, फिजी में शिक्षा विभाग द्वारा संचालित सभी बाह्य परीक्षाओं में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। श्रीलंका में भी हिंदी पढ़ाई जाती है, इंग्लैड और अमेरिका में भी हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है। अमेरिका के येन विश्वविद्यालय में सन् 1815 से ही हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है। वेस्टइंडीज यूनिवर्सिटी में हिंदीपीठ स्थापित की गई है। गुयाना के विश्वविद्यालय में बी.ए. स्तर तक हिंदी का पठन-पाठन होता है। फ्रांस, इटली, स्वीडन, आस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी, रोमानिया, बुल्गारिया, नॉर्वे इत्यादि देशों में भी हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था है।

हिंदी हमारे देश की एकमात्र ऐसी भाषा है, जो दिलों को जोड़ने का काम करती है। आप किसी भी राज्य के निवासी हो या आपकी मातृभाषा हिंदी के अलावा कुछ भी हो, हिंदी लोगों को आपस में जोड़ ही देती है। भारतीय रेल का सवारी डिब्बा इसका जीवंत प्रमाण है। हिंदी भाषा को समझना एवं सीखना इतना आसान है कि आप इसको सुनकर ही सीख सकते हैं। हिंदी विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है क्योंकि इसमें जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। हिंदी भाषा की इसी विशेषता के कारण हिंदी न केवल भारत में लोकप्रिय है बल्कि विदेशी विद्वानों और विश्वविद्यालयों को भी अपनी ओर आकर्षित करती है, आज वहां के लोग भी हिंदी सीख या पढ़ रहे हैं।

यह हिंदी की लोकप्रियता और सीखने की सुगमता ही है कि हिंदी अब सात समंदर पार अमेरिका से लेकर यूरोप होते हुए अफ्रीका तक अपनी जड़ें जमा चुकी है। विश्व के बड़े-बड़े और नामी विश्वविद्यालयों में हिंदी को प्राथमिकता से पढ़ाया जाना हमारे देश और हिंदी भाषा के लिए गौरव की बात है। आपको सुनकर हैरानी होगी कि विश्व के नामी विश्वविद्यालयों में से एक कैंब्रिज विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ाई जाती है, जिसके लिए हिंदी साहित्य के इतिहासकार एवं हिंदी व्याकरण के विद्वान रोनाल्ड स्टुअर्ट मैक्ग्रेगॉर ने अहम भूमिका निभाई है। विदेशी होते हुए भी उन्होंने 1956-60 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी की शिक्षा ली, फिर 1964 से 1997 तक वे कैंब्रिज में हिंदी पढ़ाते रहे। पश्चिमी दुनिया में हिंदी की अलख जगाने वाले प्रथम हिंदी विद्वान के रूप में मैक्ग्रेगॉर के हम सदैव ऋणी रहेंगे।

चीन के बड़े विश्वविद्यालयों में से एक पेइचिंग विश्वविद्यालय में छात्रों को हिंदी की शिक्षा कई दशकों से दी जा रही है। चीन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रोफेसर च्यांग चिंगख्वेई ने अहम भूमिका निभाई है। वे लगभग 25 साल से पेइचिंग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से जुड़े हुए हैं और अब वे पेइचिंग विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर इंडिया स्टडीज के अध्यक्ष हैं।

जापान में हिंदी की ज्योति जलाने का श्रेय हिंदी के जापानी शिक्षक अकियो हागा को जाता है। आपको जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि टोक्यो विश्वविद्यालय में सन् 1909 से हिंदी पढ़ाई जा रही है। जापान में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में

अकियो हागा ने अहम भूमिका निभाई है। टोक्यो विश्वविद्यालय से ही हिंदी में एम.ए. करने के बाद उन्होंने हिंदी पढ़ाना शुरू कर दिया। वहां हर साल लगभग 20 जापानी एवं विदेशी छात्र हिंदी विषय में प्रवेश लेते हैं। पिछले दिनों मुंबई में आयोजित एक समारोह में जापानी विद्वान प्रोफेसर तोमियो मिजोकामी से भेंट हुई। हिंदी एवं पंजाबी पर समान अधिकार रखने वाले पद्मश्री डॉ. तोमियो मिजोकामी कांसा (जापान इंडिया कल्चरल सोसायटी) के अध्यक्ष हैं एवं ओसाका यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाते हैं। वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं मुंबई की 'हिंदुस्तानी प्रचार सभा' में भी जापानी छात्रों को हिंदी सीखते देखा जा सकता है।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बारे में कौन नहीं जानता? लेकिन क्या आपको पता है कि वहां भी हिंदी पढ़ाई जाती है? हंगरी में रहने वाले प्रोफेसर इमरै बंधा ऑक्सफोर्ड में छात्रों को हिंदी सिखाते हैं। इमरै बंघा ने शांति निकेतन हिंदी विश्वविद्यालय से हिंदी में पी.एच.डी. की है और वह पिछले कई सालों से ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ा रहे हैं।

पीटर वरान्निकोव के बारे में आप शायद जानते ही होंगे कि वे रूसी थे, लेकिन उन्होंने हिंदी और भारत के लिए जो किया, उसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। वरान्निकोव को गोस्वामी तुलसीदास की अमर रचना महाकाव्य 'श्री रामचरितमानस' इतना पसंद आया कि उन्होंने इसका रूसी अनुवाद तक कर दिया। वरान्निकोव ने रूस में हिंदी का परचम लहराया है।

विदेशों में बसे भारतीय अपने देश की मिट्टी से जुड़े रहने के लिए अपनी भाषा में अपने विचार व्यक्त करते हैं। आज विश्व के अनेक देशों में हिंदी की पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें प्रमुख हैं - भारत दर्शन (न्यूजीलैंड), सरस्वती पत्र (कनाडा), हेल्म 'हिंदी इलेक्ट्रॉनिक लिटरेरी मैगजीन' (यूनाइटेड किंग्डम), अभिव्यक्ति (संयुक्त अरब अमीरात), अनुभूति (संयुक्त अरब अमीरात), अन्यथा (अमेरिका), गर्भनाल (संयुक्त राज्य अमेरिका), कलायन (संयुक्त राज्य अमेरिका), कर्मभूमि (संयुक्त राज्य अमेरिका), प्रवासिनी (ब्रिटेन), सर्वोदय ज्वालामुखी (जापान), यूनेस्को कूरियर (फ्रांस), अमृत सिंधु, धर्मवीर (दक्षिण अफ्रीका), इंदु संचेतन (चीन), किसान (फिजी), जीवन ज्योति (कनाडा)। इसके अलावा, अनेक देश रेडियो एवं दूरदर्शन पर हिंदी के नियमित चैनल एवं कार्यक्रम भी प्रसारित एवं प्रदर्शित करते हैं जैसे कि संयुक्त अरब अमीरात का 'हम', बीबीसी लंदन का 'बीबीसी हिंदी', जर्मनी का 'डायचे वेले', जापान का 'एनएचके वर्ल्ड' और चीन का 'चाइना रेडियो इंटरनेशनल' विशेष लोकप्रिय हैं।

80 के दशक में देश में एक बहुत बड़ी तकनीकी क्रांति हुई, जिसके पश्चात् इंटरनेट सूचनाओं के आदान-प्रदान का सबसे सुलभ साधन बन गया। इसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। आज विश्व के लगभग 140 देशों में इंटरनेट के माध्यम से हिंदी किसी-न-किसी रूप से पहुंच चुकी है। आज हिंदी के माध्यम से संपूर्ण विश्व भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर रहा है।

जब सन् 2000 में हिंदी का पहला वेब पोर्टल अस्तित्व में आया, तभी से इंटरनेट पर हिंदी ने अपनी छाप छोड़नी प्रारंभ कर दी, जो अब काफी रफ्तार पकड़ चुकी है। नई पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी ने भी इसकी उपयोगिता समझ ली है। हिंदी के सशक्त कवि मुक्तिबोध एवं त्रिलोचन उपेक्षित रहे हैं, खासकर हिंदी के प्रकाशकों ने उनकी काफी उपेक्षा की, जिसके कारण वे अधिक लोकप्रिय नहीं हो पाए। मध्य रेल ने 'रेल सुरभि' का अप्रैल-सितंबर, 2017 अंक मुक्तिबोध एवं त्रिलोचन की जन्म शताब्दी पर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया। इंटरनेट पर 'रेल सुरभि' की उपस्थिति एवं लोकप्रियता के चलते युवा पीढ़ी भी मुक्तिबोध एवं त्रिलोचन से रू-ब-रू हो पाई। इंटरनेट ने हिंदी को प्रकाशकों के चंगुल से मुक्त कराने का भी भरसक प्रयास किया है।

इंटरनेट पर हिंदी की यात्रा रोमन लिपि से प्रारंभ हुई, जो सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (सी-डेक, पुणे) द्वारा विकसित जिस्ट कार्ड (ग्राफिक्स एंड इंटेलिजेंस बेस्ड स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी) लीप आफिस, आई-लीप से होते हुए श्रीलिपि एवं अक्षर सॉफ्टवेयर से होकर कृतिदेव फॉण्ट तक पहुंचती है और कंपयूटर में हिंदी में काम करना आसान हो जाता है। आज तो यूनिकोड जैसे यूनिवर्सल फॉण्ट ने देवनागरी लिपि को कंप्यूटर पर नवजीवन प्रदान कर दिया है और अब तो वॉइस टाइपिंग के माध्यम से आपको हाथ से टाइप करने की भी आवश्यकता नहीं है। आप अपने मोबाइल या कंप्यूटर पर सीधे बोल कर टाइप कर सकते हैं।

आज इंटरनेट पर हिंदी साहित्य से संबंधित लगभग सभी पत्रिकाएं देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। आज भारत के सभी प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के ई-संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। हम दुनिया के किसी भी कोने में रहकर क्षेत्रीय अखबारों को पढ़कर अपने क्षेत्र विशेष की जानकारी हिंदी या अपनी मातृभाषा में भी प्राप्त कर सकते हैं। आजकल स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए ब्लॉग एक महत्त्वपूर्ण साधन बन चुका है, जो प्रत्येक समय सुगमता से ब्लॉगर और पाठक, दोनों के लिए उपलब्ध है। श्री आलोक कुमार हिंदी के पहले ब्लॉगर हैं, जिन्होंने ब्लॉगर 'नौ दो ग्यारह' बनाया है। आज हिंदी में ब्लॉगरों की संख्या एक लाख से ऊपर पहुंच चुकी है। इसमें से लगभग 10 हजार अति सक्रिय और 20 हजार सक्रिय की श्रेणी में आते हैं। आलोक कुमार ने ही इंटरनेट पर पहली बार ब्लॉग के लिए चिठ्ठा शब्द का इस्तेमाल किया, जो अब पर्याप्त लोकप्रिय हो चुका है।

इंटरनेट पर हिंदी साहित्यिक सीमा को लांघकर अपना प्रसार कर रही है। आज यह कहानी, नाटक और उपन्यास के क्षेत्र से आगे बढ़कर महापुरुषों की जीवनियों एवं चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है। इसके साथ ही प्रकाशकों ने अपनी-अपनी वेबसाइट्स बना रखी हैं, जिन पर अनेक रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों को घर बैठे मिल जाती हैं। हिंदी पुस्तकों के ई-संस्करण से पाठकों को यह सुविधा उपलब्ध है कि वे अपने काम और रुचि के अनुसार पुस्तकों का चयन कर अपने मोबाइल पर ही पुस्तकें पढ़ सकते हैं। इस संबंध में अब तक का सबसे प्रशंसनीय प्रयास वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने किया है, जिनकी वेबसाइट www.hindisamay.com पर हिंदी के लगभग 1,000 रचनाकारों की रचनाओं का अध्ययन किया जा सकता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्यामसुंदर दास आदि की ग्रंथावलियों के साथ-साथ समकालीन रचनाकारों की रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। इस विश्वविद्यालय में हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों एवं

विद्यार्थियों के लिए पॉकेट लाइब्रेरी (चलता-फिरता पुस्तकालय) की व्यवस्था की गई है, जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। इसके साथ ही भारत में अनेक विश्वविद्यालयों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी हिंदी को सर्वजन सुलभ बनाने के लिए छोटे-मोटे प्रयास किए हैं, जो महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं।

आज हिंदी के 15 से भी अधिक सर्च इंजन हैं, जो किसी भी वेबसाइट का चंद मिनटों में हिंदी अनुवाद करके पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। याहू, गूगल, फेसबुक भी हिंदी में उपलब्ध हैं। अब हिंदी कंप्यूटर से निकलकर मोबाइल में न केवल पहुंच चुकी है बल्कि बड़ी संख्या में लोग इसका उपयोग भी कर रहे हैं। मोबाइल तक हिंदी की पहुंच ने देश में देवनागरी लिपि के समक्ष खड़ी चुनौती को काफी हद तक मिटा दिया है। आज से 15 साल पहले जब हम हिंदी के भविष्य की बात करते थे, तो यह कहा जाता था कि हिंदी का भविष्य तो उज्ज्वल है, लेकिन हमारी देवनागरी लिपि पर संकट के बादल छाए हुए हैं क्योंकि मोबाइल प्रयोक्ता अपने संदेश भेजने के लिए रोमन लिपि पर निर्भर रहते थे। आज यह समस्या हल हो चुकी है। अगर आपके भीतर थोड़ी इच्छाशक्ति है और अपनी राजभाषा के लिए सम्मान है, तो आप अपनी भावनाएं देवनागरी लिपि में हिंदी में अर्थात राजभाषा में व्यक्त कर सकते हैं, चाहे वह कंप्यूटर पर हो या मोबाइल पर।

हिंदी के लिए एक उत्साहजनक प्रवृत्ति यह भी है कि आज इंटरनेट पर ट्विटर की बाढ़-सी आ गई है। फिल्म जगत् की हस्तियों से लेकर सरकारी अधिकारी, राजनेता और आमजन तक ट्विटर पर हिंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं। हाल ही में हिंदी के प्रयोग के दो और नए क्षेत्र देखने को मिले हैं, जिनके बारे में पांच साल पहले सोचा भी नहीं जा सकता था। डीटीएच और क्रिकेट के स्कोर बोर्ड हमारे सामने हिंदी को नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। डीटीएच ने किसी भी चैनल के हिंदी में अनुवाद की सुविधा दे रखी है क्योंकि अब यह सबकी समझ में आ चुका है कि भारत की अधिकतर आबादी हिंदी में ही अपने विचारों का आदान-प्रदान करती है।

हमें भले ही अंग्रेजी आती हो, लेकिन हिंदी या भारतीय भाषाओं को हम जिस सहज भाव से आत्मसात् करते हैं, उस भाव से अंग्रेजी को नहीं, क्योंकि हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएं हमारे अंत:करण में विद्यमान हैं। पहले क्रिकेट मैच में हिंदी की कमेंट्री एक निश्चित समय तक ही होती थी, लेकिन अब पूरे क्रिकेट मैच की कमेंट्री हिंदी में सुनी जा सकती है। इसके साथ ही सर्वाधिक लोकप्रिय विदेशी चैनल भी पूरी तरह से हिंदी एवं अन्य लोकप्रिय भारतीय भाषाओं में भी अपना प्रसारण कर रहे हैं।

हिंदी के क्षेत्र में रोजगार की उन्नत एवं उज्ज्वल संभावनाएं हैं। आज हिंदी पढ़े-लिखे युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर हैं -

अध्यापन : हिंदी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन सबसे पुराने एवं पारंपरिक कैरियर विकल्प के रूप में प्रसिद्ध है। यहां प्राथमिक पाठशाला से लेकर विश्वविद्यालय तक अध्यापन के अवसर योग्यता के अनुसार उपलब्ध रहते हैं और इसे सदाबहार कॅरियर माना जाता है। हिंदी विषय में स्नातकोत्तर करने / पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत समय-समय पर आयोजित होने वाली राज्य पात्रता परीक्षा (सेट), राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) उत्तीर्ण करना आवश्यक है। इसमें अधिकतम अंक प्राप्त करने वालों को जूनियर रिसर्च फैलोशिप (जेआरएफ) प्रदान की जाती है। पीएच.डी. करने वाले छात्रों को प्रतिमाह रु. 30,000 छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है, वहीं परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को महाविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति का अवसर मिलता है।

हिंदी विषय में परास्नातक छात्र केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों और राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में व्याख्याता बन सकते हैं। इसके लिए उन्हें परीक्षा में सफल होना पड़ता है। जिन छात्रों ने स्नातक के साथ बी.एड. किया है, वे प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक के लिए आवेदन कर सकते हैं। स्नातक के बाद बी.एड. करने वाले छात्र प्राथमिक शिक्षा संस्थान में भी अध्यापक बन सकते हैं।

राजभाषा अधिकारी : केंद्रीय सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों, संस्थानों, बैंकों आदि में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है, जो सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए कार्य करते हैं और हिंदी के कामकाज को सुगम बनाते हैं। बैंकों आदि में राजभाषा अधिकारी की सीधी भर्ती होती है, लेकिन अन्य मंत्रालयों एवं कार्यालयों में कनिष्ठ हिंदी अनुवादक/ कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी के रूप में प्रवेश किया जा सकता है, जो पदोन्नति पाते-पाते राजभाषा अधिकारी तक पहुंच जाते हैं। इसके लिए हिंदी या अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर होना एवं स्नातक स्तर पर एक विषय के रूप में अंग्रेजी या हिंदी का अध्ययन करना एवं अनुवाद का डिप्लोमा होना अनिवार्य है। इस क्षेत्र में ऊंचे वेतनमान के साथ ही हिंदी भाषा के क्षेत्र में कार्य करने का अच्छा अवसर मिलता है।

पत्रकारिता : हिंदी का अध्ययन करने वाले युवाओं के बीच पत्रकारिता, रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहां मेहनती और विद्वान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इस समय सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार-पत्रों और सबसे ज्यादा देखे जाने वाले समाचार चैनलों में दो-तिहाई से अधिक हिंदी भाषा के ही हैं। समाचार चैनल और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र-पत्रिकाएं हैं, जिनमें सुयोग्य युवाओं को नौकरी के स्वर्णिम अवसर मिल सकते हैं। इस क्षेत्र में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी भाषा पर आपकी पकड़ बहुत अच्छी हो और आप अपनी बात को हिंदी में सरलता और सहजता से अभिव्यक्त कर सकते हो। इसके लिए हिंदी भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन विशेष लाभप्रद है। पत्रकारिता में के क्षेत्र में प्रवेश करने की इच्छा रखने वाले युवाओं को अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं के प्रति सजग और संवेदनशील होना भी बहुत जरूरी होता है।

अनुवादक : अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत विस्तारित है। दुनिया भर में जैसे-जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे-वैसे अनुवादकों की मांग भी बढ़ती जा रही है। अनेक देशी-विदेशी मीडिया संस्थान, राजनैतिक पार्टियां, पर्यटन से जुड़े संस्थान और बड़े-बड़े होटलों में अनुवादकों की अच्छी खासी मांग है तथा इस क्षेत्र में पारिश्रमिक भी बहुत तगड़ा है। विशेष तौर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां तो एक पृष्ठ के अनुवाद के लिए 250 रुपये तक का भी भुगतान कर देती हैं, लेकिन उसके लिए अनुवाद भी उच्च कोटि का होना चाहिए। युवाओं को चाहिए कि वे अपने अनुरूप अवसरों को तलाश कर इस क्षेत्र में अपना भविष्य

सुरक्षित करें। इसके लिए www.translatorscafe.com वेबसाइट पर पंजीकरण कर टेस्ट दिया जा सकता है। टेस्ट में पास होने पर आपको काम मिलना प्रारंभ हो जाता है।

दुभाषिया (इंटरप्रिंटर) : यह रोजगार का आकर्षक क्षेत्र है, इसके लिए आपको हिंदी एवं अंग्रेजी के साथ-साथ किसी एक विदेशी भाषा पर प्रभुत्व होना आवश्यक है। विदेश मंत्रालय एवं भारतीय संसद द्वारा संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से दुभाषियों की नियुक्ति की जाती है। यह केंद्र सरकार के वरिष्ठ वेतनमान में सीधी भर्ती होती है। अंग्रेजी, हिंदी, मंदारिन, फ्रेंच, जर्मन, जापानी, अरबी, उर्दू, हिब्रू आदि भाषाओं की बहुत मांग होती है। सरकारी क्षेत्रों के अलावा निजी क्षेत्र में भी दुभाषियों की बहुत बड़ी मांग रहती है, जिनका वेतन बहुत आकर्षक होता है।

समाचार वाचक : आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं निजी प्रसार माध्यमों में समाचार वाचक के रूप में रोजगार के अवसर हैं। इस संबंध में भाषा पर अच्छी पकड़ होने के साथ ही समाचार वाचक का प्रोफेशनल कोर्स कर लेने से काम मिलने में आसानी हो जाती है। आकाशवाणी पर तो केवल सधी हुई प्रभावशाली आवाज में ही समाचार पढ़ना होता है, लेकिन दूरदर्शन एवं अन्य चैनलों पर इसके साथ ही आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक एवं मनमोहक होना चाहिए।

रेडियो जॉकी : रेडियो जॉकी ऐसा कॅरियर है, जिसमें आपकी आवाज देश-दुनिया में सुनी जाती है। ऑल इंडिया रेडियो पर प्रसारित अमीन सयानी का वह अंदाज (जी हां! भाईयों और बहनों) एवं तबस्सुम की खनकती आवाज हम आज तक नहीं भूले हैं। आज रेडियो मिर्ची पर आर.जे. नवेद के नाम से बच्चा- बच्चा परिचित है। यह तो मात्र एक उदाहरण है। ऐसी बहुत-सी प्रतिभाएं हैं, जो इस क्षेत्र में नाम और दाम कमा रही हैं। यदि आप भी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं, आपकी आवाज अच्छी एवं सधी हुई है और आप में श्रोताओं का मनोरंजन करने की क्षमता है, तो यह एक बेहतरीन कॅरियर है। अमीन सयानी, तबस्सुम, मनोहर महाजन, जसवंत सिंह आदि इस क्षेत्र की मशहूर हस्तियां रही हैं।

कॉपी राइटर : यह विज्ञापन जगत् की एक आकर्षक नौकरी है। यदि आपकी भाषा पर अच्छी पकड़ है, आप में हिंदी कविता की समझ है, आपके व्यक्तित्व में कवित्व है, आप चीजों को नए ढंग से देखने की दृष्टि रखते हैं तो आप किसी उत्पाद के लिए जिंगल्स एवं स्लोगन लिखकर करोड़ों कमा सकते हैं।

डबिंग : हिंदी फिल्म जगत् में डबिंग आर्टिस्टों की मांग प्रारंभ से ही रही है। अपने संघर्ष के दिनों में अनेक प्रसिद्ध कलाकारों ने डबिंग का कार्य किया है एवं अनेक असफल कलाकार या अब जिनके पास काम नहीं है, वे आज भी डबिंग का कार्य कर काफी अच्छा कमा रहे हैं। इसके लिए आप का उच्चारण सही होने के साथ ही भाषा पर आपकी गहरी पकड़ होनी चाहिए एवं आप में अभिनय क्षमता भी होनी चाहिए। वैसे डबिंग एक बहुत कठिन कार्य है, जिसमें आपको अपनी आवाज के माध्यम से अभिनय करना होता है।

रचनात्मक लेखन : रचनात्मक या क्रिएटिव लेखन के क्षेत्र में जाने वालों के पास दो विकल्प होते हैं-पहला है, स्वतंत्र लेखन या फ्रीलांसिंग और दूसरा फिल्म, टीवी, रेडियो आदि संस्थानों में काम करते हुए लेखन। हांलाकि दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है। दोनों ही रूपों में आप काम एक ही करते हैं, लेकिन कुछ लोग किसी संस्था के नियमों और शर्तों में बंधकर काम करना कम पसंद करते हैं, उनके लिए स्वतंत्र लेखन बेहतरीन विकल्प होता है। आप शुरुआत किसी संस्था से जुड़कर कर सकते हैं और अनुभव हो जाने के बाद नौकरी छोड़कर फ्रीलॉंसिंग कर सकते हैं। इस माध्यम से आप घर बैठे काम करते हुए भी पैसे कमा सकते हैं।

ब्लॉग लेखन : ब्लॉग लेखन भी इन्हीं विकल्पों का एक सुंदर उदाहरण है। इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के साथ कॅरियर का सुनहरा अवसर है। आप अपनी पसंद का कोई एक विषय चुनकर इसकी शुरुआत कर सकते हैं और धैर्य के साथ मेहनत करते हुए और साथियों के परस्पर सहयोग से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। 'अच्छी खबर', 'हैप्पी', 'हिंदी साहित्य शिल्पी' आदि ऐसे ही कुछ ब्लॉग हैं, जिन्होंने हिंदी ब्लॉगिंग को नया आयाम दिया है। कुछ निजी कंपनियां भी कंटेंट राइटिंग के लिए ब्लॉगर्स को रोजगार देती हैं, जिन्हें सालाना पांच लाख रुपये तक पारिश्रमिक दिया जाता है।

हिंदी भाषा, मीडिया तथा पत्रकारिता आदि के प्रमुख शिक्षा संस्थान निम्नानुसार हैं, जहां से आप अपनी पसंद के क्षेत्र में अध्ययन कर हिंदी में रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त कर सकते हैं -

1 महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
2 माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रिकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)
3 अटल बिहारी बाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)
4 नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मॉस कम्युनिकेशन, नई दिल्ली
5 बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस, (उत्तर प्रदेश)
6 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
7 दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, तमिलनाडु
8 आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आंध्रप्रदेश
9 इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली

आज विश्वभर में हिंदी भाषा के लगातार बढ़ते प्रयोग और प्रभाव ने हिदी में रोजगार की संभावनाओं के अनगिनत द्वार खोल दिए हैं और यह भविष्य में और भी अधिक रोजगारपरक होगी, ऐसा निश्चित जान पड़ता है। हिंदी में रोजगार के अवसर भरपूर हैं। अतः आप अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुरूप अपना क्षेत्र चुनकर अपना भविष्य संवार सकते हैं।

आने वाला समय हिंदी का है। बस कुछ दकियानूसी और अदूरदर्शी सोच वाले ही हिंदी के प्रति नकारात्मक भाव व्यक्त कर रहे हैं। आज के समय में न तो हिंदी में सामग्री की कमी है और न ही पाठकों की। हिंदी का एक सशक्त पक्ष यह भी है कि अब यह बाजार की भाषा बन चुकी है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। अब हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए अपने कदम आगे बढ़ा चुकी है। बस, आवश्यकता मजबूत इच्छाशक्ति की है। ■

निदेशक (राजभाषा), रेलवे बोर्ड

मेरी सिक्किम यात्रा

डॉ. मुकुल श्रीवास्तव

(अंतीम भाग)

अब गंगटोक से स्थायी रूप से विदा लेने की बारी थी। सामान समेट कर गाड़ियों में भरा गया। अब अगला ठिकाना पीलिंग था, जहाँ हमें एक रात बितानी थी और पीलिंग घूमते हुए अगली शाम को ग्रेजिंग होते हुए दार्जिलिंग के लिए निकल जाना था। पीलिंग गंगटोक से ज्यादा ऊँचाई पर है। पीलिंग की ऊँचाई 2,150 मीटर है और गंगटोक से लगभग 113 किमी दूर है, जहाँ पहुँचने में लगभग पांच घंटे लगने की उम्मीद थी। पीलिंग अपनी आबोहवा और सुन्दर दृश्यों के लिए मशहूर है। सुबह सात बजे के करीब हमने अपना होटल छोड़ दिया। धीरे-धीरे गंगटोक पीछे छूट गया और अब हम थे और हरे-भरे पहाड़। आधा रास्ता वही था, जिन रास्तों में हम पिछले दो दिनों से आ-जा रहे थे, पर उसके बाद सब कुछ बदल जाने वाला था। रास्ता लम्बा था, इसलिए मेरी नजर पर सड़क पर चल रही गतिविधियों पर थी। हम लगभग जंगल में चल रहे थे, पर बीच-बीच में अपनी एक मोटरसाइकिल के साथ पुलिस कभी-कभार दिख जाती थी। इसमें खास बात यह थी कि इनमें ज्यादातर महिलाएं थीं, जो उस वीराने में बगैर किसी भय के अपनी ड्यूटी बजा रही थीं। न बैठने के लिए कुर्सी, न आस-पास कोई आबादी, पर वो मुस्तैद थीं। मैंने कहीं पढ़ा था हमें वैसी पुलिस मिलती है जैसा हमारा समाज होता है। सच है, सिक्किम का समाज डरा हुआ नहीं था और नियमों को मानने वाला भी। उत्तर भारत में दिन के समय भी कोई जगह लड़कियों के लिए सुरक्षित नहीं है, पर यहाँ कोई समस्या नहीं है। स्कूल जल्दी ही बंद होने वाले थे। यहाँ गर्मियों की छुट्टियाँ बारिश में शुरू होती हैं। इस वक्त परीक्षा का मौसम चल रहा था। रास्ते में दो-तीन के झुण्ड में लड़के-लड़कियां अपने प्रश्नपत्र और क्लिप बोर्ड लिए आते-जाते दिख रहे थे। इस वीराने में जहाँ गाड़ियाँ भी ज्यादा नहीं चल रही थीं, वो आराम से हँसते-खेलते हुए अपनी मंजिल की तरफ बढ़े जा रहे थे। रास्ते में पड़ने वाले गाँवों में आबादी ज्यादा नहीं थी, पर एक चीज जो मुझे बार-बार मोहित कर रही थी, वह थी यहाँ की लड़कियों के चेहरे पर छाई मुस्कान। इतनी अल्हड़ और उन्मुक्त मुस्कान, जिस पर मोहित हुए बगैर नहीं रहा जा सकता। उनके पहनावे से यह अंदाजा लगाया जा सकता था कि यहाँ लड़कियों के पहनावे से उनके चरित्र की पहचान नहीं होती। हम नेशनल हाइ-वे से गुजर रहे थे और रास्ते में पड़ने वाली दुकानों में ज्यादातर लड़कियां ही थीं, जो शॉर्ट्स और टी-शर्ट में बड़े आराम से अपनी दुकान के सामने बैठी थीं या ग्राहकों को सामान बेच रही थीं, बगैर किसी हिचक के पूरे आत्मविश्वास के। यह मामला बता रहा है सिक्किम का समाज लैंगिक समानता के मामले में उत्तर भारत के अन्य राज्यों से कहीं आगे है। हम सिंगतम पार कर रहे थे। यहाँ के पहाड़ी रास्तों की एक खास बात मुझे समझ आई कि क्यों यहाँ छोटी गाड़ियाँ भी बहुतायत से चलती हैं। वो यह था कि आमतौर पर पहाड़ों पर एक तरफ पहाड़ होता है और दूसरी तरफ गहरी खाई, जिसमें दुर्घटना होने पर गाड़ी कई फीट नीचे खाई में गिरती है। अगर गाड़ी छोटी होती है तो जान जाने या चोटिल होने की आशंका रहती है, पर सिक्किम के पहाड़ और यहाँ के रास्ते इस मायने में उत्तर भारत के पहाड़ों से अलग हैं। यहाँ जिस तरफ खाई है उस तरफ भी बहुत पेड़-पौधे हैं, जिससे गाड़ियों के नीचे गिरने का खतरा कम रहता है और अगर गिरीं भी तो वो ज्यादा नीचे नहीं जा पाएंगी क्योंकि पहाड़ पर दूसरी तरफ भी बहुत से पेड़ हैं, जिनमें साल और बांस की बहुतायत है। पहाड़ पूरी तरह से यहाँ संजोये गए हैं और विकास का रोग अभी यहाँ नहीं पहुंचा है। सिक्किम में सीढ़ीदार खेतों में खेती होती है, जिनमें बड़ी इलायची और संतरा प्रमुख हैं। खेतों में यूरिया का इस्तेमाल नहीं होता और सरकार भी ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देती है। इसलिए यहाँ आपको

बुद्ध की एक सौ तीस फीट ऊँची मूर्ति

खाने के लिए जो कुछ मिलेगा, वह शुद्ध ही मिलेगा। प्रदूषण न होने से शुद्धता का स्तर कई गुना बढ़ जाता है। रास्ते में हमारे ड्राइवर ने बताया कि रवानगला कस्बे में एक बुद्ध पार्क पड़ता है। बस, उसको देखने की इच्छा बलवती हो उठी। गाड़ी घुमवाई गई। एक सौ तीस फुट ऊँची बुद्ध की प्रतिमा दूर से ही दिखती है।

बादलों की आवाजाही के बीच जब हम उस पार्क में पहुंचे तो बुद्ध की प्रतिमा बादलों की छाँव में थी और हल्की बूंदाबांदी हो रही थी, पर धीरे-धीरे बादल चले गए और सूरज चमकने लग गया। यह अभी जल्दी बना पार्क है, जिसका उद्घाटन 2013 में बौद्ध गुरु दलाईलामा ने किया। मूर्ति के अन्दर पूजागृह है और इसके अंदर चलते-चलते मूर्ति के सर तक पहुँच सकते हैं, जहाँ महात्मा बुद्ध के जीवन की कहानी को विशाल चित्रों में उकेरा गया है। शान्ति और शानदार मौसम! यहाँ आप तन और मन से उस परालौकिक शक्ति से एकाकार हो सकते हैं। कई लोग वहां ध्यान कर रहे थे, कुछ सो भी रहे थे, शायद वो भी ध्यान ही कर रहे हों। पर हमारे पास इतना समय नहीं था। इसलिए जल्दी ही हमने उस पार्क से विदा ली। दिन के करीब दो बजे हम पीलिंग के अपने होटल में पहुँच गए। पहली नजर में पीलिंग ने मुझे कुछ खास आकर्षित नहीं किया। ये सफर की थकान भी हो सकती थी या कुछ और। उस वक्त धूप भी थी हमने फटाफट अपने कमरे में कब्जा जमाया और चाय पी। यहाँ चाय के पाउच और बिजली की केतली हर होटल के कमरे में मिलेगी। आपको बस पानी गर्म करना है और चाय-कॉफी जो पीना चाहें पीएं। कुछ देर सुस्ताने के बाद मैंने आसपास नजर डालने के लिए कमरे की खिड़की खोली थी तो देशी भाषा में अलबला गए इतने सुंदर दृश्य की कल्पना नहीं की थी।

मेरे पीछे हिमालय और आगे कंचनजंगा की चोटियाँ थीं। मैंने सोचा, जरा नहा कर सफर की थकान उतारी जाए, पर पानी इतना ठंडा था कि हिम्मत जवाब-सी देती दिखी, लेकिन मैंने हथियार नहीं डाले और नहाया। वो बात अलग है कि उस पानी से नहीं नहाया, बल्कि गीजर के गर्म पानी से। अब शाम गहरा रही थी और मैं पीलिंग की सड़कों पर था। मौसम का आलम यह था कि मुझे कोट डालना पड़ा। सड़कें लोगों से भरी थीं। कुछ विदेशी भी थे, पर शोर नाम की कोई चीज नहीं। सब कुछ शांत। मोटे तौर पर अगर लोगों को बदल दिया जाए तो मुझे एकबारगी लगा कि मैं यूरोप की किसी गली में घूम रहा था। एक स्थानीय निवासी से बात करने पर पता चला यहाँ कुछ भी नहीं है। बस, मौसम के कारण सैलानी आते हैं। तो आपको सिर्फ होटल ही मिलेंगे, पर पीलिंग की वो शाम आज भी मेरे जेहन में जीवंत है। पहाड़ जब धीरे-धीरे हरे से काले होते जा रहे थे। सड़कों पर गाड़ियों की हेडलाईटें चमक रही थीं, मैं जून के महीने में कोट डाले हुए देश के एक ऐसे हिस्से में, जहाँ मैं अजनबी था, यूँ ही भटक रहा था। भटक ही तो रहा हूँ और शायद तभी भटकते हुए पीलिंग आ पहुंचा। मैं सड़क की रोशनी से दूर जाकर उन काले पहाड़ों को देख रहा था, जो न जाने क्या-क्या अपने अंदर समेटे हुए हैं। उस रात मैंने आईपॉड को स्पीकर मोड में डाला और अपने कान के पास रखकर सोया। शायद सत्तर के दशक के उन मधुर गानों की स्वर लहरी में हिमालय और कंचनजंघा के वो पहाड़ भी सोये होंगे, जो सदियों से जग रहे हैं।

पीलिंग की अगली सुबह कंचनजंघा पर्वतमाला में सूर्योदय के साथ शुरू हुई। सिर्फ चिड़ियों की चहचहाट और कोई

रिम्बी जलप्रपपात

मशीनी शोर नहीं। ऐसी सुबह का आनन्द दशकों बाद उठाया था। गर्म पानी से नहाने के बाद एक बार फिर स्थानीय पर्यटन शुरू जो होना था। गाड़ी में कुछ दूर चलते ही सड़क पर जाम मिला। पीछे गाड़ियों का काफिला बढ़ता ही गया। पता चला आगे सड़क बनाने का काम चल रहा है। पर मजाल है किसी गाड़ी से हॉर्न की आवाज सुनाई पड़ी हो। लगभग आधे घंटे के बाद सड़क थोड़ी देर के लिए खोली गई और हमारी गाड़ी उस जाम में से निकल गई। अगला पड़ाव था रिम्बी फाल या रिम्बी जलप्रपात। वैसे सच बताऊँ तो सिक्किम झरनों का प्रदेश है। आप सड़क से कहीं की भी थोड़ी दूरी की यात्रा कीजिए आपको किसी न किसी पहाड़ से कोई झरना गिरता जरूर दिखेगा। हाँ ये जरूर हो सकता है कि आकार में जो झरने के मानक हैं वो उस पर खरा न उतरे, पर पानी पहाड़ों से गिरता आपको यत्र-तत्र दिख ही जाएगा। तो रिम्बी झरना बस आकार में थोड़ा बड़ा है, इसलिए वह एक पर्यटक स्थल बन गया है। पर यहाँ के पर्यटक स्थल पर आपको स्थानीय लोग नहीं दिखेंगे और न ही भीड़-भाड़ रहती है। गंदगी का नामो निशां नहीं है। जो गंदगी दिखेगी वो बाहर से आये पर्यटकों का छोड़ा हुआ सामान होगा। मतलब, आम सिक्किम का निवासी पर्यवरण के प्रति खासा जागरूक है। रिम्बी फॉल्स में ऐसा कुछ नहीं था जो अनोखा हो। एक झरना, जो काफी उंचाई से गिर रहा था, पूरा का पूरा वातावरण प्राकृतिक था और कोई भी मानवीय ढाँचे का निर्माण वहां नहीं किया गया था। यहीं रास्ते में दरप गाँव पड़ता है, जहाँ बड़ी इलायची की खेती होती है और कई सारे होम स्टे हैं, जहाँ आप घर के वातावरण में रहकर पीलिंग की खूबसूरती का आनंद ले सकते हैं। ये होटल के मुकाबले सस्ते पड़ते हैं, पर होटल की लग्जरी आपको नहीं मिलेगी। जो कुछ मिलेगा वो सब प्राकृतिक होगा।

अब बारी थी सिक्किम का एक बाग देखने की। यूँ तो बाग में देखने को कुछ होता नहीं, पर यह सिक्किम का एक संतरे का बाग था। घुमावदार सीढ़ियों में तरह-तरह के पेड़-पौधे और उनके पीछे एक पहाड़ी नदी कल-कल बह रही थी। संतरे

चाय बागान

का मौसम न होने के कारण हमें संतरे के छोटे-छोटे कच्चे फलों को देखकर दिल को खुश करना पड़ा। जो भी हो, पार्क था बहुत लुभावना।

इसके और आगे एक प्रमुख झील का भी दर्शन करने थे जो पहाड़ों की तलहटी में स्थित है, जिसका नाम खेतोपलारी झील था। इस झील के पहुँचने का रास्ता बहुत संकरा और वीरान है। अगर गाड़ियों की आवाजाही न हो तो यह कह पाना बहुत मुश्किल है कि यहाँ बौद्ध धर्म से संबंधित इतना महत्त्वपूर्ण केंद्र होगा, जो हिन्दुओं द्वारा भी पूजनीय है ऐसा माना जाता है कि यहाँ लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह झील करीब पैंतीस सौ साल पुरानी है। यहाँ कुछ बौद्ध मठ हैं, जहाँ पूजा हो रही थी।

प्राकृतिक तौर पर यह इलाका पर्याप्त जैव विविधता लिए हुए था। रास्तों और पहाड़ों पर जमी हुई काई बता रही थी कि यहाँ बारिश का पानी सूखने नहीं पाता। कारण, चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पेड़ों का होना, जो सूर्य की किरणों को धरती पर आने से रोक लेते हैं। इसीलिए झील से मुख्य मार्ग का रास्ता जो करीब एक किमी का था ठंडा और फिसलन भरा था जबकि बाहर सूर्य अपनी प्रचंडता के साथ विराजमान था। दोपहर के बारह चुके थे। अब हमें पीलिंग वापस लौटना था और वहां से दार्जिलिंग के लिए प्रस्थान करना था।

करीब एक घंटे के बाद हम दार्जिलिंग के रास्ते में थे। पीलिंग से दार्जिलिंग तक की दूरी करीब चार घंटे में पूरी होनी थी। वैसे एक बात बताऊँ। जब से मैंने होश सम्हाला, अगर कहीं जाने का मन होता था तो वह दार्जिलिंग ही था। शायद इसके लिए वे हिन्दी फिल्में जिम्मेदार थीं, जो उन दिनों दूरदर्शन पर दिखाई जाती थीं। तो, मन बल्लियों उछल रहा था कि आखिरकार मेरे जीवन की यह अधूरी इच्छा भी पूरी होने वाली है। दार्जिलिंग पश्चिम बंगाल द्वारा प्रशासित स्वायत्तशासी क्षेत्र है, जो सिक्किम से एकदम सटा हुआ है और इस क्षेत्र के अधिकतर निवासी नेपाली मूल के हैं, जो अपने लिए अलग राज्य गोरखालैंड की मांग लम्बे समय से कर रहे हैं। हमारी गाड़ी पहाड़ी पर चढ़ने लगी। आस-पास के चाय बागान बता रहे थे हम दार्जिलिंग आ चुके थे, पर शहर अभी थोड़ी दूरी पर था।

शाम हो चुकी थी इसलिए अब आराम का वक्त था। वैसे भी सुबह साढ़े तीन बजे उठकर टाइगर हिल पर सूर्योदय देखने जाने का कार्यक्रम था। हालांकि मेरी इसमें कोई रुचि नहीं थी, पर एक बार फिर जनमत के फैसले के आगे झुकना पड़ा।

सुबह साढ़े तीन बजे दार्जिलिंग में ठीक-ठाक ठण्ड थी। हम टाइगर हिल जाने के लिए निकल पड़े। गाड़ियों और लोगों का हुजूम धीरे-धीरे बढ़ता गया उस जगह, जहाँ से सूर्योदय का नजारा किया जाना था। सुबह के चार बजे एक छोटा-मोटा बाजार लगा था, जहाँ ऊनी कपड़े बिक रहे थे और हैरत की बात थी लोग खरीद भी रहे थे। कुछ युवतियां थर्मस में कॉफी बेच रही थीं। मैंने एक कोट डाल रखा था, पर ठण्ड से बचने के लिए कॉफी एक अच्छा विकल्प था। बीस रुपये में एक छोटे से कागज के कप में कॉफी मिली, जो मीठी ज्यादा थी। आसमान का माहौल देखकर मैंने अंदाजा लगा लिया कि आज सूरज नहीं दिखेगा। क्योंकि आसमान में बादल थे तो कंचनजंघा की चोटियों में से आज सूरज के दर्शन न हो पाएंगे। इसलिए मैं वहां से पहले ही खिसक लिया और मेरा यह निर्णय सही साबित हुआ क्योंकि उस दिन सूरज नहीं निकला और हम सूर्योदय के बाद गाड़ियों की होने वाली भागमभाग और जाम से बचकर

पहले निकल गए। लौटते वक्त बतासिया लूप मेमोरियल पार्क का भ्रमण किया गया।

बतासिया लूप दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे का एक स्टेशन है, जहाँ एक वार मेमोरियल भी बनाया गया है। यहाँ गोरखा रेजीमेंट के उन सारे जवानों के नाम अंकित हैं, जो 1987 के बाद वीरगति को प्राप्त हुए। बतासिया लूप एक ऐसा स्टेशन है, जहाँ रेलवे की पटरियां अंगरेजी का आठ अंक बनाती हैं। अब कुछ बातें दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे के बारे में। दार्जिलिंग को विकसित करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। यहाँ 1881 से नेरो गेज की ट्रेन अभी भी चलती है, जिसे यूनेस्को की तरफ से वर्ल्ड हेरीटेज का दर्जा मिला है। यह दो तरह के रास्ते पर चलती है पहला दार्जिलिंग से घूम स्टेशन, जिसका आनंद जयादातर पर्यटक उठाते हैं। इसे 'टॉय ट्रेन' के नाम से जाना जाता है, पर इसका किराया बहुत मंहगा है और दूसरा दार्जिलिंग से सिलीगुड़ी, जिसमें यह ट्रेन सत्तर किमी का रास्ता करीब आठ घंटे में पूरा करती है। सड़क से सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग का रास्ता बहुत अच्छा होने के कारण यह दूरी अब तीन घंटे में सिमट गई है। इसलिए लोग अब ट्रेन को प्राथमिकता नहीं देते। ऐसे पर्यटक जिनके पास समय है और प्रकृति से प्यार, वही अब इस ट्रेन से दार्जिलिंग तक का सफर तय करते हैं। वैसे लम्बे समय तक यह टॉय ट्रेन मुम्बइया फिल्मों का हिस्सा रही है। 'आराधना' का वह मशहूर गाना 'मेरे सपनों की रानी कब आयेगी तू' कौन भूल सकता है, जो इसी ट्रेन पर शूट हुआ है। ट्रेन के मुख्य ट्रैक पर यहाँ मेक शिफ्ट अरेंजमेंट वाली कई दुकानें भी हैं, जो ट्रेन के आने पर बंद हो जाती हैं और जाने के बाद फिर खुल जाती हैं। बतासिया लूप पर सस्ते ऊनी कपड़े आप खरीद सकते हैं।

होटल लौट कर थोड़ा सुस्ताने के बाद हम जापान सरकार द्वारा निर्मित पीस पैगोडा देखने गए। तब तक बादल पूरे दार्जिलिंग को अपने जद में ले चुके थे और ऐसे मौसम में किसी पैगोडा को देखना उसकी सार्थकता सिद्ध कर रहा था, शान्ति, निस्तब्धता और प्रकृति का साथ। हम उसकी खूबसूरती में खोये ही थे तभी मेरी तन्द्रा को एक बुरी खबर ने तोड़ा। शहर में हड़ताल हो गई थी। हम लोगों को तुरंत होटल लौटना होगा। हम जल्दी से होटल पहुंचे। हमने बाकी का कार्यक्रम अगली बार के लिए स्थगित किया और वापस निकल पड़े किसी नए पड़ाव के इन्तजार में। ■

डिपार्टमेंट ऑफ जर्नलिज़्म एंड मास कम्यूनिकेशन
लखनऊ विश्वविद्यालय

टॉय ट्रेन

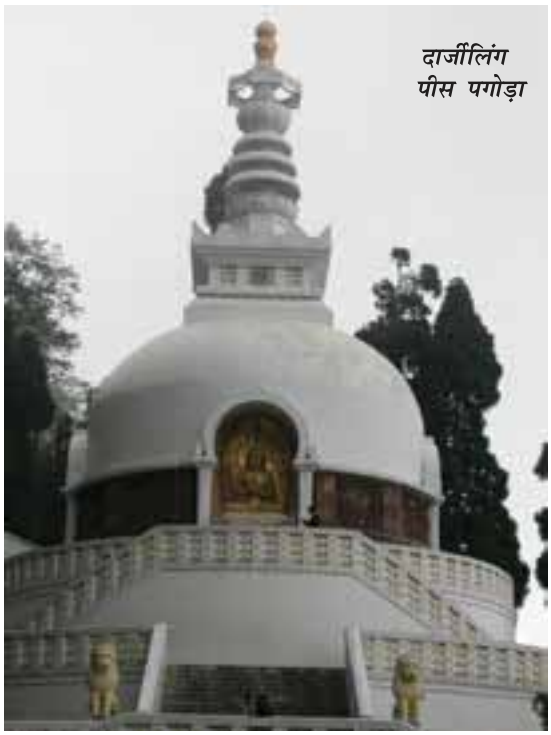

दार्जीलिंग
पीस पगोड़ा

साहिर के जादू से चमत्कृत है हिन्दी सिनेमा

श्री अविनाश त्रिपाठी

चंद कलियां निशात की चुनकर
मुद्दतों महवे-यास रहता हूँ
तेरा मिलना खुशी की बात सही
तुझ से मिलकर उदास रहता हूँ।

साहिर की लिखी ये चंद पंक्तियां उनके अहसास शख़्सियत का सबसे सच्ची और तल्ख़ खुदज़बानी है। इंसान के जिस्म की बनावट और दिल की बुनावट, दोनों में ही उसके माँ-बाप और माहौल का असर पड़ता है। फागुन के गुलाल से मौसम में 8 मार्च को अब्दुल हई ने इस फानी दुनिया में कदम रखा। उनकी पैदाइश की बुनियाद में इन्तेहाई मोहब्बत जैसी बात न होकर, जिस्मानी कुरबत का ज़्यादा हिस्सा शामिल था। बाप ख़ासा सख़्त और कुछ हद तक बदमिज़ाज था। माँ-बाप के रिश्ते दरक रहे थे। इन टूटते रिश्तों की दरार में दुबका अब्दुल धीरे-धीरे तनहा और तल्ख़ मिज़ाज होता जा रहा था। बाप को देखकर मर्दों के रवैये पर अफसोस और माँ से सहानुभूति और मोहब्बत का अहसास हर रोज कुछ और गाढ़ा हो रहा था। अब्दुल हई ने अब कॉलेज का रुख किया और यहीं से उनकी जिन्दगी ने सीने के बायीं ओर हरकत करना शुरू कर दिया। अब अब्दुल शायरी करते थे और जमाने को अपनी जादुई अशआर से मोहित कर रहे थे। ऐसे शख्स का नाम अब्दुल नहीं, साहिर (जादू) ही होना चाहिए था। शायरी के परचम को अपने अलग लहजो-मिजाज से साहिर सुर्खरु कर रहे थे। 'तल्खियाँ' लिख साहिर बेहद कम समय में बहुत मशहूर हो गए थे, लेकिन उन्हें भी अंदाजा नहीं था कि 'तल्खियाँ' उनके जीवन में मोहब्बत की बारिश ले के आएगी। मुशायरे में पहली बार साहिर को गजल पढ़ते देख अमृता ने हर आती हुई साँस पर साहिर का नाम लिख दिया। मुशायरे के दौरान साहिर की उड़ती नजर ने अमृता को देखा भर होगा कि अमृता ने उनकी नजर का सदका उतार उसे अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। मोहब्बतें जब हद से गुजरती हैं तो पागलपन, जुनून या शायद इबादत में तब्दील हो जाती हैं। अमृता ने भी कुछ ऐसा ही किया। साहिर से हर मुलाकात के कुछ हिस्से को जिंदा कर अपने साथ रखने लगीं, यहां तक साहिर की पी हुई सिगरेट को अपनी उंगलियों में वैसे ही फँसाकर पीतीं जैसे साहिर की उंगलियों में अपना हाथ दे दिया हो। जहाँ- जहाँ तुम्हारी उंगलियों में दरारें हैं, उस हर जगह के लिए सिर्फ मेरी उंगलियाँ ठीक उसी नाप की बनी हैं।

साहिर मोहब्बत में एक हद तक सर्द और बेपरवाह रहे। साहिर के सर्द और कुछ हद तक उपेक्षा का कारण उनकी बीती हुई जिन्दगी थी। बचपन में जागीरदार पिता की कई पत्नियों में से एक साहिर की माँ भी थी। साहिर की माँ पर पिता जुल्म करते, जिसके साहिर गवाह रहे। बचपन से ही उनके मन में माँ की लिए बेहद प्यार और सहानुभूति और पिता के लिए एक हद तक नफरत भरती चली गई। साहिर जब सिर्फ 8 साल के थे

तो माँ-बाप का अलगाव हो गया। मामला कोर्ट तक पहुंचा और पिता साहिर को वारिस के रूप में अपने पास रखना चाहते थे। यहाँ यह बताना भी गौरतलब होगा की साहिर की कई सौतेली बहनें थीं। लेकिन लड़के के रूप में वो खानदान के अकेले वारिस थे। यही वजह रही साहिर के पिता ने बहुत कोशिश की कि कोर्ट साहिर को उनकी कस्टडी में दे दे। आखिर कोर्ट ने साहिर से उनकी रजामंदी पूछी और साहिर ने बाप की दौलत, ऐशोआराम को अपने कमजोर पैरों की ठोकर पर रखते हुए माँ की ठोढ़ी चूम ली। माँ के साथ मुफलिसी में पलते और पढ़ते साहिर लुधियाना से लाहौर पहुंचे और वहीं पढ़ाई करने लगे। वहीं पर सरकार के खिलाफ लिखने और कम्युनिस्ट विचारधारा से लगाव के कारण उनको लाहौर छोड़ना पड़ा और वो दिल्ली आ गए। दिल्ली में किताब लिखते, मुशायरा करते उनकी मुलाकात अमृता से हुई और बहुत सी औरतों की तरह वो अमृता के भी करीब हुए। लेकिन जल्दी ही ये रिश्ता, और रिश्तों से गाढ़ा होने लगा।

अब साहिर की शाम अक्सर अमृता के इर्द-गिर्द बीतने लगी। साहिर की मोहब्बत में टिक पाना बेहद मुश्किल था। हर खातून में वो अपनी माँ खोजने लगते। एक हद तक वो हर लड़की, औरत के करीब जाते, फिर उस लड़की के दिल की बुनावट और फंदे का आकार माँ जैसा न पाकर, फिर उससे दूर जाने लगते। दिल्ली से भी साहिर का मन भरने लगा। लाहौर से दिल्ली की गलियों में घूमते-घूमते जल्दी ही उन्होंने अपनी मंजिल मुंबई बना ली। साहिर अब अपने कलम का परचम फिल्मों के गीत के जरिये फहराना चाहते थे। यहीं उनकी मुलाकात गुरुदत्त और एस.डी. बर्मन से हुई। गुरुदत्त की 'बाजी'

ने साहिर के हिस्से की भी बाजी जीत ली। '*तदबीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले*' गाना घरों में बजने लगा और साहिर एक पहचाना नाम होने लगे। साहिर, एस.डी. बर्मन, गुरुदत्त को अब एक कमाल करना था, जो तीनों को तारीख में सुनहरे रंगो से सजा दे। 'प्यासा' के एक-एक गीत साहिर के सिनेमाई जादू का जयघोष थे।

'*ये दुनिया अगर मिल भी जाए*' में समाज से छला हुआ शायर के दिल के छालों का हिसाब होता है। साहिर ने इस गाने में दिल निकाल कर रख दिया। '*हम आपकी आँखों में*' मोहब्बत का पहला गीला-गीला सा अहसास था। '*जाने वो कैसे लोग थे जिनके प्यार को प्यार मिला*' एक बार फिर प्यार में हार की बेबसी का अंतर्नाद था। इस फिल्म ने साहिर के कद को इंडस्ट्री में बेहद बड़ा कर दिया। कई फिल्मों की कामयाबी से गुजरते हुए साहिर 'हम दोनों' तक पहुंचते हैं और देव आनंद की तिरछी मुस्कराहट और बेफिक्र अंदाज को अपने लफ्जों से सजाते साहिर इस फिल्म में लफ्जों से भावनाएं रोशन कर देते हैं। '*अभी न जाओ छोड़कर कि दिल अभी भरा नहीं*' में देव साब साधना से कातर पुकार करते दिखते हैं कि थोड़ी देर और पास ठहर जाओ। गाने में साहिर ने दोनों प्रेमियों के घंटों बात करने के बाद भी कुछ बचा रह जाता है, इस भावना को जिंदा कर दिया। इसी फिल्म में '*अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम*' में कौमी एकता और मोहब्बत का ऐसा तराना लिख दिया जो कितनों स्कूलों की प्रार्थना बन गया। '*उड़ें जब-जब जुल्फें तेरी*' मोहब्बत का मीठा तराना बन गया जब दिलीप साब ने वैजयंतिमाला के लिए 'नया दौर' में अपना दिल भिगो कर पेश कर दिया। देवानंद के बेफिक्र लहजे को जब सलाहियत भरा अंदाज देना था तो साहिर ने '*मैं जिन्दगी का साथ निभाता चला गया, हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया*' लिखकर देवानंद के लिए ऐसा एंथम लिख दिया जिसने देव साब की शख्सियत को बिना कहे हमेशा बयान किया।

अपने प्रगतिशील विचार और कौमी एकता का मुजाहरा करते हुए फिल्म 'धूल का फूल' में साहिर ने एक और गीत लिखा जिसने इंसानियत को थोड़ा और गाढ़ा रंग दे दिया। '*तू हिन्दू बनेगा, न मुसलमान बनेगा इंसान की औलाद है, इंसान बनेगा।*' साहिर ने 'नया दौर' में ऐसा गाना लिख दिया, जिसमें पंजाब की मिट्टी की महक और खुशियों की धमक थी। '*ये देश है वीर जवानों का*' आज भी विवाह का एंथम बना हुआ है। अपनी जाती जिन्दगी, अमृता प्रीतम और सुधा मल्होत्रा के दरमियान बंटे साहिर आखिर उस गीत तक पहुंचते हैं जो उनके वकार को और बुलंद कर देता है। '*मैं पल दो पल का शायर हूँ*' लिखकर साहिर ने अपने फानी जिन्दगी का इशारा कर दिया।

25 अक्टूबर, 1980 को लफ्जों में रौशनी भरने वाला ये पल दो पल का शायर, खुद को ताजिन्दगी अमर कर गया। ■

फिल्म निर्माता, समीक्षक, टीवी पत्रकार,
अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में ज्यूरी एवं सदस्य

रेल पर्यटन व साहित्य को साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 60 सालों से भी
अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

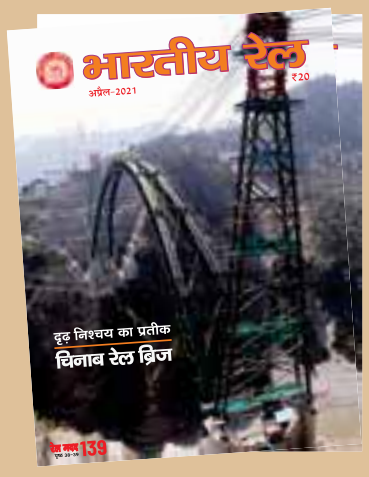

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

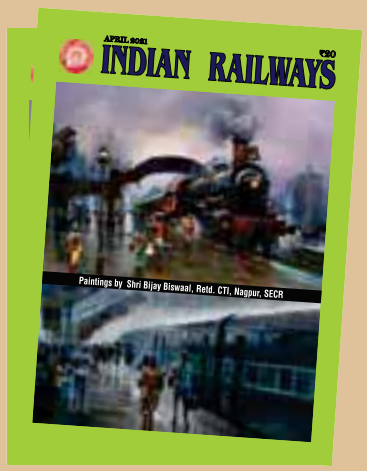

भारतीय रेल
(हिन्दी)

विज़िट करें

Indian Railways
(English)

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home

शर्तें एवं दरें लागू

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

'भारतीय रेल विशेषांक-2021'

विज्ञापन हेतु अनुरोध

No. 2021/PR/14/9

नमस्कार,

जैसा कि आप को ज्ञात है कि भारतीय रेल की प्रथम ट्रेन 16 अप्रैल, 1853 को बंबई (अब मुंबई) के बोरी बंदर से थाने (अब ठाणे) तक चली थी। इस अवसर पर हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी रेल मंत्रालय द्वारा 'भारतीय रेल विशेषांक-2021' का प्रकाशन जून माह में किया जा रहा है।

इस विशेषांक में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी समेत अन्य सदस्य एवं क्षेत्रीय रेलों, उत्पादन इकाईयों एवं रेलवे से जुड़े महत्त्वपूर्ण संस्थानों के प्रमुख अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। इस प्रकार यह विशेषांक भारतीय रेल के वर्तमान और भविष्य पर एक अधिकारिक दस्तावेज सिद्ध होगा। इस विशेषांक में अन्य विचारोत्तेजक सामग्री भी रहेगी जिससे यह विशेषांक बहुत पठनीय होगा। 'भारतीय रेल' पत्रिका हजारों स्थायी ग्राहकों के अतिरिक्त रेल मंत्रालय के नियामक, अधिकारीगण, चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स, केन्द्रीय राज्य सरकारों और अनेक बड़े-बड़े उद्योगों के अधिकारियों द्वारा पढ़ी जाती है।

भारतीय रेल देश का सबसे बड़ा औद्योगिक प्रतिष्ठान है और प्रतिमाह हजारों करोड़ों रुपए का भंडार खरीदता है। 'भारतीय रेल' पत्रिका में विज्ञापन देकर आपकी सामग्री-सेवा निश्चय ही रेल भंडार क्रय प्रबंधन अधिकारियों, बड़े ओद्यौगिक घरानों और राज्य सरकारों के प्रबंधकों की दृष्टि में आएंगी और निश्चित रूप से आपको लाभान्वित करेंगी।

हमें आपके विज्ञापन आदेश की प्रतीक्षा रहेगी। विज्ञापन आदेश के साथ सीडी/ईमेल एवं ड्राफ्ट/चेक/कैश/एनईएफटी/आरटीजीएस अग्रिम में 10 मई, 2021 तक व्यापार प्रबंधक, 'भारतीय रेल' (Business Manager, Bhartiya Rail) (दिल्ली में देय) के नाम पर भिजवाने की व्यवस्था करें।

यहां पर उल्लेखनीय है कि, 'भारतीय रेल' पत्रिका रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का प्रकाशन 15 अप्रैल, 1960 से नियमित रूप से किया जा रहा है।

भवदीय

प्रशान्त कुमार पट्टनायक

व्यापार प्रबंधक, 'भारतीय रेल'

रूम नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001

011-23382531, 47845378, M - 9717647367

email : bmpr310rb@gmail.com

editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन दरें

विवरण	विशेषांक दरें
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	8550
पूरा पृष्ठ	9500
आधा पृष्ठ	6650
द्वितीय आवरण	12,350
तृतीय आवरण	11,400
सेंटर स्प्रेड	17,000
सेंटर स्प्रेड (विशेष)	18,5000
बैक कवर	13,300

पत्रिका का आकार
28 सेमी X 20.5 सेमी

छपाई का आकार
23 सेमी X 16.5 सेमी

विज्ञापन सामग्री
CD/Email

अदायगी : व्यापार प्रबंधक, 'भारतीय रेल' के नाम (दिल्ली में) ड्राफ्ट/चेक/कैश/ एनईएफटी/आरटीजीएस द्वारा

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विजिट करें : www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क. (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	–
एक प्रति (विशेषांक)		70	–
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन सदस्य www.irctctourism.com/IRBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद **देय** – 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला.....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी : हाँ / नहीं वर्तमान सदस्यता (हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001,
टेलीफोन: 011-47845378, 23382531, 45380 (रेलवे) **bmpr310rb@gmail.com**

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

Electric Locomotives

Traction Motors
Traction Transformers
Pantographs
Harmonic Filters
Driver Cab Air Conditioners

Diesel Locomotives

Traction Alternators
Traction Motors
Radiator Cooling Fans
Dynamic Brake Grids
Dynamic Brake Blower Motors
Auxiliary Generators
Dustbin Blower & Motor
Driver Cab Air Conditioners

Coaches & Trainsets

Air Conditioners with Micro-processors
Bio Vacuum Toilet Systems
FRP Toilet Cubical
Side Panels and Roof Panels for Coach Interiors
Seats and other Accessories for Coach Interiors

Daulat Ram ENGINEERING

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Dist. Raisen, Near Bhopal 464 993 INDIA
Tel.: +91 7480 231400 / 252 / 253, 8889000732 / 34 / 35 / 36. Fax: +91 7480 231250
e-mail: info@daulatram.org • web: daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**